

तमसो मा ज्योतिर्गमय

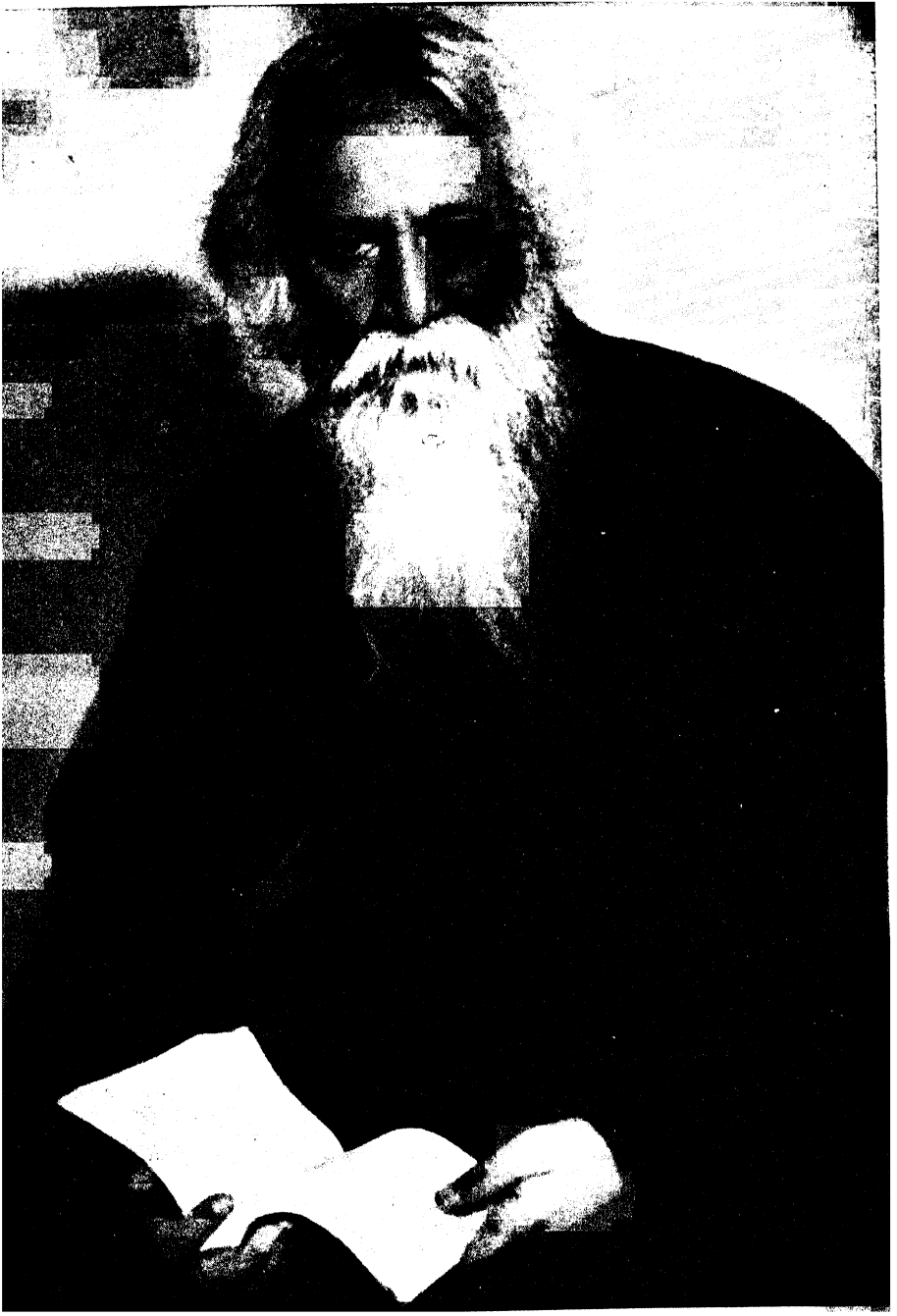
VISVA BHARATI
LIBRARY
SANTINIKETAN

T(4153)7

J 21672

386399

रवीन्द्र गीत एवं स्वरविज्ञान
(सुनिर्वाचित गीत)



रवीन्द्रनाथ
१९३०

रवीणु ० गीतु एवु र-वरलवेतलु
(सुनलरवलरुतु गीतु)

ऑलऑ डुलडुडी
अनुवलडु तथल संकलन



वलशुवलडुलरती डुरंथनवलडुगल
कुलकलतल

नवीन संवर्धित संस्करण : २००३

अनुवादिका : जलज भादुडी

© विश्वभारती, २००३

मूल्य : १५० रुपये

ISBN-81-7522-343-X

प्रकाशक प्रोफेसर सुधेन्दु मंडल
विश्वभारती। ६ आचार्य जगदीशचंद्र बोस रोड। कोलकाता १७
टाइप सेटिंग श्री धनंजय चौबे। २० मैंगो लेन। कोलकाता १
मुद्रक मैसकट प्रेस। २४६ए/बि मानिकतल्ला मेन रोड। कोलकाता ६

'Rabindrageet evam Swarabitan (Sunirwachit geet)' by Jalaj Bhaduri.
Without the permission of © holder any Translated Song, Notation or any change of
word etc. is prohibited and illegal.

Price Rs. 150

\$10

उत्सर्ग
शांतिनिकेतन ब्रम्हचर्याश्रम
गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित
(बंगाब्द १३०८)



कविगुरु के साथ अवनीन्द्रनाथ

प्रस्तावना

रवीन्द्र साहित्य, संगीत एव चित्रकला इत्यादि के, सरस्ता और निर्भूल प्रकाशहित प्रकाशक के रूप में, विश्वभारती ग्रंथन विभाग विश्वविख्यात है। निःसंदेह इस प्रकाशन की प्रतिष्ठा ही रवीन्द्र भक्तों की मांग पूरी करने के लिये हुई थी। रवीन्द्र के अनुवाद साहित्य में, उनका संगीत पक्ष आज भी उपेक्षित है। जबकि संगीत कविगुरु का सबसे प्रिय विषय रहा है। 'प्राण' उनकी प्रसिद्ध कविता है जहाँ कवि अंतिम चार पंक्तियों में कहते हैं :-

'तोमरा तुलिबे बले सकाल विकाल
नव-नव संगीतेर कुसुम फुटाइ।
हासि मुखे नियो तुले तार परे हाय
फेले दियो फूल यदि से शुकाय ॥'

कविगुरु के संगीत में विश्वमोहिनी शक्ति है। उनके गीत की शक्ति तलवार से बढ़कर है। तलवार केवल शत्रु को हनन कर सकता है, उनके गीत में शत्रु के हनन किये बिना, शत्रुता को निर्मूल करने वाली महाशक्ति है। अपने गीत को कवि कभी "अर्धनारीश्वर" कहते हैं; कभी "जल में हाइड्रोजन और ऑक्सिजन" और कभी उसे एक "आदर्श दंपति" जैसा कहते हैं। कवि के गीतों की वाणी और स्वरों की मधुरतम गठबंधन को अनुवाद में, मूल के समकक्ष, प्रकट करना अत्यधिक कठिन काम है। तथापि, भारत की अनेक भाषाओं तथा अंग्रेजी, चीनी, जापानी एवं रशियन जैसी विदेशी भाषाओं में भी, छुटपुट गीतों के अनुवाद हुये, जिन्हें ग्रंथाकार-स्वरलिपि-सहित, सुरक्षित कहीं भी रखा नहीं गया है।

कविगुरु को हिन्दी भाषा से विशेष लगाव था। उत्तर भारत के शास्त्रीय संगीत और उसके स्वरलिपिकार विष्णुनारायण भातखंडे के प्रति वे बेहद श्रद्धावान थे। अतः कवि के संगीत प्रेम, हिन्दी के राष्ट्रभाषा बनने की योद्धाता पर उनका विश्वास तथा उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत के स्वरलिपिकार पर श्रद्धा, इन तीनों बातों को ध्यान में रखते हुये विश्वभारती विश्वविद्यालय प्रथम बार अपने ग्रंथन विभाग से भातखंडे स्वरलिपि में आबद्ध रवीन्द्र गीतों के हिन्दी अनुवाद का संकलन प्रकाशित कर रही है। अपने ढंग का यह अनुवाद विश्व में प्रथम बार भारत की राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रकाशित हो रहा है। आशा है हिन्दी अनुवाद में रवीन्द्र संगीत

की यह त्रिमुखी साहित्य कीर्ति, बांग्ला भाषा को विश्व के प्रमुख भाषाओं के निकट लायेगी। इस प्रकार कवि के द्वारा स्थापित आश्रम, विश्वभारती का यह एक महति अभिधेय सफल होगा।

इस असाध्य कार्य को देवी भारती की आशीर्वाद से अनुवादिका डॉ(श्रीमती) जलज भादुड़ी ने, दीर्घ पच्चीस वर्षों से, एक यज्ञ जैसे निष्ठा और लगन के साथ, साधा है। जन्म सूत्र से श्रीमती जलज भादुड़ी साहित्य संगीत में रचे-बसे एक सुसंस्कृत प्रवासी बांग्ला परिवार की सदस्या रही हैं। आपने अपना जन्म हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ नगरी इलाहाबाद में होने का और क्षेत्रफल के हिसाब से उत्तर प्रदेश हिन्दीभाषी सर्वप्रधान राज्य होने की सुविधा का, पूर्णरूपेण सदुपयोग किया है। विवाह उपरांत आप मातृभाषा के समृद्ध नगरी कोलकाता में आ बसीं और क्रमशः अनुवाद के द्वारा भाषाई सेतुबंधन की दिशा में आपने अपनी कलम मजबूत की। हमारे ग्रंथन विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर सुधेन्दु मंडल जी ने पूरी निष्ठा के साथ इस ग्रंथ को द्वितीय बार परिमार्जित, परिशोधित और परिवर्धित संस्करण के रूप में प्रकाशित करने का बीड़ा उठाया है। कविगुरु के संगीत का यह नवीन शिलापट्ट, विश्वभारती ग्रंथन विभाग के सहित अनुवादिका एवं प्रोफेसर मंडल की आंतरिक सहभागिता से ही स्थापित हो रहा है।

शांतिनिकेतन
९ श्रावण, १४१० (बंगाब्द)

सुजित कुमार बसु
उपाचार्य
विश्वभारती

नवीन संरंकरण के लिये मेरा निवेदन

लघु संगीत या आधुनिक संगीत के क्षेत्र में नए युग का श्रीगणेश करने में महासंगीतज्ञ कविगुरु रवीन्द्रनाथ का नाम सर्वोपरी है। केवल बंगाल ही नहीं, सारे भारत में उनकी शैली ने लघु संगीत के रूपमें पहल किया और उनकी मृत्यु के बासठ वर्ष बाद भी वह अलंघ्य बना हुआ है। उनकी इस रचना-विधा में कौन-सी ऐसी अमोघ शक्ति रही होगी जिसके बलबूते पर उन्होंने ऐसा संगीत रचा! आज भी देशकाल, जाति या स्थान-काल निर्विशेष के लिए उनका यह संगीत समान रूप से प्रयोगधर्मिता की रक्षा करता आ रहा है। अपने सुर और शब्दों में सामंजस्य रखते हुए उनके संगीत की सर्वभूमि संवेदनाजन्य अभिव्यक्ति के कारण ही यह प्रतिष्ठा है।

हिन्दुस्तानी संगीत की सार्वभौमिकता को कविगुरु रवीन्द्रनाथ ने जड़ से पकड़ा था। रवीन्द्र संगीत की नयी धारा का जन्म देने से पहले मूल तत्वों को समझने के लिए उन्होंने हिन्दुस्तानी संगीत को ही नींव बनाया। मध्ययुगीन भक्ति काव्य, अष्टछाप कवियों के अष्टप्रहर का रागाश्रित हिन्दी भजन और कीर्तन को भलीभांति हृदयंगम किया। इस विषय में उन्होंने कहा, 'मैंने तो अपने संगीत में एक दशमांश हिन्दुस्तानी संगीत से उधार लिया है।' उन्होंने २१५ से ऊपर ऐसे संगीत की रचना की जो कहीं-कहीं प्रयोजन के अनुसार भाषांतर है, अन्यथा कुछ गीतों के शब्द-सुर दोनों में एक से ही रखे गये हैं।

कविगुरु की एक अप्रकाशित नोटबुक मिली थी। जिसे उन्होंने खैरोर खाता (यानी खैराती खाता) नाम दिया था। यह समीरचंद्र मजूमदार के पास मिली। समीरचंद्र के पिता श्रीशचंद्र कविगुरु के मित्र थे। खाते पर १८८९ की तारीख पड़ी है। कभी बंगाब्द १२९२ में कविगुरु ने एक सौ दस पद भक्तियुगीन वैष्णव कवियों की पदावली के अनुकरण पर रचना की थी। उसे पद 'रत्नावली' नाम दिया था। इस नोटबुक की सबसे बड़ी विशेषता है कि कवि ने स्वयं इन गीतों के बारे में उस खाते में उल्लेख किया है।

काठियावाड़ के कांग्रेस अधिवेशन में कविगुरु ने हिन्दी में भाषण दिया। साबरमती के आश्रम में हिन्दी भजन गाए। रात वहीं गांधी जी के साथ बिताया। हिन्दी भाषा को सम्मान देते हुए उन्होंने अपनी सम्मति जताई- 'कभी न कभी देश को स्वराज मिलने के पश्चात हिन्दी ही हमारी राष्ट्रभाषा होगी। कारण यही सर्वाधिक

लोगों की बोली जानेवाली भाषा है। 'एक स्थान पर कहा' मैंने स्वयं हिन्दुस्तानी गीतों को तोड़कर अपने संगीत में ढाला है। तब भला दोनों भाषाओं में 'कोहड़े और कटारी संपर्क यह कैसे मान लूं।'

कविगुरु ने यह भलीभांति परख लिया था कि हिन्दुस्तानी संगीत और कर्नाटक संगीत के मूल तत्व व प्रयोजन एक ही हैं। उसी प्रकार सिखों के भजन के राग-ताल भी पृथक नहीं है। साथ ही निर्गुण और सगुण भक्त कवियों के भजन का प्रभाव भी कविगुरु पर पड़ा।

पंजाब के टप्पा ने या राजस्थान की लावणी ने तो कभी उत्तर प्रदेश की कजरी ने कवि पर प्रभाव डाला था। कवि जो कुछ सुनते थे उसे पूरी तरह मन में बसा लेते थे, उन्होंने स्वयं लिखा है 'मेरे दो हजार गीतों में से करीब २१५ गीत मैंने हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के आधार पर ही रचे हैं।' उन्होंने राग संगीत की बंदिशें जदु भट्ट और राधिका प्रसाद गोस्वामी जी से ग्रहण किया था। इसी तरह (बंगाल १३०३-१३०४) हिन्दी के ध्रुपद धमार और टप्पा के आधार पर बहुत सारा रवीन्द्र संगीत बना। मूल संगीत का पहले कविगुरु चयन कर लेते थे। उसे नोटबुक में लिख लेने के बाद उसी पर अपनी गीत रचना करते थे, जो कभी-कभी मूल गीत से मिलता-जुलता या कभी उसकी छाया होती थी। यह हिन्दुस्तानी वाणी का प्रभाव था। राग-रागिनियों का प्रभाव रवीन्द्र संगीत पर और अधिक पड़ा। नब्बे से अधिक संख्या में मौलिक राग-रागिनियां और मिश्र राग रवीन्द्र संगीत में आए हैं। उन्होंने भारतीय संगीत की रागमयता (मेलोडी) और पाश्चात्य के स्वर संवाद (हारमोनी) के विषय में भी कई जानकारियाँ हासिल की थी।

भारतीय संगीत के प्रमुख आधार उनके ताल होते हैं। दक्षिण में जिसे 'जाति' और उत्तर में 'लय' कहा जाता है। इस जाति या लय को लेकर भी कविगुरु ने नए ढंग से विचार किया। उन्होंने पांच, आठ, नौ, ग्यारह, पंद्रह और अठारह मात्राओं के ताल रचे और उन पर अपने गीतों को संवारा। रवीन्द्रनाथ की गीतों को किसी जाति वर्ग या क्षेत्र के घेरे में बांधा नहीं जा सकता, न ही इसमें कोई सांस्कृतिक अलगाव की भावना है बल्कि सांस्कृतिक समन्वय व एकता को ही उन्होंने अपने गीतों में संवारा है। रवीन्द्र संगीत अनुवाद की दिशा में नहीं के बराबर काम होना, इसके पीछे कारण निसंदेह काफी महत्वपूर्ण हैं। पृथक भाषा के ढांचे वर्तनी व्याकरण, उच्चारण तथा स्वरलिपि के गणित को तोड़ना मरोडना एक भाषा के तुलादंड में तौल कर दोनों में तादात्म्य काफ़ी टेढ़ी खीर वाली बात है। अतः रवीन्द्र संगीत को

अर्थात् गीतवितान में संकलित गीतों तथा स्वरवितान में संकलित स्वरलिपि को आज तक अनुवाद में अनदेखा या उपेक्षित रखा गया पर ऐसा रखना भारत की (एकता, आदर्श, मर्यादा) नैतिक धार्मिक तथा उसके असली रूप को बिगाड़ कर दिखाने में ही सहयोग दे रहा है।

अतः मैंने देश और भारतीयता के वास्तव के पहचान दिलाने के क्षेत्र में कड़ी मेहनत से यह पहल करना चाहा और किया। जिसको हमारे नये प्रजन्म आगे बढ़ायेंगे यही मेरी पूरी आशा है।

ऐसे दुरुह कार्य को साधने में भूल-त्रुटि का होना कोई अनहोनी नहीं है। आचार्य हमारे बांग्ला और हिन्दीप्रेमी प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी तथा उपाचार्य सुजित बसु महोदय के आशिर्वाद ने हमें धन्य बनाया। इसे सफल और अधिक से अधिक रुचिसंपन्न, आकर्षक तथा उपयोगी बनाने में जितनी सहायता हमारे तीनों दिवंगत गुरुवों ने की है, उतनी ही मेहनत ग्रंथन विभाग के अध्यक्ष महोदय प्रो. सुधेन्दु मंडल जी ने की है। पद तथा स्वरों के मुद्रण प्रमाद के शोधन में अकथ परिश्रम श्री अशोक भट्टाचार्य तथा देवाशीष राय ने की है। मैं विशेष आभारी हूँ।

डीटीपी के सम्पूर्ण सहयोग तथा स्वरलिपि टाइप के कठिन कार्य को सम्हालने का कठिन कर्तव्य साधने के लिये हम धनंजय चौबे के विशेष आभारी हैं। मैं उन सभी बम्बई एवं कोलकाता के बड़े और मध्यम कलाकारों के आभारी हूँ जिन्होंने इन अनुवाद गीतों को सन् १९८५ से लेकर अब तक गाये और गाते जा रहे हैं।

संगीत प्रेमी सभी गुणी संगीतज्ञ तथा पाठकों के रनेहधन्य अनुवादिका-

कोलकाता

जलज भादुड़ी

१० श्रावण १४१० (बंगाब्द)

कविगुरु रवीन्द्रनाथ के 'खेरोर खाता' के कुछ गीत

हिन्दी गीतों पर रचे बांग्ला रवीन्द्र संगीत

1. शीतल तब पढ छाया
2. निशिदिन जागिया आछ नाथ हे
3. आज हृदि आसने तोमारे
4. तुमि बिना काटे जीवन हे प्रभु
5. हृदय आवरण खुले दाओ
6. मधुर रूपे विराजो हे
7. आजि मम मन चाहे
8. हरषे जागो आजि जागो रे
9. शांति करो बरिषन
10. सुंदर बहे आनंद
11. मधुर रूपे विराजो हे
12. गगनेर थाले रवि चंद्र दीपक
13. बडो आशा करे एसेछी गो
14. आजि शुभ दिने
15. नमो नमो भारती
16. जीओ अंतरधामे
17. ए कि अधिकार ए भारत भूमि
18. मम चिते निति नृत्ये
19. ए कि लावण्ये पूर्ण प्राण
20. यदि तोर डाक सुने केउ ना आसे
21. आमार सोनार बांग्ला
22. एबार तोर मरा गांने
23. आनन्दलोके मंगलालोके
24. ए की ए सुंदर शोभा
25. प्रथम आदि तब शक्ति
26. बिपुल तरंग रे
27. बहे निरंतर अनंत आनंदधारा
28. तब प्रेमसुधा रसे
29. आनन्दधारा बहिछे भुवने
30. शुभ आसने विराजो
31. आनंद तुमि स्वामी मंगल तुमि
32. पांथ एखनो केनो अलसित अंग
33. नित्य सत्य चितन करो रे
34. के बसिले हृदय आसने
35. उठि चलो सुदिन आइलो
36. आनंद सुगंध उच्छसिलो
37. लहो लहो तुमि लहो हे
38. सुधा सागर तीरे हे
39. स्वपन यदि भांगिलो
40. दुख राते हे
41. मंदिरे मम के
42. मम प्राण काडिया लहो
43. बाजे करण सुरे
44. रचने की इच्छा, पर बांग्ला गीत लिखा नहीं
45. रचना नहीं है
46. रचना नहीं है

हिन्दी गीतों की बंदिशें जिन पर बांग्ला गीत रचे गए थे

1. बांगुडी मेरी मूर गई जिन छुओ
2. ठकुरिया आंचड मोरी छांडि दे
3. प्यारी तोरे पावना पकडो सब मिलि
4. तुम बिनु कैसे रहंगी ते पियु
5. नसिरे मां वरण कोयलिया
6. फूलि वन घन मोर आयो बसंत री
7. फूलि वन घन मोर आयो बसंत री
8. हरख जागो लाल, लय कनारा
9. शंभू हरपड युग ध्यान बखानी नाथ रंग
10. शंकर शिव पिनाक गंगाधर
11. कौन रूप बने हो राजाधिराज
12. सिखों के भजन सुन कर रचना
13. कन्नड गीत से ली हुई रचना
14. कन्नड गीत से ली हुई रचना
15. मूल गीत लिखा हुआ नहीं है
16. मूल गीत लिखा हुआ नहीं है
17. गुजराती भजन से
18. कश्मीरी गीत से
19. मैसूरी भजन से
20. बांग्ला बाऊल हरिनाम दिये जगत माताल
21. बाऊल गीत-कोथाय पाबो तारे आमि
22. बाऊल गीत-मन माझी संभाल संभाल
23. महीसुरी भजन से
24. तमिल गीत से
25. प्रथम आदि शिव शक्ति
26. नाचत त्रिभंग ये
27. दुसह दोष दुख दलनी
28. कारी कारी कमरिया
29. लागी मोरी तुमका
30. रुद्र देव नमन
31. ओंकार महादेव शंकर तुम
32. सकल कला पूरन करात आस रंगे युगत
33. काली नाम चितन करो रे मेरे मन
34. पंजाबी टप्पा, पारीजां तांडे-तांडे
35. उठि चल सुदिन नाचत रे आली
36. हूं आयी तोह लेने
37. हिन्दी गीत लिखा नहीं है
38. आयो फागुन बढयो मान नंद को छैला
39. आरा मोरी बांगुडी भरन के गई छीट लंगडवा
40. रंग रातमात आए पिया
41. सुन्दर लागे हे पिया चपल चखन
42. हसी हंसी गरबा लगायो कन्हैया मोको
43. मद्रासी तमिल गीत से, नितु चरण मूले
44. कंगनवा मोरी ला दे री
45. राजदुलारे का बनरा आईल
46. सुंदर बुरै आयो री सो मुरा मुरा

रवीन्द्र संगीत की नवीन संयोजक स्वरलिपि

रवीन्द्रनाथ द्वारा निर्मित आकारमात्रिक स्वरलिपि को हिन्दुरतानी उत्तरभारतीय भातखण्डे स्वरलिपि में रूपांतरित करते समय आकारमात्रिक स्वरलिपि के कुछ एक चिन्हों का संयोजन किया गया है। इससे रवीन्द्रीय गायन पद्धति तथा मूल गीत-स्वर-ताल, हिन्दी भाषा-भाषियों के लिए अधिकाधिक बोधगम्य हो जाएंगे।

आकारमात्रिक बांग्ला स्वरलिपि के संयोजन से बने, सामान्य परिवर्तित भातखण्डे स्वरलिपि को मैंने संयोजक स्वरलिपि नाम दिया है। इसे समझने के लिए दिए गए निम्नलिखित 'बयान' को आधार मानकर चलें। इस स्वरलिपि के अनुकरण से, स्वर को लिखने की आदत बना ली जाए तो केवल रवीन्द्र संगीत ही नहीं, गीत, गजल और भजनों के सूक्ष्म सुरांतरों को दोहराने वाली पंक्तियों को, आसानी से याद रखा जा सकता है। अतः इस स्वरलिपि से उत्तर तथा दक्षिण भारत के स्वरलिपि लेखन पद्धति में सुधार और अधिक शुद्धता लाई जा सकती है।

रवीन्द्र संगीत के होनहार गायक विशिष्ट रवीन्द्र संगीतविद, श्री सुविनय राय कहते हैं, हमारे देश के किसी भी दूसरे संगीत की तुलना में रवीन्द्र संगीत की स्वरलिपि का हूबहू प्रयोग, उच्चारण प्रकृति, मात्रा विभाजन, गीतलय निर्वाचन और अलंकरणहीन मार्जित गायन प्रणाली में बन्धे नियमों का अधिकाधिक पालन होते देखा जाता है। रवीन्द्र संगीत शिक्षा पाने और सिखाने में प्रयोग के लिए, स्वरवितान की दी गई स्वरलिपि ही भविष्य में इस संगीत के प्रचार में पथ प्रदर्शक का काम करेगी।

स्वरलिपि के विषय में रवीन्द्रनाथ भी बड़े चिन्तित हुआ करते थे कारण उन्हें स्वयं स्वरलिपि निर्माण की जानकारी नहीं थी। इसके लिए ने श्री अनादि कुमार दोस्तिदार, दिनेन्द्रनाथ ठाकुर, इन्दिरादेवी प्रभृति व्यक्तियों से, खासकर अनादि कुमार और दिनेन्द्रनाथ से ही सहायता लिया करते थे।

रवीन्द्रनाथ को विष्णु नारायण भातखण्डे के स्वरलिपि पद्धति पर पूरी आस्था तथा श्रद्धा थी। श्री भातखण्डे ने अंग्रेजी युग के विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी। उन्हें स्टाफ नोटेशन का पूरा ज्ञान था और उनकी मिश्रण प्रणाली की भी जानकारी थी। उनके द्वारा बने स्वरलिपि पर गुरुदेव का भी पूरा विश्वास था, जो पाश्चात्य स्टाफ नोटेशन के सहयोग से बनाई गई स्वरलिपि थी।

हिन्दुस्तानी राग संगीत में स्वरलिपि को हूबहू मानकर चलने के लिए कोई बंधे नियम नहीं होते। कारण वहाँ खबरों के विस्तार और अलंकरणों की ही अधिक मर्यादा होती है परन्तु रवीन्द्र संगीत, चूंकि शब्द और सुर प्रधान है, जहाँ काव्य रस की अक्षुण्णता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी कारण स्वरलिपि से बाहर सुर-विहार की कोई गुंजाइश इस संगीत में नहीं है। भातखण्डे स्वरलिपि में इतने सूक्ष्म चिन्ह नहीं है, जिससे रवीन्द्र संगीत के सारे नियमों की रक्षा हो सके। यही कारण है कि 'आकारमात्रिक स्वरलिपि' जो उन दिनों बंगाल में प्रचलित थी, उसे ही कवि ने रवीन्द्र संगीत के लिए पूर्णरूपेण उपयुक्त माना था। रवीन्द्रनाथ की गीत-चर्चा द्वारा इस स्वरलिपि को बंगाल में, बहुत प्रचार और प्रसार मिला। जिस प्रकार बंगाल में प्रचलित है आकारमात्रिक स्वरलिपि, उसी प्रकार पूरे भारत में भातखण्डे स्वरलिपि अधिक व्यवहृत है। अतः ये स्वाभाविक है कि हिन्दी अनुवाद द्वारा रवीन्द्र गीतों की चर्चा करने वाले भातखण्डे स्वरलिपि को सहज ही समझ लेंगे। रवीन्द्र संगीत के नियम और बंधनों को मानकर चलने के लिए, भातखण्डे स्वरलिपि के चिन्ह पर्याप्त नहीं है। **रवीन्द्र संगीत के आकारमात्रिक स्वरलिपि के साथ, भातखण्डे स्वरलिपि के मिश्रण के द्वारा, रवीन्द्र संगीत को हूबहू मूल सा बनाये रखने के प्रयास पर यहां बल दिया गया है। इस स्वरलिपि का नामकरण यदि 'रवीन्द्र-भातखण्डे संयोजक स्वरलिपि' या 'संयोजक स्वरलिपि' रखा जाए, शायद अनुपयुक्त न होगा।** भविष्य में यह 'संयोजक स्वरलिपि' उत्तर भारत के गीत-गजलों के लिए भी फलदायिनी हो सकती है। सांस्कृतिक एकता के बंधन भी इससे मजबूत होंगे। पाश्चात्य संगीतज्ञ इसे 'इन्टीग्रेटेड नोटेशन' के नाम से जान सकेंगे।

रवीन्द्रनाथ स्वयं अपने समय में भातखण्डे जी को 'एक अनन्य संगीत शिक्षक मानते थे "विश्वविद्यालय में संगीत शिक्षा विभाग' के प्रवर्तक होने की योग्यता, एकमात्र भातखण्डे में ही है और मुझे यह स्वीकार करने में संदेह नहीं है। संगीत शिक्षा प्रणाली में उनका नैपुण्य (मास्टरी) सर्वमान्य है। वे केवल गायक ही नहीं, संगीत शास्त्र के महामहोपाध्याय है। सारे भारत की तरह बंगाल में भी, यदि उन्हें ही संगीत शिक्षा के बुनियादी संस्थापक की जिम्मेदारी सौंप दी जाती तो इसका फल अवश्य बंगाल के लिए लाभदायक होता।" (संगीत चिंता - रवीन्द्रनाथ ठाकुर) यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि रवीन्द्र गायन सीखना आकारमात्रिक लिपि को समझे बिना मुश्किल है। इसी कारण हम पहले पाठकों को आकारमात्रिक स्वरलिपि का परिचय कराना चाहेंगे।

आकारमात्रिक स्वरलिपि : आकारमात्रिक का अर्थ क्या है ? इन चिन्हों को देखें - १११११

इस स्वरलिपि में 'प्रति मात्रा' को दर्शाने के लिए जिस चिन्ह का व्यवहार होता है, वह बांग्ला स्वरवर्ण के आकार के स्वरूप के होते हैं। इसी कारण 'आकार द्वारा मात्रा बने स्वरलिपि का नाम, 'आकार मात्रिक स्वर लिपि है।' यहाँ मंद्र-मध्य-तार को निम्न प्रकार में लिखा जाता है:-

स् र ग् म् प् ध् नि / स र ग म प ध नि / स र ग म प ध नि

उद्वारा मुद्वारा तारा
(मंद्र) (मध्य) (तार)

विकृत स्वर या कोमल स्वर = रे (ऋ), ग ञ (ञ) ध (ढ) नि (णी)

अनुकोमल स्वर - जो स्वर सा से कोमल, रे के बीच का है उसे कहते। लिखने की विधि है- ऋ, ञ, ढ, ण।

अति कोमल स्वर - जो स्वर कोमल रे, से शुद्ध रे, के बीच का हो, उसे कहते हैं लिखने की विधि है : ऋ३ ञ३ ढ३ ण३। यह नियम भातखंडे में नहीं है।

मात्रा सा रे। गा। पूर्ण मात्रा १११ सा रे गा इत्यादि।

आधी मात्रा जैसे सः रः ग्रः मः इत्यादि।

एक मात्रा में दो स्वर गमा, पधा

एक मात्रा में तीन स्वर गमपा, पधनी

एक मात्रा में चार स्वर गमपधा, पधनिसां

यह भातखंडे के जैसे ही लिखे जाते हैं।

विभाजन चिह्न - । म प ध । प ध नि सा । इत्यादि यह भी भातखंडे जैसा है।

सम से सम तक का एक आवर्तन - । स रे ग । म प ध । नि स रे । ग म प ।

1 2 3

ताल - विभाग : ये सभी भातखंडे जैसे हैं - स रे ग । म प ध । प ध न

पदों के विभाजन : अर्थात् स्थायी, अन्तर, संचारी और आभोग। ऐसे हर शुरुआत में ये चिह्न - II तथा हर समाप्ति में ही चिह्न - II ऐसा ही होगा।

इसे भातखंडे में मैंने शामिल किया है।

गीत में कोई मुखड़ा या टुकड़ा, जो बार-बार घूम घूम कर प्रयोग में आता है। जैसे

"न स" "तु म" - म प
"ओ हो"

स्वर से दूसरे स्वर में जाने के बीच, विराम या स्वर को खींचना - ग॥ प॥॥ ध॥
इसे हम दिखाते हैं इस प्रकार - स - - रे - ग
(स्वर से दूसरे स्वर तक जब, स्वर खींच कर लेना हो)
= रे - - प । म - - प । इत्यादि भातखंडे में ।

कोई विशेष स्थानों पर से रथाई अंतरे की उठान = ग म प ऐसा चिह्न होता है ।
स्पर्श स्वर - ग^म म^प प^ध ये हमारे भातखंडे स्वरलिपि जैसे ही होते हैं ।
रवीन्द्र संगीत में तीन ब्रैकेटों का महत्वपूर्ण चिन्ह मैंने अपने स्वरलिपि में इस्तेमाल
किया है । () पहला, { } दूसरा [] तीसरा ब्राकेट का प्रयोग आगे देखें ।

मीड - स्वर के नीचे चन्द्रमा जैसी वक्र रेखा होगी - प स
भातखंडे में यह ऊपर होता है प स प ध - - स

दोहराने के चिह्न { } ये कहां से कहां तक दोहराई जाए उसके लिए यह बंधनी या
सेकेंड ब्रैकेट का प्रयोग जानना आवश्यक है ।

छूटते हुए स्वर और वाणी = दोहराते समय बहुधा कुछ एक वाणी या स्वर छोड़ कर
भी दोहराते हैं, उन्हें ऐसे चिन्ह () द्वारा दर्शाते हैं (स रे -) ग म प । ध नि सा ।
पहला जैसा चिन्ह इसे जनना भी जरूरी है ।

जब स्वरों में परिवर्तन तो हो पर वाणियों में नहीं जब दोहराते समय पहले का
स्वर, दूसरी बार बदल जाता है और कहां से कहां तक बदलता है, उसका निशान -
देखिए [] उदाहरण जैसे [म नी प सां]

उदाहरण - स ग प ध । नि ध प ध । सां नि रें सां ।

स्वर खींचना : स - - प । ध - - नी - - ।

वाणी खींचना - तु ० ० म । कौ ० ० न

देखें यही चिह्न भातखंडे में - तु S S S म । कौ S S न । ऐसा होता है ।

युक्ताक्षरों का खण्डन - युक्ताक्षरों को स्वर के नीचे तोड़ कर लिखते हैं ।

ग प म ग प

यथा- उ ल् ला - स= उल्लास। यह भातखंडे में भी कभी कभी आते हैं।

इस प्रकार चिह्नों की अधिकता के कारण भातखंडे की अपेक्षा, आकारमात्रिक स्वरलिपि अधिक पेंचीदा या जटिल प्रतीत होता है। रवीन्द्र संगीत में स्वरों और शब्दों को इच्छानुसार तोड़ने मोड़ने की छूट नहीं है। तभी उस स्वरलिपि में चिह्नों और बंधनों की अधिकता है। यह बात सीखने में बाधा सृष्टि न करे मैंने इस ओर ध्यान दे कर दोनों पद्धतियों को जोड़ा है, कुछ छोड़ा भी है।

रवीन्द्र संगीत के सभी गीतों को गाने के लिए एक निर्धारित लय बना लिया जाता है। भाव गम्भीर या ध्रुपद जैसे गानों को, मध्य या विलम्बित लय में, तो, चपल और कभी-कभी अधिक छन्दमय गीतों को, द्रुतलय में, गाने का रिवाज है। रवीन्द्रनाथ ने इसको, कहीं भी किसी प्रकार चिह्नों से नहीं समझाया। गायक अपनी समझ के अनुसार इसे द्रुत-मध्य या विलम्बित गाते हैं। भावानुसार लय स्वयं बाँध लेते हैं। यहाँ पूरे आकारमात्रिक स्वरलिपि का परिचय पाठक से कराया गया है परन्तु पूरी स्वरलिपि के, कुछ विशेष चिह्नों को ही गीत के अनुवादों में सुविधा अनुसार, भातखंडे स्वरलिपि के साथ, जोड़ा या संयोजन किया गया है।

अतः इस स्वरलिपि को 'संयोजक स्वरलिपि' कह कर, नवीन नामकरण करना अनुचित न होगा। बांग्ला के आकारमात्रिक स्वरलिपि से जिन चिह्नों को ग्रहण किया गया है, वह निम्न प्रकार के हैं:-

आवर्तन -II तथा गीत का उठान- प ध नी

स्थाई अंतरा आदि का विभाजन = II II, II II

पहला दूसरा तीसरा ब्रैकेट का नियम- () { } []

दी गई स्वरलिपियों को, गीत अभ्यास करते समय, क्रियात्मक रूप से अमल करते रहने से, गीतों का गायन सरल से सरलतम हो जाएगा। इसे भजन, गजल के लिये भी व्यवहारिक बनाने की पूरी छूट है।

स्वरलिपि के द्वारा, स्वर और शब्दों के सम्बन्ध का साधारण ज्ञान तो हो जाता है पर इसके बाद प्रयास तो इस बात का हो, कि उस गीत पर फनकारी या मास्टरी लाने के लिए हम और क्या-क्या करें? इसके लिए बांग्ला में उसी मूल गीत को,

रेकार्ड या दूरदर्शन अथवा रेडियो पर बजते हुए गौर से सुनें। उस पर अमल करने के लिए, उन्हें कैसेटों में उतार लें। अब हिन्दी अनुवाद गीत को उसी बंगला के स्वरों के साथ-साथ गाते जाएं। जैसा कि नोटेशन में लिखा है। उसे समझ कर गाएँ।

इस प्रकार रवीन्द्रनाथ के सुर और वाणी को, मूल जैसा छन्द, भाव, रस और स्वरों में रख कर, बिना विकृत किए हुए, मौलिक गीतों जैसा ही गाया जा सकता है। जो कुछ भी हो रवीन्द्र संगीत गवैयों को स्वरलिपि को (आदर्श मानकर) अनुसरण करने से रवीन्द्र संगीत के हिन्दी रूपान्तर के गायन में सफलता अवश्य मिलेगी।

हार्दिक आभार :

बांग्ला ग्रंथ	लेखक	प्रकाशक
रवीन्द्र रचनावली	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	विश्वभारती
संगीत चिंता	रवीन्द्रनाथ ठाकुर	विश्वभारती
रवीन्द्र जीवन कथा	प्रभातकुमार मुखर्जी	आनन्द प्रकाशन
रवीन्द्र संगीत विचित्रा	शांतिदेव घोष	आनन्द पब्लिसर्स

: स्वरलिपिकार :

रवीन्द्रनाथ ठाकुर, दिनेन्द्रनाथ ठाकुर, शैलजारंजन मजुमदार, अनादिकुमार दोस्तिदार, इन्दिरादेवी चौधुरानी, प्रतिभादेवी, कांगालीचरण सेन, सुरेन्द्रनाथ बन्दोपाध्याय, प्रफुल्लकुमार दास आदि।

अनुक्रमणिका

स्वरवितान सं

पृष्ठ सं.

पूजा तथा प्रेम गीत

1. विपदे मोरे रक्षा करो	25	25
2. बहे निरन्तर अनन्त आनंदधारा	22	28
3. प्रथम आदि तव शक्ति	36	30
4. की गाब आमि की शुनाब	04	33
5. हे सखा, मम हृदये रहो	04	35
6. आछे दुःख आछे मृत्यु	02	37
7. हे निखिलभारधारण	36	39
8. आजि यत तारा तब आकाशे	22	40
9. ए मणिहार आमाय	41	42
10. ढांडिये आछ तुमि आमार गानेर ओपारे	40	45
11. तुमि केमन करे गान करो	38	47
12. आमार बेला ये याय	33	51
13. आरो आरो प्रभु	09	55
14. एकि लावण्ये पूर्ण प्राण, प्राणेश हे	45	58
15. बिपुल तरंग रे	25	60
16. ये राते मोर दुयारगुलि	39	61
17. एइ करेछ भालो नितुर	38	64
18. आगुनेर परशमणि	43	67
19. एकि ए सुन्दर शोभा	32	69
20. केन चौखेर जले	41	71
21. आनंदधारा बहिछे भुवने	45	74
22. आमार मुक्ति आलोय- आलोय	05	76
23. पिनाकेते लागे टंकार	59	78
24. तोमारि गेहे पालिछ स्नेहे	04	81
25. सखी आंधारे एकेला घरे	02	83
26. आज ज्योत्स्ना राते	40	85
27. नूपुर बेजे याय	03	168
28. जागरणे याय विभावरी	16	88
29. तोमार गोपन कथाटि	10	90

30. तुह फेले एसेछिस कारे	----- 07	----- 93
31. तोरा ये या बलिस भाइ	----- 56	----- 96
32. आमि चिनि गो चिनि	----- 50	----- 100
33. चांदेर हासिर बांध भेंगेछे	----- 01	----- 102
34. बाजे करुण सुरे	----- 05	----- 105
35. ना, येयो ना, येयो ना	----- 06	----- 107
36. ना चाहिले यारे	----- 59	----- 110
37. हे नवीना, प्रतिदिनेर पथेर धुलाय	----- 01	----- 113
38. सेदिन कुजने कुलेछिनू बने	----- 01	----- 116

प्रकृति सम्बन्धी गीत (क्रम से ग्रीष्म, वर्षा, शरत, हेमंत, शीत, बसंत)

39. चक्षे आमार तृष्णा	----- 18	----- 119
40. एह श्रावण बेला बादल झरा	----- 01	----- 121
41. आजि झरो झरो मुखर	----- 59	----- 124
42. पागला हाओआर बादल दिने	----- 58	----- 127
43. तिमिर अवगुंठने	----- 14	----- 131
44. धरणीर गगनेर मिलनेर छंदे	----- 30	----- 134
45. आजि झडेर राते तोमार अभिसार	----- 11	----- 137
46. मोर भावनारे कि हाओआय मातालो	----- 58	----- 139
47. झरे झरो झरो	----- 31	----- 142
48. शावन गगने घोर घनघटा	----- 11, 21	----- 144
49. नमो, नमो, नमो करुणाघन, नमो हे	----- 05	----- 147
50. एसो शरतेर अमल महिमा	----- 02	----- 149
51. देखो देखो देखो शुक्तारा	----- 31	----- 150
52. धानेर खेते	----- 50	----- 151
53. मोर वीणा ओठे	----- 42	----- 152
54. ग्राम छाडा ओइ	----- 09	----- 153
55. नवकुंदधवल	----- 50	----- 154
56. आमार रात पोहालो	----- 02	----- 154
57. हिमेर राते ओइ गगनेर दीपगुलिरे	----- 02	----- 158
58. शीतेर हाओआर लागलो नाचन	----- 05	----- 162
59. पौष तोदेर डाक दियेछे	----- 30	----- 165
60. एकट्टुकु छौंआ लागे	----- 03	----- 171

61. यदि तारे नाइ चिनि	06	172
62. आजि कमलमुकुलदल खूलिल	36	173
63. आजि खेला भांगार	06	175
64. ओगो वधू सुंदरी	01	177
65. चले याय मरि हाय बसंतेर दिन	05	180

विचित्र-स्वदेश-नृत्यनाट्य एवं नाट्य-गीत

66. नाइ नाइ भय	03	183
67. ओगो नदी, आपन वेगे	07	186
68. यदि तोर डाक शुने केउ	46	189
69. आलो आमार आलो ओगो	52	194
70. मम चित्ते निति नृत्ये	63	197
71. चोख ये ओद्वेर छुटे चले गो	42	200
72. दूरदेशी सेइ राखाल छेले	01	202
73. हे नूतन, देख्या दिक् आर-बार	55	205
74. बडो आशा करे एसेछी गो	08	208
75. पुरानो सेइ दिनेर कथा	32	210
76. दूजने देख्या होल	32	212
77. तब प्रेम सुधारसे	26	215
78. दे लो सखी दे पराइये गले	48	217
79. फूले फूले ढले ढले बहे	29	219
80. प्रमोर्दे ढालिया दिनु मन	32	220
81. सहे ना यातना दिवस गणिया	32	223
82. गहन कुसुमकुंज-माझे	21	225
83. संत्रासेर बिहलता निजेरे अपमान	17	229

विभिन्न मंच एवं कैसेटों में प्रसारित कुछ एक नये अनुवाद

84. नव वसंतेर दानेर डालि	18	233
85. खरवायु बय बेगे	12	234
86. बांध भेंगे दाओ	12	235
87. चरण धरिते दियो गो	40	236
88. भालोबेसे सखी	56	237
89. मने रबे किना	02	238
90. तुमि रबे नीरबे	10	239
91. विश्व साथे योगे	37	239

प्राण

भविष्य छविना आभि सुभ्रुव भुवन,
 मानवक मान आभि विचिन्तक छई।
 अई सूर्यकिरण अई पुष्पित कानन
 जीवतु शमय मोके मन भूत पाये
 धरत प्रालेख लेना छिब उवमिड,
 विवह भिन्न कड शमि उवमिड,
 मानवक मूलमूले आभिभा मञ्जित
 लेनला विचिन्त पावि आव आनम।
 ए यदि ना पावि उले विचि यकाल
 लोभादि भाव भाले नहि लेन छई,
 लोभा उन्निव रले मराल विना-
 नदनर मञ्जित कुभूम फूटेर।
 शमिभूम विना फूल, जीवपाव शय
 लेन विना फूल, यदि ले फूल सुकथ।

श्री विष्णुनाथ

प्राण

न चाहूँ मैं मरना इस सुंदर भुवन में
 जीऊँगा जीवन हर मानव जीवन में।
 ये सूर्य किरण ये पुष्पित कानन
 स्थान दो मुझे हर जीवंत हृदय में।
 चिरतरंगित ये प्राण लीला धरा के
 विरह मिलन अश्रु और हसी में--
 मानव के सुख-दःख की गूँथ गीत माला
 अमर एक आलय अब मुझे रचने दे
 सफल न हुआ तो जब तक जीऊँ मैं
 तुम्हारे ही बीच, थोड़ी जगह दो मुझे,
 नए-नए संगीत के फूल मैं खिलाता रहूँ
 कि तुम, चुन लो, सुबह शाम उरसे
 हस-हस कर चुनते रहना फूल मेरे
 गिरा देना फूल अगर वे सूखें॥

रवीन्द्रनाथ ठाकुर

रवीन्द्र गीत एवं स्वरवितान (सुनिर्वाचित गीत)

- पूजा तथा प्रेम गीत ।
- प्रकृति सम्बन्धी गीत क्रम से - ग्रीष्म, वर्षा, शरत, हेमंत, शीत, बसंत ।
- विचित्र-स्वदेश-नृत्यनाट्य एवं नाट्य-गीत ।
- विभिन्न मंच एवं कैसेटों में प्रसारित कुछ नये अनुवाद गीत रवीन्द्र संगीत के गीतवितान तथा स्वरवितान के संख्या सहित ।

बांग्ला

(गीतांजली से)

विपदे मेरे रक्षा करो ए नहे मोर प्रार्थना
विपदे आमि ना येन करि भय ।
दुःखतापे व्यथित चिते नाइ बा दिले सांत्वना,
दुःखे येन करिते पारि जय ॥
सहाय मोर ना यदि जूटे निजेर बल ना येन दूटे
संसारते घटिले क्षति, लभिले शुधु वंचना,
निजेर मने ना येन मानि क्षय ॥
आमारे तुमि करिबे प्राण ए नहे मोर प्रार्थना
तरिते पारि शकति येन रय ।
आमार भार लाघव करि नाइ वा दिले सांत्वना,
बहिते पारि एमनि येन हय ।
नम्रशिरे सुखेर दिने तोमारि मुख लइब चिने
दुखेर राते निखिल धरा ये दिन करे वंचना
तोमारि येन ना करि संशय॥

हिन्दी

विपद में मेरी रक्षा करो ये नहीं मेरी प्रार्थना
विपद में मैं न मानूँ कभी भय
वेदना तप्त व्यथित चित्त को, भले ही न दो सांत्वना-
वेदना को कर लेने दो जय ॥
सहाय मुझे न मिले यदि अपना बल, न खोऊँ कभी
जग में यदि खो दूँ सभी, मिले केवल वंचना-
अपना मन कभी, न दूटे हाय ॥
मुझे आके तारो तुम, ये नहीं मेरी प्रार्थना
तर सकूँ मैं शक्ति ऐसी हो ।
भार मेरा हल्का कर, भले ही न दो सांत्वना
अपना भार आप ही ढोने दो ।
नत-माथ सुख के दिनों तेरा सुख सदा पहचानूँ
दुख के रातों सारा जग जिस दिन करे वंचना
तुझपे कभी न करूँ संशय ॥

स्वरलिपि

(राग : इमन- इम्पक ताल)

	+		2	+		2					
II	सा	सां-	सां	नि	नि	ध	ध	ध	प	प	I
	वि	पद	में	मे	री	र	S	क्षा	क	रो	
I	ध	-ध	ध	प	म	ग	-मग	म	नि	-ध	I
	ये	न	ही	मे	री	प्रा	SS	र्थ	ना	SS	
I	ध	ध	प	प	रे	ग	ग	ग	रे	रे	I
	दि	प	द	में	में	न	मा	नूँ	क	भी	

I	सा भ	- य	- S	2 - S	1 - S	+	ग वे	- द	ग ना	2 रे त	रे स	I
I	सा व्य	सा धि	नि त	ध- चित्त	नि को	+	नि ग भ	- ले	रे ही	सा न	नि दो	I
I	सा शा	- न	रे त्व	सारे नाS	-ग SS	+	प वे	- द	प ना	प को	रे	I
I	ग क	ग र	ग ले	रे ने	रे दो	सा ज	- य	- S	- S	- S	- S	II
II	प स	प हा	-ग Sय	प मु	-ध Sझे	ध न	सां मि	सां ले	सां य	सां दि	सां	I
I	सां अ	गं प	गं ना	रें ब	रें ल	सां न	सां खो	नि ऊँ	ध क	प भी	ध	}I
I	गं ज	- ग	गं में	रें य	रें दि	सां खो	सां S	-सां Sदं	नि स	नि भी	नि	I
I	ध मि	ध ले	ध S	प के	म- वल	म वं	मग Sन	म च	म नि	ध ना	ध S	I
I	ध अ	ध प	प ना	प म	रे न	ग क	ग भी	ग न	रे दू	रे टे	रे	I
I	सा हा	- य	- S	- S	- S	II						

	+		2	+		2					
II {	ग	प्र	ग	प	ग	प	प	प	प	-	I
	मु	झे	S	आ	के	ता	रोS	S	तु	म	
I	प	-प	प	प	प्र	ग	प्रग	प्र	प्र	-घ	I
	ये	न	ही	मे	री	प्रा	SS	र्थ	ना	SS	
I	ध	ध	प	प	रे	ग	ग	ग	रे	रे	I
	त	र	स	कूँ	मैं	श	S	क्ति	रे	सी	
I	स	-	-	-	-	ग	ग	ग	रे	-	I
	हो	S	S	S	S	भा	S	र	मे	रा	
I	सा	सा	ज़ि	ध	ज़ि	नि	-	रे	सा	ज़ि	I
	ह	ल	का	क	र	भ	ले	ही	न	दो	
I	सा	-	रे	सारे	-ग	ग	प	प	प	रे	I
	सान	त्व	नाS	SS	अ	प	प	ना	भा	र	
I	ग	ग	ग	रे	रे	सा	-	-	-	-	}I
	आ	प	ही	दो	ने	दो	S	S	S	S	
I {	प	-	ग	प	ध	ध	सां	सां	सां	सां	I
	न	S	त	मा	थ	सु	ख	के	दि	नों	
I	सां	गं	गं	रें	-	सां	सां	नि	ध	प	}I
	ते	रा	S	मुं	ख	स	दा	पह	चा	नूँ	
I	गं	गं	रें	रें	रे	सां	सां	सां	नि	नि	I
	दु	ख	के	रा	तों	सा	रा	S	ज	ग	

	+		2		+ ^म	2	
I	ध ध ध-	प म	ग मग म	नि - ध	I		
	जि स दिन	क रे	वंऽ ऽन च	ना ऽऽ			
I	ध ध प	प रे	ग ग ग	रे - -	I		
	तु झ पे	क भी	न क ऋ	संऽ ऽ			
I	सा- - -	- -	II II				
	शय ऽ ऽ	ऽ ऽ					

झम्पक ताल रवीन्द्रनाथ की अपनी सृष्टि है। इसमें पहले विभाग में तीन फिर दो, इस प्रकार पांच मात्राओं के दो विभाग हैं कोई खाली नहीं है।

बांग्ला

बहे निरंतर अनंत आनंदधारा ॥
 बाजे असीम नभोमाझे अनादि रव,
 जागे अगण्य रविचंद्रतारा ॥
 एकक अखंड ब्रह्मांड राज्ये
 परम-एक सेइ राजराजेन्द्र राजे ।
 विस्मित निमेषहत विश्व चरणे विनत,
 लक्षशत भक्तचित वाक्यहारा ॥

हिन्दी

बहे निरंतर अनन्त आनंद धारा ।
 बाजे असीम नभ मध्य अनादि रव
 जागे अगनित रवि-चंद्र-तारा ॥
 एक ही अखण्ड ब्रह्मांड राज्य-
 परम एक वही राज राजेन्द्र राजे ।
 विस्मित निमेष-हत विश्वचरणों पे नत
 लाखसत भक्त-चित वाक्य हारा ॥

स्वरलिपि

(लच्छासार / झपताल)

	+		2	0 प	प	3	ग
सा नि सा II	रे -गरे	ग म प	ध	-	म म -		
ब हैं नि	रं ऽऽ	त र अ	नं	ऽ	त आ ऽ		
	रे रे		ध	।			
	ग -	सा नि नि	सा	-	रे नि सा	II	
	नं ऽ	द धा ऽ	रा	ऽ	ब हैं नि		

--- II {
SSS

प	-	नि	-ध	नि	सां	-सां	सां	सां	सां
बा	S	जे	SS	अ	सी	S	म	न	भS
न									
ध	-नि	सां	निरे	रे	सां	नि	निसां	धनि	प
म	SS	ध्य	SS	अ	ना	S	बिS	रS	व
प	प								
ध	-	म	-ग	म	प	प	प	सां	नि
जा	S	गे	SS	अ	ग	णि	त	र	वि
ध	प			ग	रे	रे			
चं	S	द्र	ता	S	ग	-	सा	सानि	सा
					रा	S	"ब	हेS	नि"

II

--- II {
SSS

सां	-	नि	सां	सां	धनिसां	-नि	ध	प	-धप
ए	S	क	ही	अ	खंS	SS	ड	ब्र	SS
म	-नि	निध	प	धप	म	-गप	म	ग	गम
म्हां	Sन	Sइ	रा	SS	ज्य	SS	प	र	मS
रे	-गरे	ग	म	प	प	-म	म	म	-ग
ए	SS	क	व	ही	रा	SS	ज	रा	SS
रे	गरे	सा	नि	नि	सा	-	-	-	-
जे	SS	म्द्र	रा	S	जे	S	S	S	S
प	-	प	निध	नि	सां	-	सां	सां	सांनि
वि	S	स्मि	तS	नि	मे	S	ष	ह	तS
ध	निध	नि	सां	रें	सां	-नि	निसं	धनि	प
वि	SS	श्व	च	र	णों	SS	पेS	नS	त

	नि सां सां सां ग S ग न	र में	नि S	- ध म ध S 'प्र थ म'	II
II {	म ध नि सां तु म्हा SS री	र - आS	सां दि	सनि सां सां वाS Sणी	
	नि सां सां सां - धा रे है S	सां त	सां व	नि सां नि -ध नि आ नं SS द	}II
	सां - गं गं जा S गे S	रें नि	र त	सां नि सां सां न व र स	
	ध नि नि सां सां ह दि म न	रें में	-नि SS	- ध म ध S 'प्र थ म'	II
II {	सा - म - ते S रे S	म ही	म चि	म - ग - दा S का श	
	म -ध ध -ग में SS शो SS	म भि	म त	ग - रे सा सू S र ज	
	स ग ग म चं S द्र ता	ध S	ध रा	म ध ध नि प्रा ण त रं	
	सां सां नि नि S ग उ ठे	सां प	सं- वन	रें नि ध - में S S S	}II
II {	म - ध - तुम S हो S	नि आ	- S	सां सां सां - दि क वि S	

ध	नि	नि	सां	सां	सां	सां	रे	-नि	सां	सां	}II
क	वि	गु	रु	तु	म	हो	SS	S	S		
सां	-	गं	गं	रे	-	सां	नि	सां	सां		
मं	S	प्र	ते	ये	S	मं	SS	द्वि	त		
ध	नि	नि	सां	सां-	रे	नि	-	ध	म	ध	II II
स	ब	भु	वन	में	S	S	'प्र	थ	म'		

* बांग्ला में प्रचलित सुलफाकताल में 4+2+4 मात्राओं की विष्णुपुर घराने में व्यवहृत ताल की मान्यता है।

बाग्ला

की गाब आमि, की शुनाब, आजि आनंदधामे ।
 पुरवासी जने एनेछि डेके तोमार अमृतनामे ॥
 केमने वर्णिब तोमार रचना, केमने रटिब तोमार करुणा,
 केमने गलाब हृदय प्राण तोमार मधुर प्रेमे ॥
 तब नाम लये चन्द्र तारा असीम शून्ये धाइछे
 रवि हते ग्रहे झरिछे प्रेम, ग्रह हते ग्रहे छाइछे ।
 असीम आकाश नीलशतदल तोमार किरणे सदा दलदल,
 तोमार अमृतसागर-माझारे भासिछे अविरामे ॥

हिन्दी

क्या गाऊँ मैं क्या सुनाऊँ आज आनंद धाम ये
 पुरवासी हैं आस लागए, तेरे अमृत नाम के ॥
 कैसे मैं वर्णू तेरी रचना, कैसे मैं रटाऊँ तेरी करुणा,
 विगलित हो कैसे प्राण, तेरे मधुर प्रेम में ॥
 तेरे नाम-बल चन्दा तारे, असीम नभ में धाएँ,
 रविसे झरे ग्रह तक प्रेम, ग्रह-ग्रहांतर छाप ।
 असीम आकाश नील शतदल तेरी ही किरणों से सदा समुज्वल
 तेरे ही अमृत सागर बीच हँसते खिलते हरदम रे ॥

स्वरलिपि (मिश्र कानड़ा / एकताल)

	+			2			0			3		
II	सा	म	म	म	म	म	म	-	प	मप	मपध	प
	क्या	S	गा	ऊँ	मैं	S	क्या	S	सु	नाS	SSS	ऊँ
												॥
	मग	ग	ग	ग	-	गम	रे	-	-ग	सा	-	-
	आS	ज	आ	S	न	दS	धा	S	Sm	में	S	S
	सा	सम	म	म	म	म	म	पम	प	सां	सां	नि
	पु	रS	वा	सी	हैं	S	आ	Sस	ल	गा	ये	S
	नि	ध	नि	प	म	मनि	प	-मरे	-म	रे	-	सा II
	ते	रे	S	अ	मृ	तS	ना	SS	म	के	S	S

II	{	नि कै	नि से	नि में	नि व	नि र	निसां णूऽ	सां ते	निसरें रीऽऽ	सां ऽ	सां र	सां च	सां ना	
		नि कै	सां से	रें में	रें र	मं टा	मं ऊं	रे ते	रगं रीऽ	सां ऽ	निध कऽ	निप रुऽ	प णा	}
		म वि	प ग	प लि	प त	प हो	धप ऽऽ	म कै	पम सेऽ	प ऽ	सां प्रा	- सांनि ऽ	ऽऽण	
		नि ते	ध रे	नि ऽ	प म	म धु	नि र	प प्रे	मरे ऽऽ	-म ऽम	रे में	- ऽ	-स ऽऽ	II
II	{	ध ते	ध रे	निध ना	निप ऽम	प ब	म ल	प चं	- दा	प ऽ	पम ताऽ	-पम ऽऽ	प रे	
		ध अ	ध सी	ध म	निध नऽ	-नि भऽ	प में	मप धाऽ	-मपध ऽऽऽ	प ऽ	म यें	-ग ऽ	- ऽ	
		ग र	ग वि	ग से	ग झ	ग रे	रगम ऽऽऽ	रे ग्र	रे ह	रेग तक	सा प्रे	- ऽ	सा म	
		रें ग्र	म ह	म ग्र	म हां	म ऽ	प- तर	ध छा	- ऽ	म ऽ	प ये	- ऽ	- ऽ	}
	{	नि अ	नि सी	नि म	नि आ	नि का	निसां ऽश	सां नी	- ऽ	सां ल	सां- शत	सां द	सां ल	
		नि ते	सां री	रें ही	रें कि	मं- रणों	मं से	रें स	रेंसां दाऽ	सां स	निध मुऽ	निप ज्वऽ	प ल	}

म	प	प	प	प	धप	म	पम	प	सां	सां	संनि
ते	रे	ही	अ	मृ	तऽ	सा	गऽ	र	बी	ऽ	चऽ
नि	ध-	नि	प	म	मि	प	मरे	म	रे	-	सा
हं	सते	खि	लते	ह	र	द	मऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ

II II

बांग्ला

हे सखा, मम हृदये रहो ।
 संसारे सब काजे ध्याने ज्ञाने हृदये रहो ॥
 नाथ, तुमि एसो धीरे सुख-दुख-हासी-नयननीरे,
 लहो आमर जीवन धिरे
 संसारे सब काजे ध्याने ज्ञाने हृदये रहो ॥

हिन्दी

हे सखा मेरे हृदय में बसो
 जगत के सभी कर्मों में ध्यान-ज्ञान-हृदय में बसो ॥
 नाथ तुम आओ धीरे, सुख-दुःख हँसी नयन-नीरे ।
 रहो मेरे जीवन घेरे,
 जगत के सभी कर्मों में ध्यान-ज्ञान-हृदय में बसो ॥

स्वरलिपि(छायानट/द्वुत एकताल)

II {	ग	रे	ग	-	म	प	म	ग-	रे	नि	रे-	सा	
	हे	स	खा	ऽ	मे	रे	ह	दय	में	ब	सोऽ	ऽ	}
	प	-	प	प	-नि	-सां	ध	नि-	ध	प	ध	प	
	ज	ग	त	के	ऽऽ	ऽऽ	स	बऽ	हि	क	मों	में	
	रे-	गरे	ग	म-	ध	प	म	ग-	रे	नि	रे	सा	II
	ध्याऽ	ऽऽ	न	ज्ञाऽ	ऽ	न	ह	दय	में	ब	सो	ऽ	

II {	प	-	प	प-	सां-	ध	सां	सां	सां	सां	-	सां	
	ना	S	थ	तुम	SS	S	आ	ओ	S	धी	S	रे	
	सां	ध	सां	सां	सां	रें	सं	नि	ध	धनि	ध	प	}
	सु	ख	दु	ख	हं	सी	न	य	न	नीS	S	रे	
	रे	रे	ग	म	-ध	प	म	ग-	रे	नि	-रे	सा	
	र	हो	S	मे	SS	रे	ह	दS	य	घे	SS	रे	
	प	-	प	सां	-नि	-सां	ध	न-	ध	प	ध	प	
	ज	ग	त	के	SS	SS	स	बS	ही	क	मों	में	
	रे	गरे	ग	म-	ध	प	म	ग-	रे	नि	रे	सा	II II
	ध्या	SS	न	ज्ञाS	S	न	ह	दय	में	बं	सो	S	

बांग्ला

आछे दुःख, आछे मृत्यु, विरहदहन लागे,
 तबुओ शांति तबु आनन्द, तबु अनन्त जागे ॥
 तबु प्राण नित्यधारा, हासे सूर्य चन्द्र तारा,
 बसंत निकुंजे आसे विचित्र रागे ॥
 तरंग मिलाये जाय तरंग उठे
 कुसुम झरिया पड़े कुसुम फूटे ।
 नाहि क्षय, नाहि शेष नाहि नाहि दैन्यलेश
 सेइ पूर्णतार पाए मन स्थान मागे ॥

हिन्दी

असहन दुख या मरण, विरह दहन दहे
 तो भी शांति तो भी आनन्द, तो भी अनन्त जागे
 तो भी प्राण नित्य धारा, हँसे सूरज चन्द्र तारा
 बसंत कुंज में आए अनोखे रंग लाये ॥
 तरंगे सो जाएं तरंगे जागें
 फूल झरे मुझाए नये फिर खिलें ।
 नहीं क्षय नहीं शेष, नहीं नहीं दैन्य-लेश,
 उसी संपूर्ण के पगों पे मन स्थान मांगे ॥

स्वरलिपि(मिश्र जोगिया/एकताल)

		ग			ग			ग				
II	सारे	सरेग	ग	ग-	ग	रेसा	सरे	सरेग	ग-	रे	रे	सा
	अS	सSS	S	हन	दु	खS	याS	SSS	SS	म	र	ण
	सा	रे	म	म	म	म	म	-	गप	म	-ग	-
	वि	र	ह	द	ह	न	द	S	SS	हे	SS	S
	प	ध	सां	सां	-	र	सां	सरेग	र	सां	-निध	ध
	तो	S	भी	शां	S	ति	तो	भीSS	आ	नं	SS	द

	प	पधनि	ध	प	-	प	प	-	मप	प	-	-	II
	तो	भीऽऽ	अ	न	ऽ	त	जा	ऽ	ऽऽ	ध	-	-	
II {	प	पध	म	म	-सां	सां	सां	-	सां	सांनि	सां	सां	
	तो	भीऽ	ऽ	प्राऽ	ऽ	ण	निऽ	ऽ	त्य	धाऽ	ऽ	रा	
	सां	रे	-	रे	सरेग	-रे	रें	-सां	सां	सां	-ध	प	}
	हैं	से	ऽ	सू	ऽऽऽ	रज	चं	ऽऽ	द्र	ता	ऽऽ	रा	
	प	प	ध	ध	-रे	सां	सां	-नि	नि	नि	प-	प	
	व	सं	ऽ	त	ऽऽ	कुं	ऽ	ऽऽ	ज	ध	आऽ	ये	
	प	पध	नि	नि	-प	मपध	ध	-	-	-	-	-	I
	अ	नोऽ	ऽ	खे	रंग	लाऽऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
II {	सा	रे	म	म	-	म	म	-	म	म	ग	-	
	त	रं	ऽ	गें	ऽ	ऽ	सो	ऽ	ऽ	जा	ऽ	यें	
	ग						नि						
	म	म	ग	म	नि	नि	ध	-	-	प	-	धप	
	त	रं	ऽ	गें	ऽ	जा	गें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽ	
	म	म	ग	सारे	गम	म	ग	रे	ग	रे	सा	नि	
	फू	ऽ	ल	झरें	ऽऽ	ऽ	मु	र	ऽ	झा	यें	ऽ	
	सा	सा	-र	ग	-म	म	म	-	-	-	-	-	}
	न	ये	ऽ	फि	रऽ	खि	लें	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
	प	ध	म	पधा	-सां	सां	सां	रे	सां	सां	सांनि	सां	सां
	न	हीं	ऽ	क्षय	ऽऽ	ऽऽ	न	हींऽ	ऽ	शेऽ	ऽ	ष	

सां	-रें	रें	सारें	-गं	रें	सां	निसां	सां	नि	-प	प
न	ऽहीं	ऽ	नऽ	ऽऽ	हिं	दै	ऽऽ	न्य	ध	ऽऽ	श
प	-ध	ध	ध	-र	सासां	निसां	-नि	नि	नि	प	प
उ	ऽसी	सं	पू	ऽऽ	रण	केऽ	ऽऽ	ऽ	ध-	गोंऽ	पे
प	पधनि	-	न			म			प		
म	नऽऽ	ऽ	ध	-प	पम	प	प	प	ध	-	-
			स्था	ऽ	ऽन	मां	ऽ	ऽ	ने	ऽ	ऽ

बांग्ला (गौड़ : झपताल)

हे निखिलभारधारण विश्वविधाता,
हे बलदाता महाकालरथसारथि ॥
तब नामजपमाला गाँथे रवि शशि तारा ।
अनंत देशकाल जपे दिवाराति ॥

हिन्दी

हे निखिल भारधारण विश्व विधाता
हे बलदाता महाकाल-रथ-सारथि ॥
तौ नाममाला गूँथ जपे रवि-शशि-तारा,
अनंत देश-कालहिं जपे दिवा-रात्रि ॥

बागला

आजि यत तारा तब आकाशे
 सबे मोर प्राण भरि प्रकाशे ॥
 निखिल तोमार एसेछे छुटिया, मोर माझे आजि पड़ेछे टूटिया हे,
 तव निकुंजेर मंजरी यत आमारि अंगे विकाशे ॥
 दिके दिगंते यत आनंद लभियाछे एक गभीर गंध,
 आमार चित्ते मिलि एकत्रे तोमार मंदिरे उछासे ॥
 आजि कोनोखाने कारेओ ना जानि,
 शुनिते ना पाइ आजि कारो वाणी हे,
 निखिल निश्वास आजि ए वक्षे बाँशरिर सुरे विलासे ॥

हिन्दी

आज जितने तारे तेरे आकाश में सब मेरे प्राणभर-प्रकाश दें !!
 निखिल ये तेरा, मुझ तक धाए मेरे बीच ये टूट पड़े रे, ओ-हो?
 तेरे निकुंजन की मंजरियाँ मेरे अंग में- विकस उठें !!
 दिग- दिगंत की सारी खुशियाँ भरी गहन सुरभी उनमें जा,
 मेरे चित्त में मिलजुल कर वो तेरे ही मंदिर में शोभे ।
 आज कहीं मैं किसी को न जानी सुन न पाऊं किसी की भी वाणी हो
 निखिल स्पंदन आज मेरे मन में बांसुरी सी मधुर बजे !!

स्वरलिपि

	+	0	+	0	ग म
II	सां				आ ज
	प सां- नि -ध	पध निध प म	ग -सा ग -	म -	म म
	जि तने ता SS	रेऽ SS ते रे	आ SS का श	मे S	स ब
	म - गमप प	प प प प	प ध पध -नि	ध -	ग म II
	मे S SSS रे	प्रा ण भ र	प्र का SS शऽ	दें S	आ ज
-- II {	म ध ध -	नि - सा -	सांनि रेसां रेसनि -	सां सांनि सां -	
SS	नि खि ल ये	ते S रा S	मुऽ झऽ तऽक S	घा SS यें S	

प - - ध	प - - नि	धा - - -	- .- - - }
हो S S S	S S S S	S S S S	S S S S
		रे	
ध सांनि सां सां	नि सां सां सां	ध सा नि रेसा	नि - सा ध
नि खिऽ ल स्प	न S द न	आ ज मे रे S	म न में S
ध - सां नि	ध धप म ग	म - ध -	धनि -सां ग म
बां S S सु	री SS सी S	म धु र ब	जेऽ S 'आ ज

II II

बांग्ला

ए मणिहार आमाय नाहि साजे
 एरे परते गेले लागे, एरे छिड़ते गेले बाजे ॥
 कंठ ये रोध करे, सुर तो नाहि सरे
 ओइ दिके ये मन पड़े रय मन लागे ना काजे ॥
 ताइ तो बसे आछि
 ए हार तोमाय पराइ यदि तबेइ आमि बाँचि ॥
 फूलमालार डोरे वरिया लओ मोरे
 तोमार काछे देखाइ ने मुख मणिमालार लाजे ॥

हिन्दी

ये मणिहार मुझे न सुहाये
 इसे पहन लूं तो चुभे इसे तोड़ू तो मन दुखे ॥
 कंठ यो रुध आए स्वर तो नहीं सरके ॥
 उसी में ये मन भरमाये काम में लगन न लगे ॥
 तभी तो बैठूं ऐसे ये हार तुम्हें पहना लूं जो तब ही धन्य मानूं
 फूलमाला की डोर से बस वरण मेरा कर ले
 तेरे से मैं आंखे चुराऊं मणि-हार की लाज से ॥

स्वरलिपि (यमन / दादरा)

II	ग	-	ग	ग	गम	-रे	गध	प	-	-	म	प
	ये	S	म	णि	हाS	S	मुS	झे	S	S	न	सु
	सा									॥		
	नि	-	-	-सा	-रे	-ग	रेसालि	-सा	-	-	सा	सा
	हा	S	S	SS		SS	येSS	SS	S	S	इ	से
	निसारे	-	रे	रे	रे	रे	रे	रे	-	-	रे	रेग
	पहS	S	न	लूं	S	तो	चुं	भे	S	S	इ	सेS
	सारे-	सारेग	ग	ग	ग	ग	ग-	ग	-	-	-	-
	तोSS	डूंSS	S	तो	म	न	दुS	खे	S	S	S	S
-- II	{	प	-	प	म	प	-	प	मप	ध	-	-
SS	{	कं	S	ठ	यो	रू	ध	आ	येS	SS	S	S
		पध	नि-	नि	नि	निध	प	प	पध	निसां	-	-
		स्वS	रS	तो	न	हींS	S	स	केंS	SS	S	S
		सां	-गं	गं	रे	सां	-	निसां	-रें	सां-	नि	ध
		इ	Sसी	S	में	ये	S	मन	SS	भर	मा	ये
		पध	नि	नि	ध	प-	-	मप	ग	-	-	-
		काS	म	में	ल	गन	न	लS	गे	S	S	S
		सा	-नि	नि	-सा	सा	सा	सा	-नि	-रे	सा	-
-- II	{	त	Sभी	तो	SS	बै	तूं	रे	SS	SS	से	S
SS	{	सा	सा	रे	रे	नि	-रेग	ग-	रे	-ग	रे	सा
		ये	हा	S	तु	म्हें	SS	पह	ना	SS	लूं	जो

II

II

सा- तब	सा ही	सां S	- S	नि ध	ध न्य	पध माS	निसांनि SSS	-धनि SSS	धप नूंS	- SS	म S
ग त	-रे Sभी	सा तो	धसा SS	सा बै	सा तूं	सा रे	नि S	रे S	सा से	- S	- S
{ प फू	प S	प ल	म मा	प ला	प की	प डो	मप रS	ध से	- S	ध ब	ध स
प व	पध रण	-नि SS	नि मे	नि रा	-धप SSS	प- कर	पध लेS	निसां SS	- S	- S	- S
सां ते	सां रे	-गं SS	रें से	सां में	- S	सां आँ	सां खे	- चु	नि रा	ध ऊँ	- S
प म	पध णिस	निसां SS	नि हा	ध र	-प की	सा ला	- S	-रे Sज	ग से	- S	- S

II II

बाग्ला

ढौँडिये आछ तुमि आमार गानेर ओ पारे
 आमार, सुरगुलि पाय चरण, आमि पाइ ने तोमारे ॥
 बातास बहे मरि मरि, आर बेधे रेखो ना तरी
 एसो एसो पार ह्ये मोर हृदय-माझारे ॥
 तोमार साथे गानेर खेला दूरेर खेला ये,
 वेदनाते बाँशी बाजाय सकल बेला ये ।
 कबे नियो आमार बाँशी बाजाबे गो आपनि आसि
 आनंदमय नीरब रातेर निबिड़ आँधारे ॥

हिन्दी

हो- विराजे हो तुम मेरे, गीतों के उस पार ।
 मेरे स्वर-दल पाएँ चरण, मैं न पाऊं तुझको हेर !
 बयार बहती ओहो ओरी; बाँध न रखो तरणी मेरी
 आओ मेरे मन मझधार में, पार हो आओ, पार !!
 हम तुम खेलें खेल ये गीतों के, सुदूर की लीला ये
 वेदना में बजे बंसी, हर एक पल-पल में ।
 कब तुम कर-धरो मेरी बंसी, फूंक भर दो मगन मन में
 आनंदमयी नीरव रात में गहन हो जब अंधियार ॥

स्वरलिपि (मिश्र विहाग /तीनताल)

II

प	सां	सां	नि	धप	म	प	-	म	-प	ग	-	म	-	म	-
हो	S	S	बि	रा	SS	जे	हो	तुम	SS	S	S	मे	S	रे	S
ग				ध	-म	पम	गम	प	-	-	-	-	-	प	प
रे	-	गम	पध	के	SS	उS	S	पा	S	S	S	S	र	मे	रे
गी	S	तोंS	SS	धनि	सं	नि	ध	प	म	-प	ध	-	-	म	प
प	नि	-	ध	पाS	S	एं	S	च	SS	र	ण	S	S	मैं	न
स्व	र	द	ल												

	धनि सरे - रे पाऽ SS S ऊं	स नि रे स नि तु झ को S	ध -नि ध - हे S S S	ध प सा - म - S S र S	II
-- II S S	प - प सां ब S या र	सां - सां - ब ह ती S	सां - सां -नि ओ S हो SS	रे सां - सां - ओ S री S	
	सं नि -रे रे बां S Sध न	रे - सां - र S खो S	सां नि - धा - त र णी S	ध नि धप प - में SS री S	}
	प म - ग - म आऽ S वो S S	ग रे- गप प - मेऽ SS रे S	प -गं - गं म Sन म झ	रे -रे सां - धा Sर में S	
	सां नि रे सां नि पा S र हो	नि ध सां नि - आ S ओ S	प म -ध -प - पा SS SS S	प प सा - म - S S S र	II
-- II S S	प -सां सां - ह Sम तु म	सा -नि नि - खे SS लें S	रे - गम पध खे ल येऽ SS	ध पम प - गी तोऽ के सु	
	प - प -नि दू S र की	नि - ध निसां ली S ला S	नि - - - ये S S S	- - - - S S S S	
	नि -रे रे -रे वे SS द SS	गं रे रे- रे - ना SS में S	रे सां - निसां -रे ब S जोऽ S	सां नि - नि - बं S सी S	
	ग रे - गम पध ह र एऽ Sक	ध म पम गम प ल पल SS	म प - - - में S S S	- - - - S S S S	
{	प - प सां क ब तु म	सा - सां - क र ध रो	सां - सां -नि मे S री SS	रे सां निसां सां - बं SS सी S	

सां - सांनि रे	रे सां सां -	ध नि - नि ध	ध नि- धप प -	}
फूँ S SS क	भ र दो S	म S ग न	मS Sन से S	
प	ग	प		
म - ग -म	रे गप प -	गं - गं -रे	रे -सां सां सां	
आ S नं द	म SS यी S	नी S र व	रा SS त में	
सा	नि		प प	
नि रे सां नि	ध सां नि -म	म -ध प -	सा - म -	II II
ग ह न हो	ज ब अं धि	या S S S	S S र S	

* * *

बांग्ला

तुमि केमन करे गान करो हे गुणी,
 आमि अबाक हये शुनि केवल शुनि ।
 सुरेर आलो भुवन फेले छेये,
 सुरेर हावा चले गगन बेये,
 पाषाण टूटे व्याकुल वेगे धेये
 वहिया जाय सुरेर सुरधुनि ॥
 मने करि अमनि सुरे गाइ
 कंठे आमार सुर खुँजे ना पाइ ।
 कइते की चाइ, कइते कथा बाधे ,
 हार मेने ये पराण आमार काँदें
 आमाय तुमि फेलेछ कोन् फाँदें
 चौदिके मोर सुरेर जाल बुनि ॥

हिन्दी

(तुम) कैसे ऐसे गीत हो गाते चलते
 गुणी कैसे ऐसा गीत गाते चलते ।
 अचरज में पड़े सुनते, हम सुनते गुणी ॥
 सुर-आलोक भुवन-भर छा जाए
 सुर लहरी गगन-गगन मंडराए ।
 तोड़ पाषाण व्याकुल वेग से धाये

बहती जाये सुर ही, सुर की गंगा ये ॥
मन में आए तेरे जैसा गाऊं
कंठ में अपने स्वर दूँ न पाऊं
कहना चाहें लब वो कह न पाए-
हार मान ले प्राण मेरा रोए ।
कैसे धोखे में डाला है तूने-
चारों ओर मेरे सुर की चले जाल बिछाते ॥

स्वरलिपि

		+	0	+	0	ध ध
		ध	रे			तु म
II		नि - नि रे	सां - नि -ध	प -ध - प	म - ग -ग	
		कै S से S	रे S सा SS	गी SS त हो	गा S ते SS	
		+	0	+	0	
		ग - म -	- - म ग	म - प -	- - म ग	
		च S लते S	S S अ च	र ज में S	S S प डे	
		म - ध -	- - म ग	म - सां -	- - नि ध	II
		सु न ते S	S S ह म	सु न ते S	S S "गु णी"	
- -II		म - म -नि	नि ध - ध -नि	नि - सां -	सां -रे सां -	
S S		सु र आ SS	लो S S Sक	भु S व न	भ S र छा S	
		सां		सां		
		नि - सां -	- - - -	नि - नि -	नि - सां -	
		जा S ये S	S S S S	सु र ल ह	री S S S	
		सां	सां	रे		
		नि - सां -	नि -सां न -रे	सां - नि -	-ध - - -	
		ग S ग न	ग SS ग न	म ड रा S	Sये S S S	

- -II
S S

ध - ध -	ध - ध नि -	सा - - -	गं - मं -
तो S S इ	पा षा S ण	व्या S कु ल	वे S ग से
रं	- - - -	सं	नि - सां -
नि - सां -	- - - -	नि - नि -	जा S ये S
धा S ये S	S S S S	ब ह ती S	
म - म -	- - ग म	प -ध प -ध	प -ध प -ध II
सु र ही S	S S सु र	की S गं SS	गा SS ये SS
सा - सा -	रे - रे -	श्रे - ग ग	ग म श्रे म
म न में S	आ S ये S	ते S रे S	जै S सा S
म - - -	- - - -	म -प - प	प - प -
गा S ऊं S	S S S S	कं SS ठ में	अ प ने S
प -ध - ध	ध - ध नि	नि	ध - - -
स्व S S S	हूं S ढ न	ध - - -	ऊं S S S
म -ध ध ध	ध - ध नि	पा S S S	सां -रे सां -
क S ह ना S	चा S हे S	नि नि सां -	क ह ना S
सां	सां सां	ल व वो S	
नि - सां -	- - - -	सां	नि - निसां -
पा S ए S	S S S S	नि - - नि	S न ले S S
सां	सां सां	हा S र मा	
नि - सां -	नि -सां नि -रे	रे	ध - - -
प्रा S S ण	मे रा S S	सां - नि -	S S S S
		रो S ए S	



ध - ध -	ध - ध नि -	सां - सं -	मं - रे -
कै ऽ से ऽ	धो ऽ खे ऽ	मैं ऽ डाऽ ऽ	लाऽ ऽ है ऽ
रे	- - - -	सं - - नि	नि - सां -
नि - सां -	ऽ ऽ ऽ ऽ	चा रों ऽ ओ	ऽ र मे रे
तू ऽ ने ऽ	- - ग -म	प -ध प -ध	ध ध
सां	- - च ऽले	जा ऽऽ ल बि	प ध प -ध
म - म -	ऽ ऽ च ऽले	जा ऽऽ ल बि	छा ऽ ते ऽऽ
सु र की ऽ	ऽ ऽ च ऽले	जा ऽऽ ल बि	छा ऽ ते ऽऽ

बांग्ला

आमार बेला ये जाय साँझ बेलाते
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ॥
एकताराटिर एकटि तारे गानेर वेदन बइते नारे,
तोमार साथे बारे बारे हार मेनेछि एइ खेलाते,
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ॥
ए तार बाँधा काछेर सुरे,
ओइ बाँशि ये बाजे दूरे ।
गानेर लीलार सेइ किनारे योग दिते कि सबाइ पारे ।
विश्वहृदयपारावारे रागरागिणीर जाल फेलाते
तोमार सुरे सुरे सुर मेलाते ॥

हिन्दी

मेरा दिन ढल जाए साँझ हो आए
तेरे सुर ही सुर में सुर मिलायें ॥
'इकतारा' की एक तार में-
दर्द-भरी धुन, सध न जाए ।
तेरे पास मैं, बार ही बार
हार मानी, इस खेल में,
तेरे सुर ही सुर में, सुर जो मिले ॥
पास है बंधा, इस सुर का तार,
वह बंशी जो दूर-बजे
गीतों का खेल हो जिस छोर पे
हमजोली क्या, वहां बन पायें
विश्व-हृदय-सागर में रागरागिनियाँ जाल फैलाएँ ।
तेरे सुर-ही-सुर में, सुर जो मिले ॥

स्वरलिपि

	नि	सां	रे		॥
ध नि II	नि - सां	- नि -	सा - -	- - -	- - -
"मे रा"	दि न ढ	ल जा S	ए S S	S S S	S S S
	सां रे सा	- सं -	ध - -	ध ध -	- - -
	सा S झ	हो आ S	ए S S	ते रे S	S S S
	ध - सानि	-ध प -म	म	ग - -	- - -
	सु र हीS	SS सु SR	में	S S	S S S
	म - ध	धा नि- -	रेसां - -	निध पा धा	- - -
	सु र S	मि लाS S	एँ S S S	"मेS रा SS"	- - -
{	सा -गं गं	- गं -	गं - -	- - -	- - -
	इ Sक ता	S रा S	की S S	S S S	S S S
	गं - गंमंपं	- मं -गं	रेसा -नि -	सां - -	- - -
	ए क ताSS	S S रS	मेंS SS S	S S S	S S S
	सां	- सां नि	सां गं -	- - -	- - -
	नि - सां	- सां नि	सां गं -	- - -	- - -
	द र दै	भ री S	धु न S	S S S	S S S
	रे	सं			
	रे सां	रेसां नि -	सां - -	- - -	- - -
	स ध न	SS प S	ए S S	S S S	S S S
	निरे - रेसां	- सां नि नि	ध - -	- - -	- - -
	तेS S रेS	S पा स	में S S	S S S	S S S

ध	-	संनि	ध	पम	-	म	ग	-	ग	-	-	-
बा	S	SS	र	ही	S	बा	S	र	S	S	S	S
सा	-	ग	-	ग	-	ग	म	-	-	-	-	-
हा	S	S	र	मा	S	नी	S	S	S	S	S	S
मसा	-	ग	-	ग	-	म	-	-	म	म	-ग	
इस	खे	S	S	ल	S	में	S	S	“मे	रे	SS”	
म	-	ध	-	ध	-	नि	-	-	-	-	-	-
पा	स	है	S	बं	S	धा	S	S	S	S	S	S
नि	-	धनि	-	सां	नि-	नि	ध	-	-	नि	-	-
इ	स	सुऽ	S	र	काऽ	ता	S	S	S	S	S	र
नि	-	सा	-	रे	-	सां	-	-	-	-	-	-
प	-	पसां	S	नी	S	तो	S	S	S	S	S	S
वो	S	बंऽ	S	सां		रे			सां			
सा			सां	सा	नि-	सा	-	-	(नि	ध	प	-मग)}
प	-	धप	S	र	व	जे	S	S	मे	SS	रेऽ	
दू	S	SS	S	नि		नि						
सां				नि	-	सां	-	-	-	-	-	-
नि	-	नि	-	का	S	खे	S	S	ल	S	हो	
गी	S	तों	S	मं	ग	रे	-	-	सां	-	-	
सां	मं	मं	मं	ग	रे	रेसां	नि	-	सां	-	-	
जि	स	छो	S	म	S	पेऽ	S	S	S	S	S	
म	-	ध	-	ध	-	सां	नि	-	धप	ध	-	
हम	जो	S	ली	S	क्या	S	S	क	हांऽ	S	S	

नि	-रे	सां	-	नि	-	नि	-	-	-	-
ब	S	न	S	पा	S	ध	-	-	S	S S
सा	गं	गं	-	गं	-	गं	-	-	-	-
वि	श्व	S	S	ह	S	द	य	S	S	S S
गं	-	गं	रे	गं	-	गं	-	-	-गं	- रे
सा	S	S	ग	र	S	मं	-	-	S	S S
रे	-	रे	गं	रे	-	सां	-	-	सां	-
रा	ग	रा	S	गि	S	नि	-	-	S	S S
सां	रे	सां	-	सां	-	ध	-	-	ध	ध -
नि	-रे	सां	-	नि	-	ये	S	S	ते	रे S
जा	SS	ल	फै	ला	S	ग	-	-	-	-
ध	-	सां	ध	प	म	मं	S	S	S	S S
सु	र	नि	S	सुर	S	रे	-	-	ध	नि
म	-	ही	ध	नि	-	सां	-	-	“मे	रा S
सु	र	S	मि	ला	S	एं	S	S		

|| II II

बांग्ला

आरो आरो, प्रभु, आरो आरो
 एमनि करे आमाय मारो ॥
 लुकिये थाकि, आमि पालिये बेड़ाइ !
 धरा पड़े गेछि, आर कि एड़ाइ ।
 या-किछु आछे सब काड़ो काड़ो ॥-
 एबार या करबार ता सारो सारो,
 आमि हारि किंवा तुमि हारो ।
 हाटे घाटे बाटे करि मेला,
 केवल हेसे खेले गेछे बेला
 देखि, केमने काँदाते पारो ॥

हिन्दी

अभी और प्रभु अभी और हो,
 मारो मुझे ऐसे ही- और मुझे मारो ॥
 छुपता रहूँ कभी भागता फिरूँ
 पकड़ से तेरे अब कैसे टलूँ
 जो कुछ है मेरा सब छीन लो प्रभो ॥
 अब जो करना है-सो तुरंत करो
 हार मैं मानूँ या तुम ही मानो
 हाट-बाट-घाट लगी मेला
 हँसी खेल में ही बीती बेला
 बाजी रूलाने की तुम ही धरो ॥

स्वरलिपि

म म ग
 अ भी S

II {	र	ग	ग	-	र	-	स	-	स	न	स	-
	औ	S	र	S	प्र	S	भु	S	अ	S	भी	S
										म		॥
र	-	ग	प्र	-	-	-	(म	म	ग)	ग	-	-
औ	S	र	हो	S	S	S	“अ	भी	S”	S	S	S

	र - प	- म -	प - -	- - -
	मा S रो	S मु S	झे S S	S S S
	ध - सं	- न सं	ध न ध	- प प
	रे S से	S ही S	औ S र	S मु झे
	र - ग	म - -	- - -	म म ग
	मा S S	रो S S	S S S	"अ भी S"
II	प प प	- प -	ध - ध	- न -
	छु प ता	S र S	हं S S	क भी S
	सं सं रं	- न -	सं - -	- - -
	भा S S	गता फि S	रु S S	S S S
	न - न	- न -	न - न	ध न न
	प S क	इ से S	ते S रे	S अ ब
	न - नसं	रं सं न	प - -	- - -
	कै S सेठ	S ट S	लूं S S	S S S
	प			
	सं - नसं	रं सं -	न - ध	- प प
	जो S कुठ	छ है S	मे S रा	S स ब
	र - र-	ग म -	म - -	म म ग
	छी S नते	S प्र S	भू S S	"अ भी S"
II	स - र	र र र	र र र	र र र
	अ ब जो	S क र	ना S है	S सो S

II

II

र	म	म	म	म	ग	ग	-	-	र	सा	-
तु	ऽ	र	त	क	ऽ	रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
र	-	म	-	म	-	प	-	प	न	न	ध
हा	र	में	ऽ	मा	ऽ	नू	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ
प	-	प	ध	म	-	प	-	-	-	-	-
तु	म	ही	ऽ	मा	ऽ	नो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	-	न	-	न	-	न	-	न	ध	न	त
हा	ऽ	ट	ऽ	बा	ऽ	ट	ऽ	ऽ	ऽ	धा	ट
सं	-	सं	रं	न	-	सं	-	-	-	-	-
ल	ऽ	नी	ऽ	मे	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
सं	-	नसं	रं	सं	-	स	न	ध	प	ध	-
ह	ऽ	सीऽ	ऽ	खे	ऽ	ल	ऽ	ऽ	में	ही	ऽ
धन	सं	न	-	ध	-	प	-	-	-	-	-
बीऽ	ती	ऽ	ऽ	बे	ऽ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
ध						म					
प	ध	प	-	म	-	ग	-	र	ग	स	स
बा	ऽ	जी	ऽ	रु	ऽ	ला	ऽ	ने	ऽ	की	ऽऽ
र	-	-	ग	ग	ग	म	म	-	म	म	ग
तु	म	ही	ऽ	ध	ऽ	रो	ऽ	ऽ	"अ	भी"	ऽ

II II

बांग्ला

एकि लावण्ये पूर्ण प्राण, प्राणेश हे,
 आनन्दवसंतसमागमे ॥
 विकसित प्रीतिकुसुम हे ।
 पुलकित चितकानने ॥
 जीवनलता अवनता तव चरणे ।
 हरषगीत उच्छ्वसित हे
 किरणमगन गगने ॥

हिन्दी

कैसे लावण्य भरे हो प्राण, प्राणेश हे?
 आनंद बसंत समागम है ।
 विकसित है, प्रीत-कुसुम रे !
 पुलकित चित्त कानन में ॥
 जीवन लता, अवनत, तेरे चरणों पे
 हर्ष-गीत उच्छ्वसित रे !
 किरण-मगन गगन में ॥

स्वरलिपि

(पूर्ण षड्ज रागिनी/महशूरी एकताल)

		[निसं रेंसं नि]										
II	नि	-सां	-नि	प	-	म	ग	-	ग	रे	नि	स
		ला	SS	S	व	S	ण्य	भ	रे हो	प्रा	S	ण
I - रे	ग	म	ग	ग	प	-	-	(- नि नि)	-	-	-	॥
		S प्रा S	णे	S श	हे	S	S	S	कै सा	S	S	S
	आ	-	-	म	-	रे	म	ग	-	ग	रे	सा
		S	S	नं	S	द	व	S	S	सं	S	त
	रे	-	-	सरेस	नि	नि-	सा	-	-	-	नि	नि
		S	S	माSS	S	गम	है	S	S	S	"कै	सा"
II	गं	ग	रे	मं	-	-	रें	-	रे	S	सां	नि
		वि	क सि	त	S	है	प्रो	S	त	कु	सु	म
	सां	-	-	निसं	रेंगं	-मं	मं	-	-	मं	-	रें
		S	S	SS	SS	SS	आ	S	S	नं	S	द

I [] I

गं - - ग रें सं रं - - सरेंसं नि नि- सं - - - -
 व S S | सं S त त्प S S | Sमा SS गम | है S S | S S S |
 मं मं

ग गं रें | गं - - | रें - रे | रे सं नि | सं - - | - निसं रेग | रें सस निनि |
 वि क सि त S S | प्री S त कु सु म हे S S | S SS SS | SS SS SS |
 मं मं

पप मम रे | -स रेमप निसरे | ग - - | गं ग रें | गं - - | रें - रे | रें सं नि |
 SS SS SS | SS SSS S S | S S S | वि क सि त S है | प्री S त कु सु म |

| सं नि प | म ग रे | ग ग म | -नि नि नि | I [] I
 पु ल कि | त चि त | का न न | Sमें "कै सा"
 [नर धप] [मग रे ग]

II | म प म | र - रे | ग - - | रे लि स |
 जी S S | व न ल | ता S S | अ व न |

स म
 | नि -स नि | स ग रे- | ग रे ग | म - - | }
 ता SS S | ते रे चर | णों S S | पे S S |
 स स

| ग ग रें | गं - गं | रें - रें | सरेंसां नि नि |
 ह र ष गी S त | उ छव S | सिSS त S |
 मं

| सं सं सं | निस रेंगं मं | मं - - | मं - रे | गं - - | गं रें सं | रें - - | सरेंसं नी नी- |
 रे S S | SS SS S | आ S S | नं S द | व S S | सं S त | स S S | माSS S गम |

| सं - - | - - - | गं गं रें | गं - ग | रें - रें | सरेंसं नि नि | सं - - | - निसं रेग |
 है S S | S S S | ह र ष गी S त | उ S छव | सिSS त S | रे S S | S SS SS |
 मं

| रें संसं निनि | पप मम रें | -स रेमप निसरे | गं - - | गं ग रे | गं - गं | रें - रें |
 SS SS SS | SS SS SS | SS SSS SSS | S S S | ह र ष गी S त | उ S छव |

सरेसं नि नि | स नि प | म ग रे | ग ग म | -नि नि नि | II [] II
सिSS S त | कि र ण | म ग न | ग ग न | Sमे कै सा

बांग्ला

बिपुल तरंग रे, बिपुल तरंग रे ।
सब गगन उद्धेलिया मगन करि अतीत अनागत
आलोके उज्वल जीवने चंचल एक आनंद तरंग ॥
ताइ दुलिछे दिनकर चंद्र तारा,
चमकि कांपिछे चेतना धारा,
आकुल चंचल नाचे संसार, कुहरे हृदयबिहंग ॥

हिन्दी

विपुल तरंगे रे, विपुल तरंगे रे ।
सब गगन उद्धेलित-मगन कर अतीत अनागत
ज्योति उज्वल जीवन चंचल कैसा आनंद तरंग ॥
तो ही झूमत दिनकर चंद्र तारा,
चौंकि कंपित चेतना धारा,
व्याकुल चंचल नाचे जग सारा
कुहके चित्त विहंग ॥

बांगला

ये राते मोर दुआरगुलि भांगल झड़े ।
जानि नाइ तो तुमि एले आमार घरे ॥
सब ये हये गेलो कालो, निवे गेलो दीपेर आलो,
आकाश पाने हात बाइलेम काहार तरे ?
अंधकारे रइनु पड़े स्वपन मानि ॥
झइ ये तोमार जयध्वजा ताइ कि जानि !
सकालबेला चेये देखि, दाँडिये आछ तुमि ए कि
घरभरा मोर शून्यतारइ बुकेर परे ॥

हिन्दी

जिस रात मेरे द्वार सारे दूटे आंधी से ।
जान न पाए, तुम आये थे, घर में मेरे ।
चारों ओर थी अंधियारी बुझ गई थी दीपशिखा भी,
आकाश की ओर हाथ पसारे कैसी आशा लिये ।
जान न पाये तुम आये थे घर में मेरे ।
अंधेरे में रहे पड़े माने वो सपना
आंधी है तेरी जयध्वजा मैंने न जाना ।
उषा-बेला में खुली जो आंखे चकित हुए जो तुम
खड़े दिखे ।
घर भरा मेरे सूनपन के उर-आसन घेरे
जान न पाए तुम आए थे घर में मेरे ॥

* * *

स्वरलिपि

II		सं	न	न	सं	न	सं				
रं	सं	-	न	ध	ध	पध	पध	न	ध	न	न
जिस	रा	त	मे	रे	S	द्वाS	S	र	सा	रे	S
न											
ग	-	-	म	र	-	स	-	-	-	-	-
टू	टे	S	आं	धी	S	से	S	S	S	S	S
स	स	म	म	-	म	म	गम	प	प	प	-
जा	न	न	पा	ये	S	तु	मS	Sआ	ये	थे	S
			ध			र					
प	-	ध	न	-	नरं	सं	-	नध	पध	न	-
ध	र	S	मे	S	मेS	रे	S	SS	SS	S	S
म	-	न	ध	ध	न	न	सं	-	स	रं	न
चा	रों	S	ओ	र	थी	अं	धि	S	या	SS	S
						स					
सं	-	-	-	-	स -	न	सं	-	नरं	सं	न
री	S	S	S	S	S	बु	झ	S	गS	यी	थी
न	सं	नरं	स	रं	नध	पध	न	-	-	-	-
दी	S	Sप	शि	खा	SS	भीS	S	S	S	S	S
न			न			म					
-रं	सं	-	ध	न	प	ग	-	म	र	स	-
आ	का	श	की	ओ	र	हा	थ	प	सा	रे	S
स	स	म	म	गमप	म	प	-	-	-	-	-
कै	सी	S	आ	शाSS	S	लि	ये	S	S,	S	S

II {

प	मप	ध	ध	-	ध	ध	पध	न	न	न	-
जा	नऽ	न	पा	ये	ऽ	तु	मऽ	आ	ये	थेऽ	
न	-	सं	सं	-	रे	रं	-	नध	न	-	सं
घर	ऽ	ऽ	में	ऽ	मे	रे	ऽ	ऽऽ	पध	न	-
स	-	स	स	स	र	नस	नर	र	र	र	-
अंऽ	धे	ऽ	रे	मे	ऽ	रऽ	हेऽ	ऽ	प	इ	ऽ
र	र	प	पध	मप	धप	म	ग	-	-	-	-
मा	ने	वो	सऽ	पऽ	ऽऽ	ना	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	-	सं	सं	सं	प	प	न	सं	नरं	न	सं
आं	धी	है	ते	री	ऽऽ	ज	य	ऽऽ	ध्व	जा	ऽ
नसं	नसं	रं	रं	न	ध	पध	न	-	-	-	-
मेंऽ	नेऽ	ऽ	ने	जा	ऽ	नाऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	न	ध	ध	ध	न	न	सं	-	स	रं	न
उ	पा	वे	ला	मे	ऽ	खु	ली	जो	आं	ऽऽ	ऽ
सं	-	-	-	-	-	स	सं	नरं	रं	सं	-
खे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	तुम	ही	ऽऽ	अ	हा	यों
स	सं	नरं	सं	सं	नध	पध	न	-	-	-	-
जो	सु	मऽ	ख	डे	ऽदि	खऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
न	-	सं	न	-ध	न	म	ग	-	म	र	स
रं	-	सं	-ध	न	प	ग	-	म	र	स	-
ध	र	म	रे	मे	रे	सु	ने	ऽ	पन	के	ऽ

II

}

}

स	स	म	म	गमप	म	प	प	-	-	-	-	-	-
उ	र	आ	स	नऽऽ	धे	रे	S	S	S	S	S	S	S
प	मप	ध	ध	-	ध	ध	ध	न	न	न	-	-	-
जा	नऽ	न	प	ये	S	तु	म	आ	ये	ये	S	S	S
न	-	सं	सं	न	रं	रे	-	नध	पध	न	-	-	-
ध	र	S	में	S	मे	रे	S	SS	SS	S	S	S	S

बांग्ला

एइ करेख भालो नितुरे हे, नितुरे हे एइ करेख भालो ।
 एमनि करे हृदये मोर तीव्र दहन ज्वालो ॥
 आमार ए धूप ना पोड़ले गंध किछुइ नाहि ढाले,
 आमार ए दीप ना ज्वालाले देय ना किछुइ आलो ॥
 यखन थाके अचेतने ए चित्त आमार ।
 आघात से ये परश तव, सेइ तो पुरस्कार ।
 अंधकारे मोहे लाजे चोखे तोमाय देखि ना ये,
 बजे तोलो आगुन करे आमार यत कालो ॥

हिन्दी

यही किया तूने भला नितुरे हे
 यही किया तूने भला ।
 ऐसे ही हृदय में मेरे, दारुण-दहन-दहा ॥
 धूप मेरा जले बिना सौरभ-हीन रहे बना
 दीप मेरा न जले तो फैले ना उजाला रे ॥
 खोए चेतन सोए रहे जब मेरा अंतर
 दर्दिले वो स्पर्श तेरे है वो तो पुरस्कार ॥
 अंधेरे में मोह-लाज-भरे आंखें, तुझे देखें ना री
 ब्रज-अनल से जला दो मैल ये काले मन का ॥

स्वरलिपि

	+		2		0		3						
	[प सं]												
II(सं	-	सं	न	ध	-	प	म	प	ग	स	र	
	य	ही	कि	या	तू	ने	भ	ला	S	नि	तु	र	
	ग	-	-	र	स	र	प	-	-	-	-	म	
	हे	S	S	नि	तु	र	हे	S	S	S	S	S	
	ग	म	म	ग	र	ग	र	स	-	-	-	-	
	य	ही	कि	या	तू	ने	भ	ला	S	S	S	S	

	ग	मप	प	प	प	-	म	प	-	म	ग	-
	रे	सेऽ	ऽ	ही	हि	र	दय	में	ऽ	मे	रे	ऽ
	सं	-	गं	रं	सं	-	न	ध	-	प	स	र
	दा	रु	ण	द	ह	न	द	हा	ऽ	नि	तु	र
	ग	-	-	र	स	र	र	-	-	-	-	म
	हे	ऽ	ऽ	नि	तु	र	हे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	ग	म	म	ग	र	ग	र	स	-	-	-	-
	य	ही	कि	या	तू	ने	भ	ला	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
II {	प	प	ग	प	प	ध	ध	सं	सं	सं	सं	-
	धू	ऽ	प	मे	रा	ऽ	ज	ले	ऽ	बि	ना	ऽ
	सं	-	न	ध	धन	सं	न	ध	न	ध	प	-
	सौ	र	भ	ही	ऽऽ	न	र	हे	ऽ	ब	ना	ऽ
	गं	गं	गं	रं	सं	-	सं	गं	गं	रं	सं	-
	दी	ऽ	प	मे	रा	ऽ	न	ऽ	ज	ले	तो	ऽ
	न	-	सं	न	ध	सं	न	ध	-	-	-	नध
	र	फै	ले	ऽ	ना	ऽ	उ	जा	ला	ऽ	ऽ	ऽ
II {	स	न	ध	स	स	र	ग	ग	-	ग	ग	-
	खी	ये	ऽ	वे	त	न	सो	ये	ऽ	र	हे	ऽ
	र	स	-	स	रस	र	ग	-	-	-	-	-
	जब	मे	रा	अं	ऽऽ	ऽ	तर	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

II

II [] I

प	प	-	प	प	-	म	प	-	म	ग	-		
द्व	दी	S	ले	वी	S	स्प	S	श	ते	रे	S		
ग	-	म	प	म	-	ग	-	-	-	-	-		
वो	ही	तो	पु	र	स्	का	S	S	S	S	र		
{	प	-	ग	प	प	ध	धसं	सं	-	सं	सं	-	
	अन	धे	S	रे	में	S	मो	S	ह	ला	ज	भ	री
	सं	-	न	ध	धन	सं	न	ध	न	ध	प	-	}
	आं	खे	S	तू	झे	S	दे	खे	S	ना	रे	S	
	सं	-	गं	र	सं	-	सं	गं	गं	रं	सं	-	
	ब	S	ज	अ	न	ल	से	S	ज	ला	दो	S	
	न	सं	सं	न	ध	सं	न	ध	-	-	-	नध	II [] II
	रं	सं	सं	न	ध	सं	न	ध	-	-	-	नध	II [] II
	मै	ल	ये	का	ले	S	म	न	का	S	S	रे	S

बांग्ला

आगुनेर परशमणि छोआओ प्राणे ।
 ए जीवन पुण्य करो दहन-दाने ॥
 आमार एइ देहखानि तुले धरो,
 तोमार ओइ देवालयेर प्रदीप करो
 निशिदिन आलोक-शिखा ज्वलुक गाने ॥
 आँधारेर गाये गाये परश तव ।
 सारा रात फोटाक तारा नव नव ।
 नयनेर दृष्टि हते घुचवे कालो,
 येखाने पड़बे सेथाय देखबे आलो
 व्यथा मोर उठबे ज्वले उर्ध्व-पाने ॥

हिन्दी

अग्निमयी- पारसमणि छुआ दे प्राण से -
 ये जीवन पावन हो रे, दहन दहा दे ॥
 मेरा ये तन-बदन ऊपर उठालो
 तूम अपने देवालय में दीप बना लो
 निशिदिन ज्योति-शिखा जले, गीतों में ॥
 अंधेरी काया को यों, तेरा छूना-
 सजाये नितनए तारे, सारी रैना ।
 नैनों की कालिमा यो धुल जाएगी
 जहां भी झरो, वहां ज्योति जगेगी
 व्यथा मेरे जलकर ऊपर उड़ेगी हवा में ॥

स्वरलिपि

ग | ग ग - II | ग ग ग | ग ग - | ग ग - | ग रे म |
 अग | नी म यी | पा र स | म पि S | छु आ दे प्रा S ण |
 ॥ | म

| म - म | म म - | ग - प | म ग - | - - ग |
 | से S ये | जी व न | पा व न | हो रे S | S S ये | S S ये |

ग

| ग ग ग | रे - म | ग रे - | - रे रे | रे - ग | सा - ग | रे सा - |
 | जी व न | पा व न | हो रे S | S S ये | जी व न | पा व न | हो रे S |

ध

- - सा | सा सा -प | प - प | प प - | प प म | प म प | - - - | - - -
 S S ये | जी व न | पा व न | हो रे S | द ह न | द हा S | दे S S | S S S

स रे ग- | ग ग - | II
 S S अग | नि म यी

| प | प प - II | प प - | प प - | प प म | प - म |
 | मे रा ये S | त न S | ब द न | ऊ प र | उ ठा य |

प - नी नी नी - ध ध प प प - म म ग रे - म ग - { प नी नी -
ले S तू अप ने S दे वा S लय में S दी S प बना S ले S नि श दि न

नि नि - नी नीध नी सां सांनि रें सां - नीध I
ज्यो S ति शि खा S ज ले S गी तों SS

ध
नी - } - - - सा रे ग- ग ग - II
में S S S S S अग नि म यी

स सा सा - II सा सा - सा सा सा सा - नि सरे रे - सा
अं धे री S का या S को यों S ते रा S छू SS SS ना S स

प

ग - ग ग ग - म प मग ग म ग रे - गम
जा गा ये S नित न ए ता रे SS सा री S रै SS

ग - (सा सा सा सा) } I
ना S S अं धे रो

प प प - प - प प प - प - प प - म
नै नों की S का लि S मा यो S धु ल S जा ए S

ध
पम - प नी नी नी - ध - ध प प - म - मग रे - गम ग - { प नी नी -
गी S SS ज हां भी S झ रो S व हां S ज्यो ति S जागे SS गी S व्य था मे रे

नी - नी नी नीध नी सां - रें सां - नीध I
जल क र ऊ प S र उ ईं गी ह वा SS

ध
नी - } - - - स - रे ग- ग ग - II II
में S S S S S अग नी म यी

बांग्ला

एकि ए सुन्दर शोभा ! की मुख हेरि ए !
आजि मोर घरे आइल हृदयनाथ,
प्रेम-उत्स उथलिल आजि ॥
बलो हे प्रेममय हृदयेर स्वामी,
की धन तोमारे दिब उपहार !
हृदय प्राण लहो लहो तुमि, की बलिब
याहा-किछु आछे मम सकलइ लओ हे नाथ ॥

हिन्दी

कैसी है सुन्दर शोभा ! क्या मुखछवि निहारूं ।
आज मेरे घर आए हों हृदय नाथ-
प्रेम उत्स उथले रे, आज ये ॥
बोलो हे प्रेमघन हृदय स्वामी ।
क्या धन तुझे मैं भेंट चढ़ाऊं-
हृदय प्राण हरो हरो तुम
क्या कहूँ मैं, जो कुछ है मेरा-
सकल ले-लो नाथ ॥

स्वरलिपि

[ग - र] ॥

		. II {		[ग - र]		॥			
		ग	म	ग	र	स	ध	स	र
		कै	S	सी	है	सु	नं	द	र
1	2	0	3						
ग	- - -	रग	ध	प	प	{प - ग	ग	ग	ग -
शो	S S S	SS S	भा	S	क्या	S	मु	ख	छ वि नि S
प	ग	प	प	(गे रे स रे) }	ग	रे	सा -	स -	ध स
हा	S S S	रू	S S S	रू	S S S	S S S	आ	S	जं मे
								-	र स र
								S	रे घ र
ग	ग	ग	ग	ग	ग	ग	सं	सं	ध एम
आ	ये	हैं	ह	द	य	ना	थ	प्रे	S म उS
ग			म						ध प प ग
प	-	ग	ग	ग	रे	म	ग-	I [] I	त स उ थ
ले	S	रे	S	आ	S	जा	ये		

II {	प	प	ग	प	-	ध	प	ध	सं	सं	सं	सं	सं	सं	-	सं	-
	बो	लो	हे	प्रे	S	म	घ	न	ह	द	य	SS	स्वा	S	मी	S	
		न													ध		
	सं	सं	ध	ध	सं	सं	सं	-	सं	रं	सं	न	ध	न	प	-	
	क्या	S	ध	न	तू	झे	मै	S	भें	S	ट	च	ड़ा	S	उं	S	
													प				
	ग	"प	ग	ग	-	-	-	र	र	र	ग	प	ध	ध	सं	सं	
	ह	द	य	प्रा	S	S	S	ण	ह	रा	ह	रा	तु	म	क्या	क	
	सं	सं	गं	गं	रं	रं	सं	सं	ध	ध	प	ध	प	ग	-	र	
	हं	मैं	जो	S	कु	छ	है	S	मे	रा	स	क	ल	ले	S	S	
	स	र	सर	गम	ग	-	-	म	II [] II								
	लो	S	SS	SS	ना	S	S	थ									

बांग्ला

केन चोखेर जले भिजिये दिलेम ना शुक्नो धुनो यत !
 के जानित आसबे तुमि गो अनाहूतेर मतो ॥
 पार ह्ये एसेछ मरु नाइ ये सेधाय छायातरु
 पथेर दुःख दिलेम तोमाय गो एमन भाग्यहत ॥
 आलसेते बसे छिलेम आमि आपन घरेर छाये,
 जानि नाइ ये तोमाय कत व्यथा बाजबे पाये पाये ।
 ओइ वेदना आमार बुके बेजेछिल गोपन दुखे
 दाग दियेछे मरे आमार गो गभीर हृदयक्षत ॥

हिन्दी

क्यों नयन-नीर से भिगोया नहीं, सूखे धूलिकण ॥
 कैसे जानूं आओगे तुम बुलाए बिना, मेहमान ?
 पार हो आए मरुस्थली छाया तरु, कही न मिली
 पीर-पथ में पाए, मेरे कारण मैं यो भाग्य-हीन ।
 अलसाई सी थी बैठी-हाय-रे ! अपने घर के छाहें
 जाने बिना तेरे पग-पग में, छाले वो कितन दुखारं ।
 वही वेदना दिल में मेरे चुभते रहे गोपन दुख से,
 निदारुण वो टीस दुखाये मन, घाव बना गहन ॥

स्वरलिपि

म प II क्यों S	प	सं	- ध -प धप	म प म	र ग- र
	सं	न -			
न य न	न	य	नी Sरे Sसे	भि गो S	यां SS न
	स	न	- - -	स ग ग	र ग -
हीं S S	S	S	S S S	सू खे S	धू S लि
र	ग	-	- - -	म प प	प प -
क	ण	S	S S S	कै से 0	जा नू S

	प - प	प प म	पध न -	- ध प	
	आ S S	ओ गे S	तुम S S	S बुड SS	
	प- प ध	प मग ग	ग म -	- प ध	II
	लाS ये S	बि नाS मेह	मा S S	न "कि ऊं"	
II	म प प	ग - म	प न -	न संन संरं	
	पा र हो	आ S ये	म रू S	स्थ लीS SS	
	संन सं -	- - -	संन मं गं	रं सं -	
	SS S S	S S S	छा या S	त रु S	
		सं	नि		
	न संन सरे	सं न -	सं न ध	ध- प प	
	क हींS नS	मि ली	S पी S	र पथ मे 0	
	प प -	पध प म	पध न न	- ध प	
	पा ये S	मे S रेS	काS र ण	S S S	
	प प ध	पम ग ग	ग म -	- प ध	II
	में यूं S	भाS S ग्य	ही S S	न "कि ऊं"	
II {	स स ग	र ग -	र ग -	प प -	
	आ ल सा	इ सी S	थी S S	बै ठी S	
	मर मग र	सन - -	स स ग	र- ग -	
	हा SS य	रेS S S	अप ने S	घर के S	
	गर मग र	स - -	स प -	प प प	
	छाँS SS S	हैं S S	जाS ने S	बि ना S	

प	सं	सं	न	ध	नध	संन	ध	प	-	-	-	-
ते	रे	S		प	गS	पग	में	S	S	S	S	S
प	सा	नि		ध	प	धप	मग	रेग	-	म-	-	-
छा	ले	वो		कि	त	नेदु	खा	SS	S	येS	S	S
[धसं नध प]												
{	म	प	प	मग	ग	म	प-	न	-	न	सं	-
	व	ही	वे	दS	ना	S	दिल	में	S	मे	रे	S
	संन	सं	ग	मं	ग	रंसं	सं	सं	नरं	सं-	न	-
	चुभ	ते	S	र	हे	SS	गो	प	Sन	दुख	में	S
	नि						म					
	-सं	-न	न	ध	प	प	प	-प	प-	पध	प	म
	निS	दा	S	रुण	वा	S	टी	Sस	दु	खाS	ये	S
	पध	न	-	-	ध	प	प	प	ध	प	मग	रग
	मन	S	S	S	S	S	घा	S	व	ब	नाS	SS
	ग	म-	-	-	प	ध	II II					
	ग	हन	S	S	"कि	ऊं"						

बांग्ला

आनंदधारा बहिछे भुवने,
दिनरजनी कत अमृतरस उथलि याय अनंत गगने ॥
पान करे रवि शशी अंजलि भरिया
सदा दीप्त रहे अक्षय ज्योति ।
नित्य पूर्ण धरा जीवने किरणे ॥
बसिया आछ केन आपन-मने,
स्वार्थनिमगन की कारणे ?
चारि दिके देखो चाहि हृदय प्रसारि,
क्षुद्र दुःख सब तुच्छ मानि
प्रेम भरिया लहो शून्य जीवने ॥

हिन्दी

आनंद धारा बहे रे जग में
दिवस-रजनी कैसो अमृत रस
उथलि जाए अनंत नभ में ॥
पान करें रवि-शशी अंजली भर-भर
सदा ज्योति जले, अक्षय ज्योति
नित्य पूर्ण धरा जीवन प्रकाशे ॥
बैठे अपने मन क्यों सुध बुध हारे
स्वार्थनिमगन किस कारण रे?
खोलो आंखे चहूँ- दिशि हृदय विस्तारो
तनिक दुख सभी तुच्छ मानों
प्रेमप्रीत भरो सूने जीवन में ॥

स्वरलिपि (दक्षिण भारतीय राग पर आधारित)

	+	2	0	3
	[म]			स ॥
II	स स न र आ नं S द	सन रन ध न धाS SS रा S	स स म ग व हे रे ज	म प्र म ग ग में आ S
	म स न र S नं S द	स नरन ध न ध SSS रा S	स स म ग व हे र ज	म प्र म ग ग में S S
	म स न र S दि व स	स स न ध र ज नी S	न ध ध न S कै सो अ	स स म म मृ त र स
	म म म म उ थ ली जा	- म ग - S ये अ S	मध नसं सन नध नS SS नS नS	धम मग मग मग ॥ ॥ भS मेंS आS SS
	[ध]			
म - II {	म - म म S S पा न क रे	म म ग ग र वि श शी	म ध ध ध अं S ज ली	न न सं सं भ र भ र

	न न - सं स दा S ज्यो	- सं सं सं S ति ज ले	सर स न ध अS S क्ष य	धन धनसं न ध } ज्यो SSS त S
	ध म म म नि S त्य पू	- म म म S र्ण ध रा	म ग म म म जी व न प्रS	"ग मग मग मग I [] I का शेS आS SS
म-II SS	स स स स बै S ठे अ	म म म म- प ने म क्यो	म - म म सु थ बु ध	म - मग - हा S रेS S ग
	ग म म ध स्वा S र्थ नि [ध]	ध मधन न नध म SSS ग नऽ	ध म म म कि स का S	मग मग म स } रS ऽण रे S
{	म म म म म खो लो आं खे च	म म ग ग हं दि शि ह	ध ध ध न द य वि स्ता	- सं - S रो S
	न - न सं त नि क दु	- सं सं सं S ख स ब	सर सं न ध तुS S S छ	धन धनसं न ध माS SSS नो S
	ध म म म प्रे S म प्री	म म म म S ति भ रो	म ग म म म सू S ने जीS	म ग मग मग मग II [] II व नऽ मेS SS

बांग्ला

आमार मुक्ति आलोय आलोय एइ आकाशे,
 आमार मुक्ति धुलाय धुलाय घासे घासे ॥
 देहमनेर सुदूर पारे हारिये फेलि आपनारे,
 गानेर सुरे आमार मुक्ति ऊर्ध्वे भासे ॥
 आमार मुक्ति सर्वजनेर मनेर माइ,
 दुःख-विपद-तुच्छ-करा कठिन काजे ।
 विश्वघातार यज्ञशाला, आत्महोमेर वह्निज्वाला
 जीवन येन दिइ आहुति मुक्ति-आशे ॥

हिन्दी

मेरी मुक्ति आलोक धारा में, इसी आकाशतले ।
 मेरी मुक्ति धूलिकणों में तृण-तृणों में इसी आकाश तले
 देह-मन से कहीं दूर जा, अपनापन यों खो जाए
 गीतों के सुरों में मेरी मुक्ति नभ में लहरे इसी आकाश तले ॥
 मुक्त मैं हूँ जग जनों के प्राण-मन में,
 वेदना-विपद भुला दे यों कठिन कामों में ।
 विश्वंभर की यज्ञशाला-आत्माहुति की वह्निज्वाला
 जीवन अपना होम दूँ मैं, मुक्ति आस में इसी आकाश तले ॥

स्वरलिपि (मिश्र केदार/ तेवरा ताल)

	ध								॥					
II {	पध	प	-	म	-	र	-	स	सम	-	मग	पम	प	-
	मेऽ	री	ऽ	मु	ऽ	क्ति	ऽ	आ	लोऽ	क	धाऽ	राऽ	में	ऽ
(प	सं	सं	धन	-	धप	-)	स	स	-	र	-	र	-
	इ	सी	आ	काऽ	श	तऽ	ले	मे	री	ऽ	मु	ऽ	क्ति	ऽ
	र	ग	र	ग	-	ग	म	म	प	ध	मप	-	मग	म
	धु	ली	ऽ	क	णों	मे	ऽ	तृ	ण	ऽ	तृऽ	णों	मेंऽ	ऽ

II	म इ	सं सी	सं आ	धन - काऽ श	धप - तऽ ले	II							
II {	प दे	ध ऽ	प ह	पन मऽ	ध न	न - से	सं क	सं ही	- ऽ	सं दू	न र	रसं जाऽ	- ऽ
	सं अ	निसं पऽ	ध ना	सं प	ध न	नरं योऽ	सं खो	सं ऽ	- ऽ	नसं जाऽ	ध ये	प ऽ	- ऽ
	संगं गीऽ	ग तों	- के	रं स	- रों	सं में	नरं मेऽ	सं री	- ऽ	ध मु	- क्	प ति	- ऽ
	स न	म भ	म मे	मग लऽ	पम हऽ	प रे	प ऽ	सं इ	सं सी	सं आ	धन काऽ	धप श तऽ	- ले
II {	स मु	स ऽ	- क्त	र मैं	- ऽ	र हैं	- ऽ	र ज	गर गऽ	ग ज	म नों	- ऽ	प के
	म प्रा	प ऽ	मध ऽण	ध म	- न	म में	- ऽ	गं वे	- द	गं ना	गं वि	- ऽ	गं प
	गंमं भुऽ	- ला	मं ऽ	रं दे	- ऽ	सं यों	- ऽ	सम कऽ	म ठि	- न	म का	ग मों	म में
{	प वि	ध श्व	प म्	न भ	ध र	न की	- ऽ	सं य	- ऽ	सं ज्ञ	सं शा	न ऽ	सं ला
	सं आ	- ऽ	ध त्मा	सं हु	- ति	सं की	रं ऽ	सं व	- ऽ	न हि	नसं ज्वाऽ	- ऽ	ध ला
													प ऽ

संग	गं	-	रं	-	सं	न	स	गं	गं	रं	-	सं	-
जीऽ	व	न	अ	प	ना	ऽ	हो	ऽ	म	दूं	ऽ	मैं	ऽ
स	म	म	मग	पम	प	-	प	सं	सं	धन	-	धप	-
मु	क्	ति	आऽ	सऽ	मैं	ऽ	इ	सी	आ	काऽ	श	तऽ	ले

II II

* * *

बांग्ला

पिनाकेते लागे टंकार
 वसुंधरार पंजरतले कंपन जागे शंकार ॥
 आकाशेते घोरे धुर्णि सृष्टि बाँध चूर्णि,
 बज्रभीषण गर्जनरव प्रलयेर जयडंकार ॥
 स्वर्ग उठिछे क्रंदि, सुरपरिषद बंदी
 तिमिरगहन दुःसह राते उठे शृंखलझंकार ।
 दानवदंभ तर्जि रुद्र उठील गर्जि
 लंडभंड लूटिल धुलाय अश्रुभेदी अहंकार ॥

हिन्दी

पिनाक निनादे-टंकारं, वसुंधरा की पंजरतल पे
 सिहर जागे शंका... ओ... हो... ॥
 नभ मे ये बवंडर, चोटी सृष्टि की धर
 बज्रभीषण गरजन-रव, प्रलय की जयडंका ॥ अहा...
 स्वर्ग रो पड़े सुरपरिषद- बन्दे
 तिमिरगहन असहन राति, उठे जंजीर झंकार ।
 दानवदर्प दहाड़े रुद्र- गहन-गरजे ॥
 लोट-पोट धूलिधूसर अश्रुभेदी अहंकार ओहो ॥

स्वरलिपि

	ग	ग							॥			
II	म	म	र	र	स	स	र	प	म	ग	-	-
	पि	ना	क	नि	ना	दे	टं	ऽ	का	ऽ	ऽ	र
	ग										स	
	म	म	-	र	स	-	र	-	ग	रे	न	-
	व	सुं	ऽ	ध	श	की	पं	ऽ	ज	र	त	ल
	स	-	-	-	-	-	संगं	-	गं	गं	गं	गं
	पे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	शिऽ	ह	र	ऽ	जा	गे
	गंमं	-	रं	सं	-	-	म	प	सं	न	सं	रं
	शंऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
	ना	सं	-	म	ग	-	II					
	हो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ						
II	म	प	नप	नप	न	न	न	-	सं	-	-	-
	न	भ	मैऽ	ऽऽ	ये	ब	वंऽ	ऽ	इर	ऽ	ऽ	ऽ
	म	-	प	प	नप	न	न	-	सं-	-	-	-
	चो	ऽ	टी	सृ	ऽऽ	ष्ट	की	ऽ	धर	ऽ	ऽ	ऽ
	म	प	प	प	प	पम	प	न	नध	नध	धन	प
	ब	ज	ऽ	भी	ष	णऽ	ग	र	जऽ	नऽ	रऽ	व
	प											
	ग	ग	ग	ग	ग	ग	रग	मं	रं	-	स	-
	प्र	ल	य	की	ज	य	इंऽ	ऽ	का	ऽ	ऽ	ऽ
	म	प	सं	न	सं	रं	न	सं	-	म	ग	-
	अ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

II

II	म	-	प	प	प	प	म	म	न	-	-
	स्व	S	र्ग	रो	S	प	इ	S	S	S	S
	ध	न	ध	न	ध	प	पध	म	प	-	-
	सु	र	प	रि	ष	ढ	वंS	S	दे	S	S
	म	प	पम	मन	न	न	ध	-	न	ध	प
	ति	मि	रS	गS	ह	न	अ	स	ह	न	रा
	प	-	म	ग	-	-	ग	ग	गम	-	र
	ति	S	S	S	S	S	उ	ठे	जंS	S	जी
	र	-	स	-	-	-	म	प	प	पन	प
	इं	S	का	र	S	S	दा	न	व	ढS	S
	न	-	सं	-	-	-	म	-	प	प	नप
	ढ	हा	इ	S	S	S	रू	S	द्ध	ग	हS
	न	-	सं	-	-	-	सन	-	न	न	-
	ग	र	जे	S	S	S	लोS	S	ट	पो	S
	ध	न	न	न	ध	प	पगं	-	गं	गं	गं
	धू	S	रि	धू	स	र	अS	S	प्र	भे	दी
	गं	-	रं	-	सं	-	म	प	सं	नि	सं
	हं	S	का	S	र	S	ओ	S	S	S	S
	न	सं	-	म	ग	-	II II				
	हो	S	S	S	S	S					

बांग्ला

तोमारि गेहे पालिछ स्नेहे, तुमि धन्य धन्य हे ।
 आमार प्राण तोमारि दान, तुमि धन्य धन्य हे ॥
 पितार बक्षे रेखेछ मोरे, जनम दियोछ जननी क्रोडे,
 बेधेछ सखार प्रणयडोरे, तुमि धन्य धन्य हे ॥
 तोमार विशाल विपुल भुवन, करेछ आमार नयनलोभन
 नदी गिरि वन सरसशोभन, तुमि धन्य धन्य हे ॥
 हृदये-बाहिरि स्वदेशे-विदेशे युगे-युगांते निमेषे-निमेषे
 जनमे-मरणे शोके-आनंदे तुमि धन्य धन्य हे ॥

हिन्दी

घर में तेरे पला हूं स्नेह से तू है प्रभु धन्य तू ॥
 मेरा ये प्राण तेरा ही दान तू है प्रभु धन्य तू ॥
 तात हिय में संजोया मुझे तू, गोदी में माँ की रहे जन्म से
 जनम-मरण सुख-दुख में तू है प्रभु धन्य तू ॥
 बांध सखा-संग बंधन प्रेम के तू है प्रभु, धन्य तू ॥
 विपुल विशाल, तेरा ये भुवन लुभाए सदा ही मरे-दो नयन
 नदी गिरि-वन, सरस शोभन तू है प्रभु धन्य तू ॥
 अंदर-बाहर स्वदेश विदेश युग-युगांतर निमेष-निमेष
 जनम-मरण सुख-दुख में तू है प्रभु-धन्य तू ॥

स्वरलिपि

	+	2	0	3
II {	स स स	ग - ग	म म म	प - ध
	ध र मे	ते ऽ रे	प ला हं	स्ने ह से
				॥
	सं - न	ध - म	प ध म	ग - - } तू ऽ है प्र भु ऽ ध ऽ न्य तू ऽ ऽ
	न न न	न - न	सं सं सं	प - ध
	मे रा ये	प्रा ऽ ण	ते रा ही	दा ऽ न

	सं - न तू S है	ध - म प्र भु S	प ध म ध S न्य	ग - - तू S S	II
II	म प प ता S त	न - न हि य में	न सं सं सं जो या	सं - सं मु झे तू	
	न न न गो दी में	सं सं सं माँ S की	सं सं न र है ज	ध- - प नम् से S	}
	ध ध धप बां धे सS	म गर ग खा सं ग	म म म बं ध न	प - ध प्रे म के	
	सं - न तू S ही	ध - म प्र भु S	प थ म ध S न्य	ग - - तू S S	II
II	म प प वि पु ल	न न न वि शा ल	न सं सं ते रा येS	र सं सं भु व न	
	न न न लु भा ये	सं सं सं स दा ही	सं सं न मे रेS दो	ध ध प न य न	}
	ध ध धप न दी गिS	म गर ग रि वS न	म म म स र स	प प ध शो भ न	
	सं - न तू S है	ध - म प्र भु S	प ध म ध S न्य	ग - - तू S S	II
II	म प प अ न्द र	न न न बा ह र	न सं सं स्व दे शS	रं सं सं वि दे श	

न	न	न	ग	ऽ	न	ध	ऽध	प	}		
यु	ग	यु	गां	त	र	नि	मेऽ	ष		नि	मे
ध	ध	धप	म	गर	ग	म	प	म	प	-	ध
ज	न	मऽ	म	रऽ	णं	सु	ख	दु	ख	में	ऽ
सं	-	न	ध	-	म	प	ध	म	ग	-	-
तू	ऽ	है	प्र	भु	ऽ	ध	ऽ	न्य	तू	ऽ	ऽ

II II

बांग्ला

सखी, आँधारे एकेला घरे मन माने ना ।
 किसेरइ पियासे कोथा ये याबे से पथ जाने ना ॥
 झरोझरो नीरि, निबिड तिमिरे, सजल समीरे गो
 येन कार वाणी कभु काने आने कभु आने ना ॥

हिन्दी

सखी अंधेर, अकेले घर में मन ये माने ना ॥
 कैसी है प्यास रे कहां जाए मन, राह जाने ना ॥
 झर-झर नीरि
 सघन तमीरि, सजल समीरण हो !
 जैसे कोई वाणी कभी सुने मन, कभी सुने ना ॥

स्वरलिपि

II म - मगरेग - { ग | म नि - ध, धनिसां - निध
 | स ऽ खीऽऽ ऽ अं | धे ऽ ऽ रा अऽऽ ऽ केऽ

नि - धप पधनोध पम प मग- गमपध सा निध पध गम नी - नोधपमप
 ले ऽ घऽ रऽऽऽ ऽऽ में ऽऽऽ मन ऽऽ ऽ येऽ ऽमा नेना ऽऽ ऽऽऽऽ

प नी - नीसां - गरेगं - सांनि - धनि सांनि धानि - ध प मग रेग ग ग म
 म न ऽ माने ऽ ऽऽऽ ऽ ना ऽ ऽ ऽऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽ स खी ऽऽ ऽऽ ऽ ऽ अं

म नो - ध धनि सां - निध	नि - धप पधनोध पम प- मग
धे S S रा अ S S S के S	ले S SS घर SS SS में S SS

गम पध सां - निध ध	गमनो नि - ध प म प
मन SS S S ये S S	मानेना जो S S S S S

II प प धनि सनि निनि नि धप मप	प नि सा - सां सां सां- नसारैसांनिसां
कै सी है S SS प्यास रे SS SS	क हां जा S ये मन SS S S S S S S

प नी - नि सां गरैगं -	सं नि धनि संनि धनि - ध प म ग रे ग
रा S ह जा ने SSS S	ना S SS SS SS सखी SSSS

ग म नो - ध धनिसां नि ध	नि - धप पध नो ध पम प- म ग-
अं धे S S रा अ S S के S	ले S SS घर S S SS में S S S S

गमपध सां - निध पध गमनो नि नोध पमप	II
मन SS S S ये S SS माने S ना SS SSS	

ग - रेसां स ग - ग - म - ग म प	ध प ध नो ध - नि नि नि नि नि सां - रे -
झ S र S झ र S नी S रे S ग ह न	त मी S S रे S स ज ल स मी र ण S S

ध सां - निध पध म ग }	म
हो S S SS SS झ र }	प प पध निसां नि - नि नि धप
	जै से को S S S ई S वा णी SS

प नी नि सां सां - निसारैसां (नी धप) }	प नी - नि सा गरैगं -
क भी सु ने म न SSSS S SS	क भी S सु ने SSS S

सां नि नि सां रे सां रे सा नि सां	ध प म ग रे ग ग
ना ङ S S S S S S S S	स खी S S S S अं

म नो - ध धनि सां निध धे S S रा अSS S केS	नि - धप पधनीध पम प- मग - ले S SS घर SS SS मेंS S S S
---	---

गम पध सं - निध ध ग मनी- नी ध प म II II मन SS S S Sये S मा लेनाS S S S S	
--	--

(स्व. कणिका बनर्जी की स्मृति में उनकी गायकी के अनुसार स्वरलिपि रचा गया है।)

बांग्ला

आज ज्योत्सनाराते सबाइ गेछे वने
 बसंतेर एइ माताल समीरणे ॥
 याव ना गो, याव ना ये रहनु पड़े घरेर माझे
 एइ निरालाय रब आपन कोणे।
 याव ना एइ माताल समीरणे ॥
 आमार ए घर बहु यतन करे
 धुते हबे मुछते हबे मोरे ॥
 आमारे ये जागते हबे की जानि से आसबे कबे,
 यदि आमाय पड़े ताहार मने
 बसंतेर एइ माताल समीरणे ॥

हिन्दी

चांदनी रात है, सभी चल दिये बन को, आज।
 बसंती ये मत्त पवन संग, आज ॥
 न जाऊंगी, घर में, ही, रहूँ चुप मैं
 निर्जन में, खोई अपने मन में,
 न जाऊंगी मत्त पवन संग, आज ॥
 मेरा ये घर बड़ी जतन धर
 धोना होगा करना होगा साफ
 मुझे ये रात जागना है
 न जाने कब वो आ जाएं, यदि याद आ जाये
 यदि मेरी याद उनको सताये
 वसंती ये मत्त पवन संग, आज ॥

स्वरलिपि

गं	प ध प
नि - II सं गं रें सां - आज S चां द नी रात S	नि - म प - म - ग - है S स भी S च ल दि ए
॥ प	
म प - नि - - - वन को S आ S S ज	सां सां - सां सां सां रें ब सं S ती S ये S

II	सां	रें	-	सां	-	रें	-	रे	सा	नि	प	नि	-	-	-	II
	म	S	स्त	प	S	व	न	सां	ग	S	नि	आ	S	S	ज	
	ध	-	-	नि	-	-	-	निसां	रेसां	नि	ध	प	-	-	-	
	प	-	-	जा	S	S	S	ऊं	SS	SS	गी	S	S	S	S	
	न	S	S	नि	-	नि	सां	सां	सां	-	सां	नि	सां	-	-	
	प	प	-	ऊं	S	गी	S	न	जा	S	ऊं	S	गी	S	S	
	न	जा	S	सां	नि	-	सां	-	नि	नि	प	प	म	ध	-	
	प	सां	-	नि	-	सां	-	नि	नि	प	प	म	प	ध	-	
	घ	र	S	में	S	ही	S	र	हं	S	चु	प	प	में	S	
	म	-	ग	रे	ग	-रे	-म	ग	-	-	-	-	-	-	-	
नि	र	S	ज	नS	में	S	S	S	S	S	S	S	S	S		
ग	-	प	प	म	ध	-	प	प	-	प	-	नि	-	-		
प	-	प	ज	न	में	S	खा	इ	S	अ	प	प	ने	S		
नि	र	S	-	-	-	-	सां	सां	-	सं	-	सां	रें	-		
प-	नि	-	S	S	S	S	न	जा	-	ऊं	S	गी	S	S		
मन	में	S	-	-	-	-	रे	सां	नि	प	नि	-	-	-		
सां	रें	-	सां	नि	-	रे	-	सां	ग	S	आ	S	S	ज		
नि	स्त	S	प	S	व	न	सां	ग	-	ग	-म	रे	-म	-		
म	स्त	S	सा	नि	-	नि	-	सा	ग	-	ग	-म	रे	-म		
सा	सा	सा	जे	S	घ	र	ब	डी	S	ज	S	त	न	न		
मे	रा	S	-	-	-	-	ग	र	-	म	म	ग	-रेस	-		
म	ग	-	-	-	-	-	रे	ग	-म	म	म	ग	-रेस	-		
ध	रे	S	S	S	S	S	धी	ना	S	हो	S	गा	SS	SS		

स	-	ग	ग	म	रे	म	म	ग	-	-	-	-	-
क	र	ना	हो	S	गा	S	स	फा	S	ई	S	S	S
प	प	-	प	-	नि	सा	सां	-	सां	सां	-नि	सां	-
मु	झे	S	ये	S	रा	त	जा	S	ग	ना	SS	है	S
प	सां	-	सां	नि	रे	सां	नि	नि	-	प	प	प्र	ध
न	जा	S	ने	S	क	ब	वो	आ	S	जा	S	एं	S
म	ग	-	रे	ग	-रे	-म	ग	-	-	-	-	-	-
य	दि	S	या	S	S	द	आ	ए	S	S	S	S	S
ग	प	-	प	म	ध	प	प	नि	म	म	-	-	नि
य	दि	S	मे	S	री	S	या	S	द	उ	न	को	स
नि	प	नि	-	-	-	-	नि	सां	-	सां	-	सां	-
ता	ए	S	S	S	S	S	ब	सां	S	ती	S	ये	S
सां	नि	रे	-	सां	नि	-	रे	-	सां	नि	प	नि	-
म	स्त	S	प	S	व	न	सां	नि	प	नि	-	-	-
							सं	ग	S	आ	S	S	ज

II II

बागला

जागरणे जाय विभावरी

आँखि हते घुम निल हरि, मरि मरि ॥

यार लागि फिरि एका एका, आँखि पिपासित, नाहि देखा,

तारि बाँशि ओगो तारि बाँशि, तारि बाँशि बाजे हिया भरि, मरि मरि ।

वाणी नाहि, तबु काने काने, की ये शुनि ताहा केबा जाने ।

एइ हियाभरा वेदनाते, वारिछलोछलो आँखिपाते,

छाया दोले तारि छाया दोले छाया दोले दिवानिशि धरि मरि मरि ॥

हिन्दी

जाग बिताई मैंने विभावरी

पलकों की-नींद मेरी गई रे चोरी, नींद गई रे चोरी-

हाय मैं मरी ॥

जिनके लिए फिरू एककी, नहीं दिखे हैं, आंखे प्यासी

बंसी उसकी हाय बंसी उसीकी, बंसी बजे मेरे मन में-री

हाय मैं मरी ॥

वाणी बिना ही इन कानों में, क्या मैं सुनूं

कोई क्या वो जाने ?

है मेरा मन भरे वेदन, छलक-छलक जाए सजल नयन,

छाया दोले अब, छाया दोले छाया दोले बस दिवस निशि

हाय मैं मरी ॥

स्वरलिपि

रे				नि	रे	ध	॥	
II सा	-	ग	म	प	-	नि -धनि	सां -निरे सां नि	प - - -
जा	S	ग	वि	ता	ई	मैं Sने	वि भाS S व	री S S S
प		सं		सं			नि	
सां	-	नि	ध	नि	-ध	प -	प -ध नि ध	प - प प
प	ल	कों	की	नी	Sन्द	मे री	ग Sई रे चो	री S नीं द
प	ध	नि	ध	प	-	-	सा सा ग ग	म - - -
ग	ई	रे	चो	री	S	S S	हा य मैं म	री S S S

II

II	ध प - नि नि जि न के लि	नि - नि नि ये S फि ऋ	ध नि - सां रें ए S का S	रें सां - - - की S S S
	प -सां सां सां न हीं S दि	सां - सां रें खे S हैं सां	सां नि ध प ध आ खें S प्या	नि - - - सी S S S
	नि सां - नि नि बां S सी उसी	सा नि - ध प की S हा य	प ध नि ध बां S सी उ	प प - - सी की S S
	प -सां नि ध बां SS सी ब	नि - ध प जे S मे रे	सा सा ग व, म न मे S	म - - - री S S S
	म ग -म प प हा Sय में म	प सां - नि -ध री S S SS	II	
II	सा - नि नि वा S णी वि	सा सा ग ग ना हो इ न	ग रे - ग म का S नों S	म ग - - - में S S S
	ग प प प, क्या S में सु	म प - - - नूं S S S	प नि नि ध क्या S में सु	ध प - म ग नूं S को ई
	ग रे - ग म क्या S वो जा	ग - - - नें S S S	ध प - नि नि है S S मे	नि - नि निसां रा S म नS
	ध नि सां रें सं नि भ रे S वे	सां - - - - द्वन S S S	प सां सां सां छ ल क छ	सां - रें सां ल क जा ए
	सां नि ध प ध स ज ल न	नि नि - - य न S S	न सां सां सां - नि ध छा S या डो	नि - ध प ले S हा य

प	ध	नि	ध	प	-	-	-	प	सां	नि	ध	स	नि	-	ध	प
छ	ऽ	या	डो	ले	ऽ	ऽ	ऽ	छा	ऽ	या	डो	ले	ऽ	ब	स	
सा	सा	ग	ग	म	-	-	-	म				प				
दि	व	स	नि	शि	ऽ	ऽ	ऽ	ग	म	प	प	सां	-	नि	ध	II II
								हा	य	मैं	म	री	ऽ	ऽ	ऽ	

* * *

बांग्ला

तोमार गोपन कथाटि, सखी रेखो ना मने ॥
 शुधु आमाय, बोलो आमाय गोपने ॥
 ओगो धीर मधुर हासिनी, बोलो धीरमधुर भाषे-
 आमि काने ना शुनिब गो, शुनिब प्राणेर श्रवणे ॥
 यबे गभीर यामिनी यबे नीरव मेदिनी,
 यबे सुप्तिमगन विहंगनीइ कुसुमकानने,
 बोलो अभुजडित कंठे, बोलो कम्पितस्मित हासे
 बोलो मधुरवेदनविधुर हृदये शरमनमित नयने ॥

हिन्दी

तेरे मन में छुपी बात, सखी, रखो न छुपाये ।
 सखी बोलो, मुझे बोलो, मुझे बोलो चुपके से ॥
 ओहो धीर-मधुर-हासिनी, बोलो धीर-मधुर-भाष रे
 सुनी मैं कानों ही कानों नहीं, सुनी प्राण प्राण में ॥
 हो जब गहन-यामिनी, हो नीरव मेदिनी
 जब नींद में हों विहंगनीइ, कुसुम कानन में ।
 बोलो आंसू रूंधे कंठ में, बोलो कंपित-स्मित-हास ले
 बोलो, मधुर-वेदन व्याकुल-हिय के, शरम-नमित नयनों में ॥

स्वरलिपि

		[धनि निध -प मप मध]				॥	
प पधप II	म प -	ग मध प	मपम ग -	-	ग गम		
ते रेSS	म न में	छु पीS S	बाSS S त	S	स खीS		
	म प -	मध नि प	मध लि -	सां सां नि			
	र खो S	नS S छु	पाS ये S	ते रे S			
	ध						
	नि निध प	मप मध प	मपम ग -	-	सा सा		
	म Sन में	छुS पीS S	बाSS S त	S	स खी		
	सा रे -	- रे ग	म प -	म ग नि नि			
	बो लो S	S मु झे	बो लो S	S	बो लो		
					प		
	नि सं नि	धनसं नि प	प ध नि	प ध पधप II			
	मु झे S	चुपके S S	से S S	S "ते रेSS"			
	[मं मंगं गं]						
नि नि II	निं - गं	रे रें रगरे	सारें सारेंग रेंसां	सरेंसां नि नि			
ओ हो	धी S र	म धु रSS	हाS SSS सिS	नीS बो लो			
	नि सां सां	सां सां सां	निंसां निसारें सरेंसां	(नि नि नि) }			
	धी S र	म धु र	भा SSS षSS	रे ओ हो			
नि नि निध	प प नि	ध नि सां	ध नि - -	ध नि निध			
"सु नी मेंS"	का नो ही	का नों न	ही S S	सु नी SS			
	प प नि	ध नि ध	प - -	"ध पधप ध II			
	प्रा S ण	प्रा S ण	में S S	"ते रेSS S"			

सा सा II	{ रे	म	म	पम	पम	प	नि	-	-	-	ध	धनिध	
हो ज ब	ग	ह	ग	याऽ	SS	मि	नी	S	S	S	हो	SSS	
	प	प	नि	नि	पध	नि	ध	म	-	-	(- सा सा)		- प धप I
	नी	र	व	मे	SSS	दि	नी	S	S	S	ज ब		S ज बऽ
	प	-	ध	प	प	धप	म	प	मधप	म	पम	मग	
	नीं	S	ढ	में	हो	SS	वि	ह	गऽऽ	नी	SS	इऽ	
	ग	ग	म	म	गमप	म-	प	-	-	(- प धप)			- { नि नि I
	कु	सु	म	S	SSS	नन	में	S	S	S	ज बऽ		S बो लो
	नि	-	सां	सां	सां	सां	निस	निसरे	सरेसा	नि	नि	नि	
	आँ	S	सू	रुं	धेऽ	क	ण्	SSS	SSठ	से	बो	लो	
	सां	-	गं	रें	रें	रेंगरे	सरे	सरेगरे	सरेसां	नि}	नि	निध	
	कं	म्	पि	त	स्मि	तऽऽ	हाऽ	SSS	स लेऽऽ	से	बो	लोऽ	
	[नि	सं	सं	नि	सं]								
	प	प	नि	ध	नि	सांनि	ध	नि	ध	प	ध	प	
	म	धु	र	वे	ढ	नऽ	व्या	कु	ल	हि	य	के	
	म	प	ग	म	प	प	प	प	पध	(नि	सां	सां)	
	श	र	म	न	मि	त	न	य	नोंऽ	में	बो	ले	
	नि	सां	सां	II	II								
	ते	रे	S										

बांग्ला

तुइ फेले एसेछिस कारे, मन, मन रे आमार ।
 ताइ जनम गेल, शांति पेलि ना रे मन, मन रे आमार ॥
 ये पथ दिये चले एलि से पथ एखन भूले गेलि
 केमन करे फिरबि ताहार द्वारे मन, मन रे आमार ॥
 नदीर जले थाकि रे कान पेटे,
 काँपे रे प्राण पातार ममरिते ।
 मने हय ये पाब खुँजि फूलेर भाषा यदि बुझि
 ये पथ गेछे, संध्यातारार पारे मन, मन रे आमार ॥

हिन्दी

तू छोड़ आया है किसको , मन, मन रे मेरा ।
 ये, जन्म बीता, शांति तो भी न पाये, मन, मन रे मेरा ॥
 जिस राह से चला था तू वो राह अब भूल चला रे
 लौटेगा तू कैसे उनके द्वारे मन, मन रे मेरा ॥
 नदिया नीरे ही रहे रे ध्यान धरे कांपे ये प्राण सिहरे जब पत्ते-सारे
 ऐसा लगे मन ढूँढ़ लेगा फूलों की भाषा अगर समझे रे
 जो राह जाए साँझ की तारों के पार मन, मन रे मेरा ॥

स्वरलिपि

2:				ध	प	म	प	म	पम	गर	ग	
1: सा II	स	ध	ध	प	प	-	पध	नसं	नसंन	धप	मपम	-
तू	छो	इ	आ	या	है	S	किस	SS	कोSS	SS	मSS	न
2:	स	र	मग			॥				स		
1:	ग	र	सरग	र	स	-	-	-	-	सं	-	
	म	न	रेSS	मे	रा	S	S	S	S	ये	S	

2 :				सं	न		सं		धप	नध	प	
1 :	सं	सं	-	रं	रं	सं	न	-	न	नसं	स	न
	ज	न	म	बी	ता	S	शा	S	ति	नS	ही	S
2 :	म	प	म	पम	गर	ग	स	र	मग			
1 :	धनध	-	पधम	-	मपम	-	ग	र	सरग	र	स	-
	पाSS	ये	SSS	SS	मS	न	म	न	रेSS	मे	रा	S
	-	-	-	-	स	-	II					
	S	S	S	S	तू	S						
2 :				ध	ध	न	न	सं	-	सं		-
1 : II {	ध	ध	-	न	-	र	स	ध	-	न	सं	-
	जिस	रा	S	ह	से	S	च	ला	S	था	तू	S
2 :	ध					रं			गं			
1 :	सं	ध	-	न	सं	-	न	सं	रग	गं	रं	गरं
	वी	रा	S	ह	अ	ब	भू	S	लS	च	ला	SS
2 :							ग					
1 :	सं	-	-	-	-	-	मं	ग	-	रं	सं	-
	रे	S	S	S	S	S	लौ	टे	S	गा	तू	S
2 :				सं		ध	ध	प	नध		गर	ग
1 :	सं	रं	रसं	न	न	सन	न	-	ध	प	मपम	-
	कै	से	SS	उ	न	केS	द्धा	S	रे	S	मSन	S
2 :	स	र	ग									
1 :	ग	र	सरग	र	स	-	-	-	-	-	स	-
	म	न	रेSS	मे	रा	S	S	S	S	S	तू	S

II

2:					ग	म		
1:	II {	स स -	स स र	ग म -	म म -			
		नदि या S	नी रे S	र हे रे	ध्या S न			
2:		म पध मप	- म	गर ग -	गर र			
1:		म गमप ध	- - प	मप मग -	र ग रस			
		ध रेSS S	S S S	काँS पेS ये	ये प्रा Sण			
			मग रग र					
2:		स स र	रम गमग रग	र स -	- - -			}
1:		सि ह रे	जब पतेSS	SS सा रे	S S S			
2:			ध - न	न सं -	सं -			
1:	{	ध ध -	न - सं	सं न	न सां -			
		रे सा ल	गे S मन	दँ S इ	ले गा S			
2:		ध	रं	गं				
1:		"सं ध -	न सं -	"न सं रग	ग र गं			
		फू लो की	भा षा S	अ ग र	स म ड़ेS			
2:				गं				
1:		सं - -	- - सं }	"म गं -	रे सं -			
		रे S S	S S जो	रा ह ज	ये S S			
2:		सं	ध	ध प नध	गर ग			
1:		सं र रसं	न न संन	"न - ध	प मपम -			
		सां झ कीS	ता रो केS	पा S रS	म नSS S			
1:		स र ग						
2:		ग र सरग	र स -	- - -	- स -			II II
		म न- रेSS	में रा S	S S S	S तू S			

(सुरांतर कर के गाना हो तो ऊपर लिखे सुर का अनुसरण करना होगा)

बागला

तोरा ये या बलिस भाइ, आमार सोनार हरिण चाइ
मनोहरण चपलचरण सोनार हरिण चाइ ॥
से-ये चमके बेड़ाय, दृष्टि एड़ाय, याय ना तारे बाँधा ।
से-ये नागाल पेले पालाय ठेले, लागाय चोखे धाँदा
आमि छुटब पिछे मिछे मिछे पाइ बा नाहि पाइ
आमि आपन-मने माठे बने उधाओ हये धाइ ॥
तोरा पावार जिनिस हाटे किनिस, राखिस घरे भरे
यारे याय ना पाओआ तारि हाओआ लागल केन मोरे ।
आमार या छिल ता गेल घुचे या नेइ तार झोंके
आमार फुरोय पुंजि, भाबिस बुझि मरि तारि शोके ?
आमि आछि सुखे हास्यमुखे, दुःख आमार नाइ ।
आमि आपन मने माठे वने उधाओ हये धाइ ॥

हिन्दी

तुम जो भी कहो सुनो मैं तो स्वर्ण हिरण चाहूं
मनहरण, चपल-चरण, स्वर्ण-हिरण चाहूं ॥
वे-जो चौंक फिरे नयन-चुराए, बांध न उसे पाऊं
जो हाथ लगे तो फिसल भागे, आँखों को धोखे में डाले
मैं भागता फिरूं उसी के पीछे पाऊं उसे या न पाऊं
मैं तो अपने ही मन मैदान बन खोया-खोया सा धाऊं ॥
तुम चाहत की चीजें हाट से मोल, रख लेते घर में भर-भर
जो पाइ न जाये उसी की हवा लगी मुझे क्यों कर
मेरा जो कुछ था वो भी लुटा, जो न हो उसी फिर मैं ।
मैंने खो दी पूंजी सोचते हो तुम, मर रहा उसी दुख से
मैं तो खुशदिल हूँ हँसता फिरूं, दुख भला क्यों पाऊं
मैं तो अपने ही मन मैदान-बन, खोया-खोया धाऊं ॥

स्वरलिपि

(राग-मिश्र खमाज, ताल -दादरा)

		[निरे सां]									
नि नि -II	नि - सं	सां	नि -	प	प	-	म	ग	-		
तु म S	जो - भी	क	हो S	सु	नो	S	में	तो	S		
				रे	॥	-	-	-	-		
	म ग प	म	ग -	सा		-	-	-	-		
	स्वर Sण हि	र	ण चा	हं	S	S	S	S	S		
	सां सां -	ग	ग म	प	प	प	नि	नि	नि		
	म न S	ह	र ण	च	प	ल	च	र	ण		
	ग ग म	प	म प	प	-	-	नि	नि	-		
	स्व र ण	हि	र ण	चा	हं	S	में	तो	S		
	नि नि नि	नि	नि सां	सां	-	-	सां	सां	नि		
	स्व र ण	हि	र ण	चा	हं	S	S	में	तो		
	सा सा ग	र	सा -नि	धप	-	-	नि	नि	-		
	स्व र ण	हि	र -ण	चाS	हं	S	“तु	म	S”]]
-I- प पII	प - प	नि	नि -	निसां	-	सां	नि	नि	प		
S S वो जो	चौं S	क	फि रे S	नै	न	च	रा	ए	S		
	प प प	प	नि -	नि	-	सां	-	नि	सा		
	बां ध न	उ	से S	पा	ऊं	S	S	जी	S		
	सां सां -	सां	सां -	नि	नि	-	नि	नि	प		
	हा थ ल	गे	तो S	फि	स	ल	भा	गे	S		

प प - आं खों को	प नि - धो खा S	नि - सां डा ले S	- सं नि S मैं S
सा सं गं भा ग ता	रे रे - S फि रू	सां नि - उसी के S	प प - पी छे S
प सा नि पा ऊं उ	ध प - से या न	म ग - पा ऊं S	म ग - S मैं तो
नि नि सा अ प ने	ग ग - ही म Sन	म प प- मैं दा S	नि नि नि न व न
ग ग -म खो या SS	म प म खो या सा	प - - धा ऊं S	नि नि - S मैं तो
नि नि - स्व र ण	नि नि -सां हि र Sण	सा - - चा हं S	सा सां -नि S मैं Sतो
सां सां गं स्व र ण	रें गा - नि हि र Sण	धप - - चाS हं S प	नि नि - I[]I तु म S
-। सा सा नि II S त म S	सा सा -प चा ह तकी	प प धनि ची जे SS	म ग - मो S ल
सा- ग ग रख ले ते	म- प -धप घर में SS	म -प ग- भ SR भर	- सां नि S जो S
सां सां ग पा यी न	रें - रें जा ए S	सां नि - उ सी की	प - प ह वा S

प सा नि	ध प -	म - ग	- प प
ल गी S	मु झे S	क्यों क र	S मे रा
प - प	नि नि -	नि सा -	नि "नि -
जो S कु	छ था S	वो भी S	लु टा S
प - प	नि नि -	नि - सा	- सां नि
जो S न	हों उ सी	फिक्क S में	S में ने
सां सां -	सां सां -	नि नि -	ध नि -
खो दी S	पूँ जी S	सो च ते	हो तुम S
प प -	प नि -	नि नि सा	- सा नि
मर र हा	उ सी S	दु ख से	S में तो
सां सां गं	रे रे रे	सां सां नि	प प -
खु श दि	ल हं ख	हंस ता S	फि रू S
प सां नि	ध प -	म -ग -	म ग -
दु ख भ	ला क्यों S	पा ऊँ S	में तो S
नि नि सा	ग ग म	प प -	नि नि -
अ प ने	ही म न	में दा S	न बन S
ग ग -म	- प म	प - -	नि -
खो या S	खो या सा	धा ऊँ S	में तो S
नि नि नि	नि नि सं	सं - -	सं सं नि
स्व र ण	हिर ण	म मं S	मे तो S
सं सं गं	रे सं नि	धप प -	नि नि -
स्व र ण	हिर ण	मांS गू S	"तु म S"

II [] II

बांग्ला

आमि चिनि गो चिनि तोमारे ओगो विदेशिनी ।
 तुमि थाक सिंधुपारे ओगो विदेशिनी ॥
 तोमाय देखेछि शारदप्राते, तोमाय देखेछि माधवी राते
 तोमाय देखेछि हृदि-माझारे ओगो विदेशिनी ।
 आमि आकाशे पालिया कान शुनेछि शुनेछि तोमारि गान,
 आमि तोमारे संपेछि प्राण ओगो विदेशिनी ।
 भुवन भूमिया शेषे आमि एसेछि नूतन देशे,
 आमि अतिथि तोमारि द्वारे ओगो विदेशिनी ॥

हिन्दी

हो तुम जानी पहचानी मेरी ओहो विदेशिनी ।
 तुम सागर पार रहती हो ओहो विदेशिनी ॥
 तुम्हें देखा है शरदप्रात में, तुम्हे देखा है माधवी रात में
 तुम दीखी मेरे मन्मंदिर में ओहो विदेशिनी ॥
 मैंने गहन ध्यान से नभ में, सुनी है, सुनी है, गीत तेरे ।
 मैंने तुझे ही सौंपा प्राण- ओहो विदेशिनी ।
 दूढ़ फिरूं सारा जग मैं अब
 आ गया नए देश में-
 मैं पाहुन तेरे द्वारे ओहो विदेशिनी ॥

स्वरलिपि

		स्वरलिपि						ग					
स	रे II	ग	ग	ग-	ग	ग	ग	ग	ग	ग	रे	-	रे
हो	तुम	जा	नी	पह	चा	नी	S	मेS	SS	SS	री	S	ओ
											॥		
		रे	ग	रे	रे	प	म	ध	-	-	-	ग	म
		हो	S	वि	दे	S	शि	नी	S	S	S	तु	म
				प	सां	रें		सं	सं				
		प	-	सां	नि	रें	सं	ध-	नि	ध	प	-	स
		सा	ग	र	पा	S	र	रह	ती	S	हो	S	ओ

ग गII
तु म्हे

रे	ग	रे	रे	प	म	ग	-	-	-	स	रे-
हो	S	वि	दे	S	शि	नी	S	S	S	"हो	तुम"
ग	ग	ग	ग	ग	म	म	प	प	प	प	प
दे	खा	है	श	र	त	प्रा	S	त	त	में	तु म्हे
म	म	प	प	ध	प	प	प	प	प	ग	ग -म
दे	खा	है	मा	ध	वी	रा	S	त	त	में	तु Sम
म	ग	रेग	म	प	-	-	-	-	-	-	स स
दि	खी	SS	मे	रे	S	S	S	S	S	म	न
स	-	ग	ग	ग	म	म	-	-	-	-	स
रे	S	S	दि	S	र	में	S	S	S	S	ओ
रेग	-म	ग	रेसा	निध	नि	सा	-	-	-	-	स स
हो	S	वि	दे	SS	शि	नी	S	S	S	में	ने
स	रे	स	स	नि	ध	प	-	-	-	स	स
नि	ह	न	ध्या	Sन	से	न	भ	में	में	सु	नी है
ग	रे	रे	रे	ग	म	रे	-	-	-	ग	ग
सु	ना	है	गी	त	ते	रे	S	S	S	में	ने S
ग	म	म	म	म	म	म	-प	धप	धप	म	प
तु	झे	ही	सौं	पा	S	प्रा	SS	SS	SS	S	ण ओ
म	-	मग	ग	प	म	ग	-	-	-	-	-
हो	S	वि	दे	S	शि	नी	S	S	S	S	S

II

स	ग	ग	ग	ग	म	म-	प	-	-	प	प
दूँ	इ	फि	रूँ	सा	रा	जग	में	S	S	अ	ब
			प	ध						म	
म	म	प	म	मध	प	म	-	पम		ग	ग
आ	ग	या	न	एऽ	S	दे	S	Sश	में	S	S
			स	रे		स	स				
प	प	पसां	नि	निरे	स	ध	नि	ध		प	-
पा	हु	नऽ	ते	रेऽ	S	ढा	S	रे		S	S
प					प						
म	नि	ध	पम	ग	म	ग	-	-	-	सा	रे
हो	S	वि	देऽ	S	श	नी	S	S	S	“हो तुम”	II II

बांग्ला

चाँदर हाँसिर बांध भेंगेछे
 उछले पडे आलो ।
 ओ रजनीगंधा, तोमार गंधशुधा ढालो ॥
 पागल हाओआ बुझते नारे
 डाक पड़ेछे कोथाय तारे
 फुलेर वने यार पाशे याय तारेइ लागे भालो ॥
 नील गगनेर ललाटखानि चंदने आज माखा,
 वाणीवनेर हंसमिथुन मेलेछे आज पाखा ।
 पारिजातेर केशर नि ए धराय,
 शशी, छड़ाओ की ए ।
 इन्द्रपुरीर कोन रमणी
 वासरप्रदीप ज्वालो ॥

हिन्दी

चांद की हँसी बांध टूटे रे छलक ढली चांदनी,
 ओ रजनीगंधा हो तुम- सुरभि-सुधा छलकाओ ॥
 बावरी हवा समझे ना रे
 कौन उसे कहां पुकारे,
 फूलों के बन में जहां भी जाये
 सभी का मन मोहे हो ॥
 नील गगन के भाल देखो
 चर्चित चंदन से वाणीबन में हंस-मिथुन
 पंख है फैलाए- पारीजात केसर अंजली भर
 बिखेर रहा चंद्रा धरा पर
 इन्द्रपुर की कौन नार तुम
 वासरदीप जलाती हो ॥

स्वरलिपि

II	ध -ध -न चां Sद्र की	ध प - हं सी S	प - बां S	प पध म - ध टूट टे S
	प - - रे S S	- - - S S S	पम न छऽ ल	न ध प ध क ढ ली S
	म पधप मप चां SSS Sद्र	मग - - नीS S S	रे ङ ओ S	न ध प - र ज नी S
	म - ग गं S धा	र सा - हो तु म	र म सु र	म प प म भि सु धा S
	प- सा न छल का S	सा - न ओ S S	II	
II {	म प - बा व री	न न - ह वा S	न - सं स म शे	सरे - संन नाS S SS
	सं - - रे S S	- - - S S S	न - सं कौ S न	निरे सा - उऽ से S
	न स नर क हां SS	स - नध पु का SS	न - - रे S S	- - - S S S
	ध ध न फू लों के	ध प - व न में	प - ध ज हां भी	म प - जा ये S
	म म न स भी S	ध प ध का म न	म पधप मप मो SSS Sहे	मग - - होऽ S S

	रे न न	ध प -	म - ग	रे सा -
	ओ S र	ज नी S	गं S धा	हो तु म
	रे म म	प प म	प प सान	सा - न II
	सु र भि	सु धा S	छल का SS	ओ S S
II {	रे म म	म म प	प प -	प प -
	नी ल ग	ग न का	भा S ल	दे खो S
	पम न न	ध प ध	मप मग -	- - -
	चS S चिं	त चं S	दन सेS S	S S S
	रे रे न	ध प -	म - ग	रे सा -
	वा णी S	व न में	हं - स	मि धु न
	रे रे म	म प -	म प -	- - - }
	पं S ख	है फै S	ला ये S	S S S
{	म प -	न न -	न सा -	सरे - सनि
	पा री S	जा S त	के स र	अंS ज लिS
	सं- - -	- - -	न सां नि	सारे सां -
	भर S S	S S S	बि खे र	S हा S
	न सां नरे	सां सां नध	न - -	- - - }
	चं दा SS	ध रा SS	पर S S	S S S
	ध - न	ध प -	प - ध	-म प -
	इं S द्र	पु र की	कौ न ना	Sर तु म

म	म	न	ध	प	ध	म	पधप	मप	मग	-	-
वा	स	र	दी	प	ज	ला	SSS	तीS	होS	S	S
रे	न	न	ध	प	-	म	-	ग	रे	स	-
ओ	S	र	ज	नी	S	गं	S	धा	होS	तु	म
र	म	म	प	प	म	प	पा	संनि	सं	-	न
सु	र	भि	सु	धा	S	छल	का	S	ओ	S	S

II II

बाग्ला

बाजे करुण सुरे हाय दूरे
तब चरणतलचुंबित पंथवीणा ।
ए मम पांथचित चंचल, जानि ना की उद्देशे ॥
यूथीगंध अशांत समीरे धाय उतला उच्छ्वासे,
तेमनि चित्त उदासी रे निदारुण बिच्छेदेर निशीथे ॥

हिन्दी

बाजे करुण सुर में- हाय दूर रे-
तेरे चरणदलचुम्बित पथवीणा बाजे दूर रे ॥
य मेरा पथिक- चित्त चंचल-रे
हाय! जानूं ना कारण, दूर रे ॥
जूही सुगंध अशांत-पवन में
धाये- उतावला - उच्छ्वल ऐसे ही चित्त है उदास-रे !
निदारुण-विरह की निशा में ॥

स्वरलिपि

II	-	न	ध	पम	प	ध	न	न-	सं	-	-	-	-	न	ध	पम	
	S	ब	S	जेS	क	रु	ण	सुर	ये	S	S	S	S	S	ब	S	जेS
	प	ध	न	न	सं	-	-	-	मप	नसं	रंग	-	म	रं	रं	सं	
	क	रु	ण	सुर	में	S	S	S	हाS	SS	SS	S	य	दू	S	रे	

- न ध पम	प ध न न	सं - - -	- रं रं गं
S ब S जेS	क रु ण सु	में S S S	S ते रे च
र रं सं सं	नसं प प प	'मप ग ग र	स - - -
र ण त ल	चूS म बि त	पS थ S वी	णा S S S
- - - -	ध		
S S S S	नस पध नसं रंग	मं रं - सं	- न ध पम
S S S S	बS जेS SS SS	दू र S ये	S ब S जेS
			[पं पं]
प ध न न	सं - - -	{- ग ग र	रं गं गं रं
क रु ण सु	र S S S	S ये में रा	प थि क चि
सं न प न	सं - - -}	- - - -	सं नसं रंग रं
त च न् च	ल S S S	S S S S	जा नूS SS ना
सं - सं -	नसं रंगं गं -	मं रें - सं	- न ध पम
का S र ण	येS SS S S	S दू र रे	S ब S जेS
'प ध न न-	सं - - -	- - प प	मप - प प
क रु ण सुर	ये S S S	S S जूं हीसु	गS न् ध अ
'मप - - ग	रग म गर स	र - ग र-	स म ग म
शाS S न् त	पS S वन में	धा ये उ ताव	ला ठ च्छू S
प - - -	गं ग रं -	रं - - गं	रं सं न पन
ल S S S	ऐ से ही S	चि त S हैं	उ दा स SS
सं - - -	गं ग रं -	रं - - पं	रं सं न पन
रे S S S	ऐ से हि S	चि त S S	उ दा स SS

सं - - सं रे S S नि	नसं रंग - रं दाS SS S रु	सं - सं - ण S वि र	नसं रंग - रं S SS ह की
सं - - सं S S S नि	नसं रंग ग म शाS SS में S	- रं - स- S दूर रे SS	- न ध पम S बा S जेS
प ध न न- क रु ण सुर	सं - - - मे S S S	॥ ॥ ॥	

बांग्ला

ना, येयो ना, येयो नाको
मिलनपियासी मोरा कथा राखो, कथा राखो ॥
आजो वकुल आपनहारा हाय रे, फूल-फुटानो हय नि सारा,
साजि भरे नि पथिक ओगो, थाको ॥
चाँदिर चोखे जागे नेशा, तारा आलो गाने गंधे मेशा
देखो चेये कोन वेदनाय हाय रे
मल्लिका ओइ याय चले याय अभिमानिनी
पथिक, तारे डाको डाको ॥

हिन्दी

न जाओना नहीं जाना प्यासे हम, मिलन के तेरे,
वादा रखो वादा रखो हँ !
आज भी बकुल, अपने में, खोए, हाय रे।
अंत हुआ नहीं, फूलों को जगाना-डलिया भरी नहीं,
पथिक हो तुम रुको, रुक जाना ॥
चांद-की आँखें नशे में जागी छाई चांदनी, सुर-सुरभि में डुबी
देखो-देखो दर्द की मारी, हाय री मल्लिका भी-विदा हो चली
गुमान लिये पथिक उसको, चलो बुला लो हं ॥

(‘वसंत’ रचना से)

स्वरलिपि

II	[रं सं]		न	ध प	मग - - -	- - र स					
	सरं - न -	- - -					जा ओ	ना S S S	S S न ही		
	नाS S S	S S S					जा ओ	ना S S S	S S न ही		
	नस रग र -	ग ॥					रप - -म -	ग	म	र	र
	जाS SS ना S	ग ॥					रप - -म -	ग	ग	र	र
	प	म					ग	ग	ग	र	र
	म पम ग -	र स र ग					रप - -म -	ग	ग	र	र
	र खेS S S	हाँ S S S					रप - -म -	ग	ग	र	र
	स	न					रप - -म -	ग	ग	र	र
	ते S रे S	S S वा ढा					रप - -म -	ग	ग	र	र
II	प - पध म	प - प ध	न - सं र	न	सं	रं न सं न					
							आ S ज भी	ब कु ल अ	प ने में S	खो S ये S	
							न रं - न	नसं - - -	सं	सं	रं न सं न
							हा S S य	रेS S S S	न - - सं	न सं न रं	
							रंसंरं - न -	ध प ध -	न - - नरं	र सं	
							नाS S S S	हो S S S	फू लों S कोS	ज गा ना S	
							न ध	ध	मग - - -	र स र -	
							ध नध प ध	म - पध मप	हीS S S	रै S S S	
							ले लिS या S	भ री SS नS	र - - -	न ध	
							र - र न	-ध - संन -	- - - -	-ध नध प ध	
प S धि क	हो S तुम S	S S S S	रु क SS जा								

	ध म - पधप मप रु क जा S	मग - रस र Sना S S S	I [] I	
	[र - स -]			- - - - S S S S
II {	स - स ग चाँ S द की	ग ग र ग र प आं खों S में	प म म - र म नS S शा S	म ग र स - जा S गी S
(- - - - S S S S	- - ग - S S छा ई	ग - गम - चाँ द नीS S	- - म प S S सु र
	म प म प म - सु र भी में	म ग र मग -) डूS S बीS S	ध प - पध म दे S खोS S	प - प ध दे S खा S
	न - - सं द र द की	रं नरं न सं न माS S S री	न र - न हा S य S	नसं - - - रीS S S S
	सं न - - सं म S S लि	सं न स न र का S S S	र सरं - न - भी S S S	न ध प ध - S S S S
	न - रं रं वि द्वा S ले	रं सं सं - न - S च ली S	न ध ध नध प धप S SS गु मा	प म म पधप मप S न SSS लिS
	मग - - - ये S S S	र स र - हो S S S	र - न - प S धि क	न ध - संन - उ स कोS S
	- - - - S S S S	न ध -ध नध प ध च लोS S S	ध प म - पधप मप बु S लाSS	मग - रस र SS लोS हौS S
				II [] II

बांग्ला

ना चाहिले यारे पाओआ याय, तेयागिले आसे हाते,
दिवसे से धन हारायेछि आमि पेयेछि आँधार राते ॥
ना देखिबे तारे, परशिवे ना गो, तारि पाने प्राण मेले दिये जागो
ताराय ताराय रबे तारि वाणी, कुसुमे फुटिबे प्राते ॥
तारि लागि यत फेलेछि अश्रुजल
वीणावादिनीर शतदलदले करिछे से टलोमल ।
मोर गाने गाने पलके पलके झलसि उठिछे
झलके झलके,
शांत हाँसिर करुण आलोके भातिछे नयनपाते ॥

हिन्दी

मांगे बिन जो पा जाये मांगे बिन जो पा जाये
तजूं तो जो हाथ लगे
दिन में वो धन खोया रे मैं पा गया अंधेरी रातों में
देखे न कभी जिन्हे छूये भी नहीं रे
उसके लिए मन के द्वार खोले जागे रहे जागे
तारों ही तारों में रमी उनकी वाणी
सुबह खिली फूलों में ॥
उनके लिए जितनी बहे आंसू मेरे
वीणावादिनी के शतदलों पे बड़ी आंसू ढलकें
मेरे गीत सुरों में पल ही पल वे
झलकें हुलसि चमक झमक शांत हंसी की
करुण आभा से सुहाते चितवन में ॥

स्वरलिपि

II	म मां	प गे	प बि	प न	ध जो	नधप SSS	प पा	- S	- S	धन जाऽ	संन SS	धन SS
					॥							
	धप एऽ	- S	- S	- S	- S	म S	म मां	प गे	प वि	प न	पध जोऽ	प S
	म पा	- S	- S	पधप जाऽऽ	मप SS	- S	म ए	- S	- S	- S	- S	म S
	म त	प जूं	प तो	प जो	ध हा	पम थ	प ल	पध गेऽ	न S	- S	- S	धप SS
	प दि	ध न	सं मे	सं वो	सं धन	धप S	प खो	प S	ध S	न या	ध S	न S
	ध प रे	- S	- S	प मै	ध S	प S	म पा	प ग	प या	प अं	ध धे	प री
	मप राऽ	मग तोऽ	- में	- S	- S	म II S						
- II { S	प दे	ध खे	सं ना	सं क	नसं भीऽ	रंगं SS	रं जि	- न्हे	- S	- S	- S	प S
	नसं छूऽ	सं ये	सं भी	न न	पध हीऽ	नसं SS	न रे	- S	- S	- S	- S	धप } SS
	प उस	न के	न लि	न ये	प मन	ध के	म द्धा	प S	प र	ध खो	प ले	ध S

	मप मग -	म पध निसं	५नि ५प -	- - -
	जाऽ गोऽ ऽ	र हे ऽऽ	जा गो ऽ	ऽ ऽ ऽ
	नि नि स	सं सं सं	निसं सं सं	सं नसं रें
	ता रें की	ता रें में	र मी उज	की वाऽ ऽ
	सं रें संरंसं	नि - -	नि - सं सं	सं सं नि
	णी ऽ ऽऽऽ	ऽ ऽ ऽ	सुब ह खुऽ	खि ली फू
	ध ध -	प ग म	II	
	नि प -	ऽ ऽ ऽ		
	लों में ऽ			
-II {	स- स स	र र- र	र र ग	र प म
ऽ	उन के लि	ये जित ने	व हे ऽ	आँ सू ऽ
	म म -	- - -	ग गम म	म म -
	मे रे ऽ	ऽ ऽ ऽ	वी णाऽ वा	दि नी के
	म प प	म प		
	श त द	प म ग	ग म म	ग र गम
	म ग - -	लो पे ऽ	व ही आँ	सू ढ लऽ
	के ऽ ऽ	- - -	पध सं सं	सं सं र
	सं - -	ऽ ऽ ऽ	मेऽ रे नी	त सु रें
	में ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	नि सं सं	नि सं नि
	ध नि ध	प ध प	प ल ही	प ल वो
	छ ल कें	प ध प	म प पध	म प ग म
		हु न सि	च म कऽ	इ म क

मप	-	प	प	प	-	स	स	स	रे	रे	ग
शां	S	त	हँ	सी	की	क	रुं	ण	आ	भा	में
रे	रे	ग	रे-	रेप	प	ग	-	-	-	-	म
सु	हा	ते	चित्	वS	न	में	S	S	S	S	S

II II

बांग्ला

हे नवीना,

प्रतिदिनेर पथेर धुलाय जाय ना चेना ॥
 शुनि वाणी भासे वसंतवातासे,
 प्रथम जागरणे देखि सोनार मेधे लीना ॥
 स्वपने दाओ धरा की कौतुके भरा ।
 कोन् अलकार फूले माला साजाओ चुले,
 कोन् अजाना सूरु विजने बाजाओ वीणा ॥

हिन्दी

हे नवीन, हर एक दिन की पथ धूलि में हो
 न जाओ, पहचानी तुम हे नवीना ॥
 वाणी की इक लहर चली, बासंती हवाओं में
 पलकें खुलते ही तुम दिखी, स्वर्ण मेघलीना हो नवीना ॥
 सपने में, आयी कौतुहल बनी आई तुम, आई तुम ॥
 कौन अलकापुर की फूलों से गूंध केश सजाई
 कैसी अंजानीसी सुर में, विजन वीणा बजाई हे नवीना ॥

स्वरलिपि

II	स	-	ध	ध	-	ध	प	-	-	ध	म	-
	हे	S	S	न	S	वी	ना	S	S	S	S	S
	प	-	नि	ध	-	प	म	-	-	-	-	-
	हे	S	S	न	S	वी	ना	S	S	S	S	S

स्वरवितान/113

	नि	सां	सां	सां	रें	सं	नि	ध	नि	निध	नि	नि	ध	प	ध
	सां-	सां	सां	सां	रें	सं	नि	ध	नि	निध	नि	नि	ध	प	ध
	हर	इ	क	क	दिन	की	S	पथ	धूS	S	लि	में	S		S
	मप	ग	S	S	ध	-	-	मप	ग	-	ध	-	-	-	-
	होS	S	S	S	S	S	न	जाS	S	S	ओ	S	वह	S	
	गरे	ग	र	सा	-	रे	ग	म	मम	गरे	ग	रे	ग	रे	
	चाS	S	नी	तुम	S	S	ओ	S	SS	नS	S	वी	S		
						॥									
	सा	-	-	-	-	-	-	II							
	ना	S	S	S	S	S	S								
II	पध	ध	-	नि	सां	-	सां	रें	-	-	-	-	संनि		
	वा	णी	S	की	इ	क	ल	ह	S	र	S	चाS			
	सां	-	-	-	-	रें	सं	ध	-	ध	ग	-	गं		
	ली	S	S	S	S	वा	सं	S	S	ती	S	ह			
	ध	नि	सां	रें	गं	रें	सं	-	-	-	-	-	-	-	-
	वा	S	S	S	ओं	S	मे	S	S	S	S	S	S	S	S
	संगं	गं	रें	रें	सं	-	रें	सं	-	नि	धप	-			
	पल	के	S	खु	लते	S	ही	तु	म	दि	खीS	S			
	स	स	ग	र	ग	-	रे	ग	-	-	र	स			
	स्व	S	र्ण	में	S	घ	ली	ना	S	S	हो	S			
	स	-	-	-	ध	प	म	ग	-	-	-	र	स		
	न	S	S	वी	S	S	ना	S	S	S	S	S	S		
															II

II

ध	नि	स	स	स	नि	स	स	र	-	-	-
स	प	S	ने	मैं	S	आ	इ	S	S	S	S
स	-	स	ध	ध	प	म	म	-	-	-	-
कौ	S	तु	S	ह	ल	प	ग	S	S	S	S
स	ग	-	-	-	स	स	र	-	-	-	नि
आ	ई	S	S	तु	म	आ	ई	S	S	तु	म
स	-	-	-	-	-	प	-	ध	नि	स	र
आ	ई	S	S	S	S	कौ	S	न	अब	का	S
नि	सं	-	-	-	-	नि	सं	गं	रं	सं	रं
पुर	की	S	S	S	S	फू	लों	से	गूं	S	थ
नि	स	-	सं	-	सं	म	ध	नि	सं	गं	रें
के	S	S	श	S	स	जा	S	S	S	S	S
सं	-	-	-	-	-	सं	गं	गं	रं	सं	-
ई	S	S	S	S	S	कै	सी	अं	जा	नि	सी
रं	सं	-	न	-	न	पन	न	-	ध	प	ध
सुर	में	S	S	S	वि	जS	न	में	वी	णा	ब
मप	ग	-	-	-	-	स	र	ग	म	ग	र
जाS	ई	S	S	S	हे	न	S	S	S	वी	S
स	-	-	-	-	-						
ना	S	S	S	S	S						

III

बांगला

सेदिन दुजने दुलेछिनु बने, फूल डोरे बाँधा झुलना ।
 सेइ स्मृतिटुकू कभू क्षणे क्षणे येन जागे मने भूलो ना ॥
 सेदिन बातासे छिल तुमि जानो आमारि मनेर प्रलाप जड़ानो,
 आकाशे आकाशे आछिल छड़ानो तोमार हासिर तुलना ॥
 येते येते पथे पूर्णिमाराते चाँद उठेछिल गगने ।
 देखा हयेछिल तोमाते आमाते की जानि की महा लगने ।
 एखन आमार बेला नाहि आर, बहिब एकाकी बिरहेर भार
 बाँधिनु ये राखी पराणे तोमार से राखी खुलो ना, खुलो ना ॥

हिन्दी

वो दिन सुहाना-फूलडोर-बंधे
 झूले थे हम वन में झुलना ॥
 छोटी-मीठी वो यादें मन में जो जागे
 पल वो हम कभी भूले-ना, भूलें-ना ॥
 उस दिन हवा में, तुमने भी माना पागल-बन मेरे, मन का सामाना ।
 नीले-नीले नभ पे, हरष छा जाना, तेरी ही हँसी की तुलना ।
 भूलो ना, भूलो ना, भूलो ना ॥
 राह पे हमराही रात पूनम थी चांद चमका, नभ में
 न जाने वो कौन सी महालगन में
 हम और तुम थे मिले (जब) चांद चमकता नभ में
 अब वो बेला बीत चली भार विरह के सहूँ अकेले ।
 जो राखी बांधे मैंने प्राण संग तेरे
 वह राखी खुले ना खुले ना, भूलो ना ॥

स्वरलिपि

II {	न स ग र	ग र ग -	प प पध ५प	मप मग - -
	वो दि न सु	हा ऽ ना ऽ	फू ल डोऽ र	बंऽ धेऽ ऽ ऽ
				॥
	प प पध प-	म ग र सनि	स ग - -	- - - (रं) } I - I
	झू ले थेऽ हम	वन में झू लऽ	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

	म प - प छो टी मी ठी	प - प पम वो या दें SS	पल न न ध मन में जो S	न ध संन धप जा S गेS SS
	प ध प प प ल वो हम	म ग ग गम क भी भू ले	म - म प ना S भू ले	मप ग गर सन नाS S भूस लेS
	स ग - - ना S S S	- - - र S S S S	II	
- II { S	पसं सं - सं उ स दि न	सं न सं - ह वा S में	सं रें सं न तु म ने भी	न ध न - मा S ना S
	र ग म म- पा ग ल वन	प - प - मे S रे S	प ध न प म न का स	ध पम प - } मा SS ना S
	प न न ध नी ले नी ले	न ध न - न भ पे S	ध सं न न ह र ष छा	ध - प - जा S ना S
	प ध प म ते री ही हँ	ग ग ग गम सी की तु लS	म - म प ना S भू लो	मप म ग र नाS S भू लो
	मग - रे सन नाS S भू लोS	स ग - रे ना S S S	II	
- II { S	न न न पन रा ह पे हम	न स स - रा S ही S	स ग ग र रा Sत पू S	मग र स न नम् S थी S
	स प म ग चाँ द च म	र स सर न का S नS भ	स - - - में S S S	- - - - S S S S

म प प प न जा ने वो	प - प म कौन S सी S	पल न न ध मS हा S ल	न ध न ध ग न में S
सं न ध प ह म औ र	पध प म ग तुम थे S मि	म - - - ले S S S	- - - - S S ज ब
गम पध प म चाँS दS च म	ग रस सर न का SS नभ S	सं - - - में S S S	- - - - S S S S S
{ सं सं - सन अ ब वो वेS	सं - - - ला S S S	रं सं सं नध बी S त चS	न - - - लो S S S
ध सं न न भा S र वि	न ध न - र ह के S	ध धसं न ध स हं अ के	प - - - ले S S S
प पन न ध जो राS खी बां	न ध न न धां S मैं ने	ध सं न ध प्रा ण संग ते	प - - - रे S S S
प ध प म वो रा खी खु	ग ग ग ग ले ना खु ले	म - म प ना S भू लो	मप म ग र नाS S भू लो
म ग - र सन ना S भू लोS	स ग - र ना S S S	II II	

बांग्ला

चक्षे आमार तृष्णा ओगो,
 तृष्णा आमार वक्ष जुड़े ।
 आमि दृष्टिविहीन वैशाखी दिन,
 संतापे प्राण जाय ये पुड़े ॥
 झड़ उठेछे तस हाओयाय,
 मनके सुदूर शून्ये धाओआय
 अवगुंठण जाय ये उड़े ॥
 ये फुल कानन करत आलो
 कालो हये से शुकालो ।
 झरनारे के दिलो बाधा निष्ठुर पाषाणे बांधा
 दुःखरे शिखरचूड़े ॥

हिन्दी

नयनों में छार तृष्णा
 ओहो, तृष्णा मेरा हृदय घेरे
 मैं हूँ वर्षा विहीन, वैशाखी-दिन, संतप्त-प्राण
 जायें रे जले ।
 आंधी बहे तपती हवाएं, मन को सुदूर सुनेमें ले जाएं ।
 अब घूँघट जाए रे, उड़े रे ॥
 जो फूल कानन मे थे आलोकमय
 काले बने वो मुझयि, काले बने वो मुझयि रे हाय!
 झरने को किसने यों रोका, निष्ठुर पत्थर से बांधे-
 दुखद शिखर चढ़े ॥

स्वरलिपि

I	स	-	सा	-	सा	सा	-	-रे	-	-नि	सा	-रे	रेपा	-	-
	न	य	नों	S	में	छा	S	ये	S	SS	तृ	ष	णा	S	S
			॥												
	-	-	प	-	ध	म	-	प	-	प	प	-	-	-	-
	S	S	ओ	S	हो	तृ	ष	णा	S	में	रा	S	S	S	S
	प					ग									
	म	-	प	-ध	मप	रे	-	पा	-	-	म	-	रे	-	सा
	हि	र	द	यS	घेS	रे	S	S	S	S	न	य	नों	S	में
	सा	-	-रे	-	नि	सा	-रे	प	-	-	-	-	ध	-	नि
	छा	S	Sये	S	S	तृ	ष	णा	S	S	S	S	में	S	हं
	ध	-	नि	-	ध	नि	-	-	-	नि	ध	-सा	नि	-	ध
	व	S	र्षा	S	वि	ही	S	S	S	न	वै	SS	शा	S	खी

| प प | (ध - नि) } | - - - | सां - | नि - ध | धनि - | प - प |
 दि न | S S S | S S S | स न् | त प् त प्रा S | S S ण |

| पनि - | म - - | प - नि | नि म प | रे - | प - - | II
 जा ये रे S S | जा S ये रे S | ज ले S | S S S |

| - - - II | म - - | रे - रे | सां - | सां - प | नि - | सां प नि |
 S S S | आँ S | धी S ब हे S | त प ती ह S | वा एं ह |

| सां सां | - - - | नि - रे | सां - नि | नि - ध | नि - प |
 वा ये S S S | म S न को S सु | दू S र | सू S ने |

| प - | - - - | ग - म | - प - ध - नि | सां सां | सां - प |
 में S S S S | ले SS | SS SS SS | जा S यें S रे |

| नि - | नि - से | नि - रे | सां - सां | नि - ध | नि - प |
 S S | अ S ब धूँ SS | घ S ट जा S ये रे S उ |

| पनि - | - म - - | - ग - म | प - ध - नि | II - - - |
 डे S S | S S S | SS SS | SS SS | S S S |

II | म - | रे - रे | रे रे | सा - सा | रे प | रे - रे |
 जो S | फू ल का | न न में S थे आ S | लो S क |

| प प | - - - | म - | प - प | प - | प - प |
 म य S S S | का S | ले S ब ने S | वो S मुर |

| प - सां | सां - ध | नि ध | नि - प - | नि ध | नि - ध |
 झा SS | ये S S | का S | ले SS S | का S | ले S ब |

नि - ध | नि - प- | म प | रे - - | प - - - - |
 ने SS | बो S मुर | झा S | ये S रे | हा S | S S य |

मं - | ग - गं | मं - | रे - - | नि - सां | प - - |
 झ र | ने S को | कि स | ने S है | रो SS | का S S |

सां - | - - - | सां रे सां | सां - नि | नि - ध | धनि - ध
 S S | S S S | निS ष | तु S र | प SS | त्थS र से

धनि - | प - - | -मं - | -ग - - | म - | रे - सं |
 बाँS S | धे S S | S S | SS S | दु S | ख S द |

सां - | नि - ध- | धनि - | प - | -ग -म | -प - ध नि | II II
 शि S | ख S रS | चS S | दे S S | SS SS | SS SS S |

* * *

बांग्ला

एइ श्रावण- बेला बादल-झरा, यूथीवनेर गंधे भरा ॥
 कोन् भोला दिनेर विरहिणी, येनो तारे चिनि चिनि
 घन बनेर कोणे कोणे फेरे छायाय घोमटा परा ॥
 केन विजन बाटेर पाने ताकिये आछि के ता जाने ।
 हठात कखन अजाना से आसवे आमार द्वारेर पाशे,
 बादल साँझेर आँधार-माझे
 गान गाबे प्राण पागल करा ॥

हिन्दी

ऐसी सावन की बेला में बादल झरे,

जूही वन में सौरभ भरे ॥

किसी विसरे दिन की विरहन सी, मुझे लगे वो जानी-चिह्नी

घने वन के कोने-कोने फिरे छाया सी घूँघट ओढ़े ।

व्यों विजनबाट छैयाँ निहारूँ मैं, कौन वो जाने,

अचानक ही अंजानी कोई आये, मेरे द्वार पर ठहरे,

बदली वो सांझ रे, अधियारी घिरी-वो गीत गाए, प्राण पागल बने ॥

स्वरलिपि

		स	स									
		ऐ	सी									
II	रे	म-	म	प	सां	निरे	सांरे	नि	-	-	ध	प
	सा	वन	की	व	S	SS	लाS	S	S	S	में	S
						॥	रे	न		ध	प	
	प	ध	प	मग	रे	-	नि	नि	ध	प	म	ग
	बा	द	ल	झS	रे	S	जू	ही	S	वन	में	S
	रे	-	प	ग	म	ग	ग	म	ग	रे	सा	-
	सौ	S	S	र	भ	भ	रेS	S	S	S	ऐ	सी
II	-	-	-	-	प	प	म-	प	नि	सं-	रे	गं
	S	S	S	S	कि	सी	बिस	रे	S	दिन	की	S
	गं			गं								
	रे	रेमं	"गं	रे-	सां	-	-	-	-	-	नि	सां
	वि	रS	S	हिन	सी	S	S	S	S	S	मु	झे

II

सारे - नि	नि - -	निसा सां	निसां - सा
लगे S S	वो S S	जा नी S	चीन्ही S SS
सा नि -	ध नि -	धसा नि -	ध प -
ध ने S	वन के S	कोऽ ने S	को ने S
पध प -	म म -ग	रे- प म	म ग रेसा -
फिऽर S S	छा या सीऽ	घूऽ घट ओ	दे आ ई
- - -	- सा सा	{रे प प	म म ग
S S S	क्यों S वि	ज न S	बा ट S
रेग रे -	- - -	(रे - ग	म - पध
छैऽ याँ S	S S नि	हा S S	रूँ S SS
धा		रे प म	म - ग
प - -	- - रे	कौ न वो	जा S S
मै S S	S S S	म म नि	सां- रे गं
ग म ग	रे सा सा)	अ चा S	नक ही S
रे नेऽ S S	S क्यों S	सां रे लि	निध प -
रे गंरे ग	रे सां -	आ S ये	मे S रे S
अन जाऽ S	ना को ई	रे म म	प - ध
पध प प	मग रे -	बद ली ये	साँ S झ
द्धाऽ र पे	उह रे S	पध प प	मग रे -
सानि - -	- ध प	अँधि या	घिरी S वो
रेऽ S S	S S S		

रे प प म म ग रे रेग म ग रेसा -
गी त गा ये प्रा ण पा गल ब ने ऐ सी ॥ II II

बांग्ला

आजि झरो झरो मुखर बादरदिने ।
जानि ने, जानि ने किछुते केन ये मन लागे ना ॥
एइ चंचल सजल पवन वेगे उदध्नांत मेघे मन चाय
मन चाय ओइ बलाकार पथखानि निते चिने ॥
मेघमल्लारे सारा दिनमान बाजे झरनार गान ।
मन हारावार आजि बेला, पथ भूलिदार खेला-
मन चाय, हृदय जड़ाते कार चिर ऋणे ॥

हिन्दी

आज रिमझिम मुखरित बदरी दिन जानूं ना ।
न जाँनू, कुछ भी क्यों मन को न भाए रे ॥
ये चंचल-सजल-सतेज पवन, उन्मन ये मेघ
मन चाहे, उस वक्त पांति संग उड़ जाए ॥
मेघमल्लहार में सारा दिनमान लगे निर्झर गान, बजे निर्झर गान,
मन खोए, ऐसी बेला, राह भूलूं ऐसी लीला
मन चाहे, हृदय बांध कहीं चिरऋणी जाऊं बन ॥

स्वरलिपि

II { सा सा रे रे रे रे ग म म प -म प - (सा सा) }
रि म झि म मु ख रि त ब द री SS दि न आ ज

- - प सां सा -नि सां - सं रे
S S जा S नूं SS ना S S S

सं
ध -सां नि -ध प - ग म
ना SS जा SS नूं S S S

प - II
ये S

प	पसा	स नि	ध प	पध प	म ग	म -प	म	म	ग रे
कु	छऽ	भी क्यो	म न	कोऽ	भा ये	रे SS	रि	म	झि म
सा	सा	रे ग	म म	प म	प -	सा सा II			
मु	ख	रि त	ब द	री S	दि न	आ ज			
प -	प	प	प	प	ध	नि नि	सं	नि	सं नि
चं S	च	ल	स	ज	ल	स	ते S	ज	प
निध सां	नि	ध	प -	-	ध	-प	ध	नि	ध
मऽ न	ये S	मे S	S	S	S	SS	घ	म	न
प ध	नि ध	प -	प -	प -	प -	प	प	प	प
हे S	म न	चा हे	ये S	चं S	च ल	स	ज	ल	स
नि नि	सां नि	सां सां	सं नि	सां रे	रे	रे	रे	ग	- रे
ते S	ज प	वन S	उ न	म न	ये S	रे	मे S	S	S
सां रे	गे र	सां नि	सां -	- -	सरे	सां	नि ध	नि -	
S घ	म न	चा S	हे S	S S	म न	ध	चा S	हे S	
- -	प	प	प	पसा	सां नि	ध	प	पध	प
S S	उ	स	ब कऽ	पां S	ति S	संऽ	ग	म	ग
म ग	म	प	प	म	ग	रे	सा	सा	रे
ए S	आ	ज	रि	म	झि	म	मु	ख	रि
सा	सा	सा	सा	II					
दिन न	'आ ज'								

[नी]

- - II	प नी	नि नि	नि ध	नि - I	निध धसा	सा निध	नि -	नि ध
SS	मे S	घ म	ल्हार	में S	साS राS	दि नS	मा न	ब जे
	प ध	नि ध	प प	पध प	ग ग	ग ग	म -	(- न)
	निर	झ र	गी त	ब जे	नि र	झ र	मा S	S न
म - -	प प	प ध	प प	प ध	नि -	निस -	- -	- नि
गा S Sन	म न	खो S	ए S	सी S	वे S	लाS S	S S	S S
	नि नि	नि ध	सा नि	-ध पध	नि ध	प -	- ध	नि ध
	रा ह	भू S	लेS SS	रे सी	लीS ला	S	S S	म न
	प -	- ध	प ध	नि ध	प -	- -	- -	- -
	चा S	S S	हे S	म न	चा S	S S	हे S	S S
	प सा	सा नि	ध प	पध प	म ग	म -ग	म ग	म प
	ह द	य बाँ	S ध	क हीं	चि र	ऋ Sणी	जा ऊं	ब न
	ध							
	प म	ग रे	सा सा	रे ग	म म	प -म	प प	सा सा
	रि म	झि म	मु ख	रि त	ब द	री SS	दि न	आ ज

II II

बाग्ला

पागला हाओआर बादल-दिने
 पागल आमार मन जेगे ओठे ॥
 चेनाशोनार कोन् बाइरे येखाने पथ नाइ नाइ रे ।
 सेखाने अकारणे याय छूटे ॥
 घरेर मुखे आर कि रे कोनो दिन से यावे फिरे ।
 यावे ना, यावे ना देयाल यत सब गेल टूटे ॥
 वृष्टि-नेशा-भरा संध्याबेला कोन् बलरामेर आमि चेला,
 आमार स्वप्न धिरे नाचे माताल जूटे यत माताल जूटे
 या ना चाइवार ताइ आजि चाइ गो या ना पाइबार ताइ कोथा पाइ गो ।
 पाब ना, पाब ना, मरि असंभवेर पाये माथा कूटे ॥

हिन्दी

पगली हवा बदराया दिन पागल मेरा मन जागे रे ।
 जहाँ सभी अंजाने राहों के हैं ना ठिकाने वहीं मन अकारण धाए रे ॥
 पीछे मुड़ कर अब क्यों रे जाएँ कभी वो अपने द्वारे
 जाए ना जाए ना दिवारें जितनी हो गिरें-टूटें ॥
 बारिश नशा लाई सांझ की बेला किस बलराम का मैं हूँ चेला ?
 मेरे सपने धिर-नाचें मतवाले, सभी मतवाले ॥
 जिसकी चाह नहीं वही चाहूँ मैं जो पायें नहीं कहां पाऊं मैं ?
 पाऊं न, पाऊं न, चाहे अनहोनी के द्वारे माथा पीटें ॥

स्वरलिपि

II {	ध	-	न	-	ध	-	प	-	-	ध	-	पम
	प	ग	ली	S	ह	S	वा	S	S	S	SS	SS
	म	-	प	ध	पधप	-	मग	-	-	-	-	म
	ब	द	रा	S	SयाS	S	दिन	S	S	S	S	S
	म	-	प	-	प	-	प	-	ध	न	-	धप
	पा	S	ग	ल	मे	S	रा	S	S	म	S	Sन

प	ध	न	-	न	-	धप	-	-	(ध	न	-)	---
जा	S	गे	S	S	S	रेऽ	S	S	S	S	SS	S S S
[ध	रे	रें	-	रें	सं]							
ध	सं	सं	-	सं	-	सं	-	-	सं	-	-	
ज	हाँ	S	S	स	S	भी	S	S	अं	S	S	
सं	न	रें	सं	-	-	-	-	-	रें	-	संन	
जा	S	S	ने	S	S	S	S	S	S	S	SS	
न	-	न	सं	सं	-	स	सं	-	सं	-	न	
रा	S	हों	S	के	S	हैं	S	S	न	S	ति	
ध	-	संनि	धप	-	-	-	-	-	-	(ध	-)	--
का	S	SS	नेऽ	SS	S	S	S	S	S	S	S	S S
Y	-	Z	-	Y	-	[-	Y	-	Z	-	
d	@	h	@	-	@	A	@	H	@	a	@	
[-	[Y	-	[-	-	Y	-	-	-	II
ण	S	S	धा	S	Sए	जा	S	Sए	Sरे	-	S	
II {	सं	न	सं	मं	गं	-	रं	र	-	गं	-	रंस
पी	S	छे	S	मु	इ	क	र	S	S	S	SS	
सं	-	रं	र	गं	रं	संन	-	-	-	-	-	
अ	ब	S	क्यों	S	S	रेऽ	S	S	S	S	S	
न	-	-	नी	-	सं	सं	-	-	-	रंसं	न	
जा	S	ए	S	S	क	भी	S	S	S	SS	S	

II {

न	-	सं	न	"न	-	धप	-	-	(- - -)} I	ध	न	- I
अ	प	ने	S	ब्बा	S	रे	S	S	S	S	S	S
न	-	सं	-	सं	रें	न	सं	ध	न	प	-	
जा	S	ये	S	ना	S	जा	S	ये	S	ना	S	
म	-	म	प	प	-	प	-	ध	न	-	धप	
दि	S	वा	S	रें	S	जि	त	नी	हो	S	SS	
प	ध	न	-	न	-	धप	-	-	ध	न	-	
मि	S	रे	S	S	रू	रें	S	S	S	S		
न	-	सं	-	सं	रे	न	सं	ध	न	प	ध	II
जा	S	ये	S	ना	S	जा	S	ये	S	रे	S	
ध	-	ध	सं	सं	-	सं	-	-	सं	सं	-	
बा	S	रि	श	न	S	शा	S	S	ला	ए	S	
पसं	-	सं	-	सं	-	सं	-	-	सरे	-	संनि	
सां	S	झ	की	बे	S	ला	S	S	SS	S	SS	
न	रें	रें	-	रें	सं	सं	-	-	रेसं	न	-	
कि	स	ब	S	ल	S	रा	S	म	का	S	S	
न	-	सं	न	धन	-	धप	-	-	(- - -)} I	प	प	- I
मैं	S	हूँ	S	वे	S	ला	S	S	S	S	मे	रे S
प	-	न	-	ध	-	न	-	-	ध	प	ध	
स	प	ने	S	धे	S	रे	S	S	ना	चें	S	

म	-	प	-	पधप	-	मग	-	-	ग	ग	म	
म	S	त	वा	SSS	S	लेS	S	S	स	भी	S	
म	-	प	-	प	-	प	-	-	(पप-)} I	प सं न I		
म	S	त	S	वा	S	ले	S	S	मेरे	S	जिसकी	
{	सं	न	सां	मं	ग	ग	"ग	-	-	रे	रें	गं
	चा	S	ह	S	न	S	हों	S	S	व	ही	S
{	सा	-	ग	रे	-	-	-	-	-	-	रें	-
	चा	S	हूँ	मैं	S	S	S	S	S	S	जो	S
	सं	-	रें	-	रें	-	रें	-	-	ग	रें	-
	पा	S	ये	S	S	न	ही	S	S	क	हां	S
	सं	-	गरे	संनी	-	-	(-	-	-	-	सं	न)} S
	पा	S	ऊँ	मैंS	S	S	S	S	S	S	S	जो
	न	-	न	सं	सं	-	सं	-	सं	-	सं	रें
	पा	S	ऊँ	S	न	S	पा	S	ऊँ	S	ना	S
	निसं	सं	-	न	न	-	न	-	न	सं	सं	-
	SS	चा	S	है	S	S	अ	न	हो	S	नी	S
	सं	-	सं	-	सं	नी	ध	सं	सं	न	न	-
	के	S	S	द्धा	रे	S	मा	S	था	S	पी	S
	धप	-	-	ध	न	-	न	-	सं	-	सं	रें
	टै	S	S	S	S	S	प	S	ऊँ	S	ना	S
	न	सं	धा	न	प	ध	II	II				
	पा	S	ऊँ	S	रे	S						

बांग्ला

तिमिर अवगुंठने वदन तव ढाकि,
 के तुमि मम अंगने ढाँडाले एकाकी ॥
 आजि सघन शर्वरी, मेघमगन तारा,
 नदीर जले झर्रीरि झरिछे जलधारा,
 तमालवन ममीरि पवन चले हाँकि ॥
 ये कथा मम अंतरे आनिछ तुमि टानि,
 जानि ना कौन मन्तरे ताहारे दिब वाणी ।
 रयेछि बाँधा बंधने, छिँडिब, याब वाटे
 येन ए वृथा क्रन्दने ए निशि नाहि काटे।
 कठिन बाधा-लंघने दिब ना आमि फाँकि॥

हिन्दी

धूँघट ओढ़े रैन की मुखड़ा यों छिपाए
 कौन हो कौन तुम-मेरे-अंगना, खड़ी हो अकेली ॥
 आज सघन रात रे, मेघमगन तारे-
 नदिया नीर झर-झर-झरे झरे झरे जलधारा।
 तमाल वन मर्मरित आहो-ओरे ! पवन चले सनसन ॥
 जो बातें मन में मरे, तुम हो बुला लाती-
 न जानूँ किस पंत्र से उन्हें मैं दूँ वाणी ।
 हूँ मैं बंधा बंधन-बंधन में तोड़ उसे राह चलते मैं-
 क्यों आँसू बहे- बहे ये निशा भी न बीते ।
 लाघू कठिन बाधा मैं- अपने को न ठगूँ रे ॥

स्वरलिपि

[गं रं सं न ध पम ग]							
II	सं न ध प	म ग मग म	नध - - ध	- - - -			
	घूं घ ट ओ	ढ रै ङन ङ	की ङ ङ ङ	ङ ङ ङ ङ			
	ध न सं -	सं सं सं न	न	न			
	मु ख झ ङ	यो ङ छु पा	सं - ध न	प - - -			
	सं		ये ङ ङ ङ	ङ ङ ङ ङ			
	पस ध प -	- - - -	सं	सं			
	कौ न हो ङ	ङ ङ ङ ङ	पस ध प म	- - - -			
	स		कौङन तु म	ङ ङ ङ ङ			
	मसं न ध प	म म - ग	ग				
	कौङन तु म	मे रे अं ग	प - - -	- - - -			
	सं सं म -	- - म ग	ना ङ ङ ङ	ङ ङ ङ ङ			
	ख झी हो ङ	ङ ङ अ के	ग				
			प - - -	- - - -			
			ली ङ ङ ङ	ङ ङ ङ ङ			
II	प ध प सं	सं सं नसं ध	ध	सं			
	आ ज स घ	न रा ङ ङ त	सं - - ध	सं - - -			
			रे ङ ङ ङ	ङ ङ ङ ङ			

सं	सं	रं	न	सं	रं	सं	न	सं	रं	सं	न
सं	नसं	ध	न	सं	रं	सं	न	सं	-	-	नसं
में	SS	ध	म	ग	न	ता	S	रे	S	S	S
सं	गं	गं	रं	रें	सं	सं	नसं	ध	सं	-	ध
न	दि	या	नी	S	र	झ	र	झर	S	S	झ
ध	-	-	म	म	म	म	-	म	म	म	ग
प	-	-	म	झ	S	रे	S	ज	ल	धा	S
रे	S	S	S	म	म	-	म	म	-	-	म
स	सम	म	म	म	म	-	म	म	-	-	म
त	माS	ल	व	न	म	S	र्म	रित्	S	S	ओ
गप	-	-	-	-	-	-	-	ध	न	सं	रं
रीS	S	S	S	S	S	S	S	प	व	न	च
गं	-	-	रं	रं	सं	-	-	सं	ध	प	-
सन्	S	S	S	S	S	S	S	पसं	ध	प	-
पसं	ध	प	म	-	-	-	-	कौन	S	हो	S
कौन	S	तु	म्	S	S	S	S	सं	न	ध	प
ग	-	-	-	-	-	-	-	कौ	न	तु	म्
प	-	-	-	-	-	-	-	सं	सं	म	-
ना	S	S	S	S	S	S	S	ख	झी	हो	S
ग	-	-	-	-	-	-	ग	I	[]I	
प	-	-	-	-	-	-	-	न	ध	-	-
ली	S	S	S	S	S	S		रे	S	S	S
ध	न	ध	प	प	मं	ग	मं	न	ध	-	-
न	न	ध	प	मं	ग	मं	मं	रे	S	S	S
जो	बा	तै	म	न	में	में	S	रे	S	S	S

II {

ध न सं -	सं सं सं न	न सं सं	ध
तु म हो S	बु ला ला S	ती SS S S	प - - -
पसं सं सं	प प मध प	प - - -	- - -
नऽ जा नृ कि	स मं न S	से S S S	S S उ न्हें
ग - - -	- - म प	ध न सं न	धप - - -
में S S S	S S दूं S	वा S S S	णी S S S
प ध प पसं	सं सं नसं ध	ध सं नसं ध	सं - - -
हं S में बऽ	धा बं Sध न	S S बं धन	में S S S
संगं गं गं -	ग रं सं सं न	न सं नसं - न	ध - - न
तो हूं उ से	रा ह च ल	ते SS S S	S S में S
सं गं गं रं	सं सं नसं ध	ध सं सं नसं ध	धसं - - -
क्यों S S आं	सू S SS ब	हे S SS ब	हेऽ S S S
ध न ध -	प प म ग	गप - - -	- - - -
यह नि शा S	मी न बी S	तेऽ S S S	S S S S
गं गं गं गं	गं गं - गं	गंमं - रं -	सं - नध न
ला S घूं क	ठि न बा S	धा S S S	S S में S
सं संगं गं -	गं रं सं सं न	सं - - ध	ध प - - -
अ पऽ ने S	की न ठं गूं	रे S S S	S S S S
पसं ध प -	- - - -	पसं ध प म	- - - -
कौऽ न हो S	S S S S	कौऽ न तु म	S S S S

मसं	न	सं	ध	प	म	म	-	ग	प	-	-	-	-	-	-	-	-	-
कौ	न	तु	म		मे	रे	अं	ग	ना	S	S	S	S	S	S	S	S	S
स	स	म	-		-	-	म	गं	प	-	-	-	-	-	-	-	गं	II [] II
ख	ई	हो	S		S	S	अ	के	Sली	S	S	S	S	S	S	S	S	S

* * *

बांग्ला

धरणीर गगनेर मिलनेर छंदे,
 बादलवातास माते मालतीर गंधे ॥
 उत्सव-सभा माझे श्रावणेर वीणा बाजे,
 शिहरे श्यामल माटि प्राणेर आनंदे ॥
 दुइ कूल आकुलिया अधीर विभंगे,
 नाचन उठिल जेगे नदीर तरंगे ।
 काँपिछे बनेर हिया वरषणे मुखरिया,
 बिजलि झलिया ओठे नवघनमंद्रे ॥

हिन्दी

धरणी और गमन के मिलन के तालों ताल, तालों ताल
 बदली हवा माती, मालती लता जो महकी ।
 उत्सव-सभा में सावन की वीणा इनकारे,
 सिहरे हरित भू प्राण-उमंग में ।
 बदली हवा माती, मालती लता जो महकी !
 दोनों कूल अकुलाए, अधीर हो बल खाए,
 नर्तन जागे-जागे, नदिया तरंग में, तरंग में ।
 कंपित वनहिय वरषण में मुखरित हो,
 बिजली-झलके देखो नवघन-ध्वनि में, ध्वनि में ।
 बदरी हवा माती, मालती लता जो महकी ॥

(कहरवा ताल)

स्वरलिपि

		सां				रे				प						
II	सां	सां	नि	ध	प	म	ग	रे	नि	सा	रे	ग	म	-प	म	-
	ध	र	णी	और	ग	ग	न	के	मि	ल	न	के	ता	Sलो	ता	ल
	ग	-प	म	मग	रे	प	म	प	प	-सा	नि	सानि	नि	-निध	प	-रे
	ता	Sलो	ता	Sल	ब	द	री	ह	वा	SS	SS	SS	मा	SSS	ती	SS
	रें	ग	म	प	पध	-प	म	-ग	रेग	-रे	रेप	-	II			
	मा	ल	ती	ल	ताS	SS	जो	SS	मS	हS	कीS	S				
II	प	-	निध	नि	निसां	सां	सां	सां	सां	-ध	-	-ध	नि	-	-	सां
	उ	त्	सS	व	सS	भा	में	SS	सा	SS	S	वन	की	S	S	S
	ध	नि	सां	निध	ध	-नि	-सां	निध	प	-	-	-	सा	नि	ध	प
	वी	SS	णा	SS	इ	Sन्	Sका	SS	रे	S	S	S	सि	ह	रे	ह
	म	म	म	म	साम	म	म	म	म	-म	म	म	म	म	म	गं
	रि	त	भू	S	प्राS	ण	के	उ	मं	गमें	उ	मं	ग	में	S	S
	गं	गं	रे	सां	नि	ध	प	म	म	म	म	म	म	-	म	म
	सि	ह	रे	ह	रि	त	भू	S	प्रा	ण	के	उ	मं	ग	में	उ
	मग	-प	प	म	प	म	प	-म	पसां	-	-नि	सांनि	धसां	निध	प	-
	मS	Sग	में	ब	द	ली	ह	SS	वाS	S	SS	SS	माS	SS	ती	S
	रे	ग	म	प	प	-प	म	-ग	रेग	-रे	रेप	-	II			
	मा	ल	ती	ल	ता	SS	जो	SS	मS	Sह	की	S				

II

प - दो नों	प - क ल	प अ	प कु	म ला	प ए	ध अ	नि धी	सां र	रे हो	सां ब	नि ल	ध- खा	न्- एस
सां गं न र्त	रे सां न जा	नि ऽ	ध गे	प जा	प गे	म न	म दि	म या	म त	ग -प रं ऽग	म ऽ	म में	म त
ग -प रं ऽग	म - में ऽ	- ऽ	- ऽ	- ऽ	- ऽ	प कं	प ऽ	निध पिऽ	नि त	सां व	सां न	सां हि	सां य
सां नि	ध र	नि ष	- ण	सां में	- ऽ	- ऽ	नि मु	ध ख	नि रि	सां ऽत	-नि होऽ	धनि ऽ	- ऽ
सां बि	नि ज	ध ली	प इ	म ल	म के	म दे	ग खो	म न	म व	म घ	म न	- ध्व	म नि
म - ध्व	प - नि	-गं में	गं बि	गं ज	रे ली	सां इ	नि ल	ध क	प दे	प खा	म न	म व	म घ
म - ध्व	म - नि	ग -प में	प ध्वनि	प नि	प में	प ब	प द	म ली	प ह	म ऽऽ	पसा वा	- ऽ	नि सानि ऽऽ
ध मा	निध ऽऽ	प - ती	रे मा	ग ल	म ती	प ल	ध ता	प ऽ	म जो	-ग ऽऽ	रेग मऽ	-रे ऽह	रे की

II II

बांग्ला

आजि झड़े राते तोमार अभिसार
 पराणसखा बंधु हे आमार ॥
 आकाश कां दे हताश सम, जाइ ये घुम नयने मम
 दुआर खुलि हे प्रियतम, चाइ ये बारे बार ॥
 बाहिरि किछु देखिते नाहि पाइ
 तोमार पथ कोथाय भावि ताइ ।
 सुदूर कोन् नदीर पारे गहन कोन् बनेर धारे
 गभीर कोन् अंधकारे हतेछ तुमि पार ॥

हिन्दी

आज आंधी की रात, तोर ये अभिसार ।
 हे प्राण सखा, मेरे बंधुवर ॥
 आकाश का ये हताश रुदन,
 नींद हारे, मेरे ये दो-नयन, खोल द्वार खोल प्रियतम
 तुझे दूँ नैन बार-बार
 बाहर कुछ दिखे नहीं, तेरा-पथ कहाँ सोच- के इरुं
 सुदूर किस नदी के-पार, गहन किसी बन के किनारे
 सघन-घन-अंधेरे में, होते होंगे साथी पार ॥

स्वरलिपि
 (झंपक ताल)

स सII	र	म	a	न	धप	मप	म	ग	-	-	-						
आ	ज	आं	धी	की	रा	त	ते	राऽ	ऽ	अऽ	भिऽ	सा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
		र	म	ग	र	स	र	ग	र	स	न	स	स	स	-	-	II
		प्रा	ऽ	ण	स	खा	हे	मे	रे	बं	ऽ	धू	व	र	ऽ	ऽ	
II {		प	न	म	प	ध	न	सं	-	रं	संन	सं	सं	-	-	-	
		आ	क	श	कां	य	ह	ता	ऽ	ऽऽ	ऽश	रो	द	न	ऽ	ऽ	
		प	ग	गं	रं	संन	न	सं	न	नंसं	रंसं	सं	न	-	धप	-	-
		नी	ऽ	द	हा	रेऽ	मे	रे	ऽ	दो	ऽऽ	न	य	ऽ	नऽ	ऽ	ऽ
		प	धन	रं	सं	सं	धसं	सं	न	न	ध	प	म	-	-	-	
		खो	ऽऽ	ल	द्वार	हेऽ	प्रिय	त		म	में	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
		म	न	न	ध	प	मग	-	-	-	-	र	म	ग	र	स	
		दू	कै	ऽ	नै	न	बाऽ	ऽ	र	बा	र	प्रा	ऽ	ण	स	खा	

	र	ग	र	स	न	स	स	स	-	-	II						
	हे	मे	रे	बं	S	धु	व	र	S	S							
II {	स	स	स	स	स	स	स	स	न	स	रे	रे	-	-	-		
	बा	हि	र	कु	छ	दे	S	ख	नं	ही	पा	ऊं	S	S	S		
	र	र	ग	म	प	प	प	-	मग	रग	म	-	-	-	-		
	ते	रा	S	प	थ	क	हाँ	S	सो	च	के	S	ड	ऊं	S		
{	प	न	म	प	ध	न	सं	-	रं	संन	सं	-	-	-	-		
	दू	S	र	कि	से	न	दी	S	या	SS	पा	S	S	र	S		
	प	ग	ग	रं	सं	न	सं	न	नसं	रंसं	न	ध	प	-	-		
	ग	ह	न	कि	सी	व	न	के	किS	ना	रे	S	S	S	S		
	प	धल	र	सं	-	संन	सं	न	न	ध	प	म	-	-	-		
	स	घ	न	घ	न	अं	धे	रे	में	S	S	S	S	S	S		
	प	पन	न	ध	प	मग	-	म	-	-	र	ग	-	र	स		
	हो	ते	S	हो	S	सा	थी	-	पा	रहे	प्रा	S	ण	स	खा		
	र	ग	र	स	न	स	स	स	-	-	II	II					
	हे	में	रे	बं	S	धु	व	र	S	S							

बांग्ला

मोर भावनारे की हाओआय मातालो,
दोले मन दोले अकारण हरषे ।
हृदयगगने सजल घन नवीन मेघे ।
रसेर धारा वरषे ॥
ताहारे देखि ना ये देखि ना,
शुधु मने मने क्षणे क्षणे ओइ शोना जाय
बाजे अलखित तारि चरणे
रूनूरूनू रूनूरूनू नूपुरध्वनि ॥
गोपन स्वपने छाइल, अपरश आँचलेर नव नीलिमा ।
उडे जाय बादलेर एइ वातासे तार छायामय एलो केश आकाशे ।
से ये मन मोर दिल आकुलि जल-भेजा केतकीर दूर सुवासे ॥

हिन्दी

मेरी भावना को, क्यों छेड़े हवाओं
झूमे जिया झूमे बिन कारण खुशी से ॥
हिय गगन में सजल-सघन मेघ नवीन
रस की धारा बरसाये
हो जाते वे ओइल नयनों से
बस हर पल मन मेरा आहट सुने
बजे उन्ही अलख पगों के पायल-
रुन-झुन-घुंघरुन, ध्वनि बरसे
चुपके सपने में छा जाये
अनुछुई-अंचला की नव नीलिमा
उड़ चले बदराई -हवा-में
उनके छाया-घने खुले-केश आकाश में
उन्होंने मेरा मन, अकुलायां
भीगी-भीगी केतकी भी दूर महके ॥

स्वरलिपि

स र II मे री	म रे म म भा व ना को	- प म प क्यो ह वा S	- ध म प छे डे S S
सं ध सं - न S S S S	ध नि प ध झू मे जी या	म ग रे ग झू में विन् का	स स र ग र ण खु शी
॥ म-(सर)} - II सेS "मे री" S S	र म म ग हि य ग S	रे रेप प - ग नS में S	म प ध नध स ज ल सS
प - म प धन्S मे S	ध नध प - ध नS वी न	म ग र - र स की S	म ग र ग ध रा बर सा
स - सर II ये S "मे री"			
II{	सं न ध - हो जा ते वे	म प ध सं ओS झ ल	सं न ध रं न य नों S
सं - रं गं से S ब स	रं गं मं गं ह र प ल	रं गं सं रं म न मे री	न सं ध न आ ह ट सु
प - - - } नी S S S	{र - प - ब जे उ न्ही	म प ध न अ ल ख प	न म -ध प म ग गों के पा S
र - - - } य ल S S	स र म प रु न झु न	ध सं ध प धु ध रू न	म ग र ग ध्न नि ब र
स - सर II के S "मे री"	II		

II {		म ग र -	- - म ग	र - ग म
		चु प के S	S S स पने	मे S छा जा
प - - -		प ध र ग	म ध प ध	म ग र ग
ये S S S		अन छु ई आं	च ल की S	न व नि ली
स - - - }	{ सं न ध -	म प ध सं	सं न ध रं	
मा S S S	ब द री S	ब द री S	सी S ह वा	
सं- - रं गं	रं गं मं गं	रे गं मं -रं	न सं ध न	
में S उन् के	छा या घ ने	खु ले के श	आ S का श	
प - - - }	{ र - प -	म प ध न	ध प म ग	
मे S S S	उन हों ने ही	मे रा म न	अ कु ला या	
र - - - }	रं - रं सं	न ध प ध	म ग र ग	
S S S S	भी गी भी गी	के त की भी	दू र म ह	
स - स र	II II			
के S "मे री"				

* * *

बाग्ला

झरे झरो झरो भादरबादर विरहकातर शर्वरी ।
फिरिछे ए कोन् असीम रोदन, कानन कानन मर्मरि ॥
आमार प्राणेर रागीनी आजि ए गगने गगने उठिछे बाजिये ।
मोर हृदय एकि रे व्यापिल तिमिरे समीरे समीरे संचरि ॥

हिन्दी

झरे-झर-झर भादों- के बादल, विरह व्याकुल शबरी
झरे-झरे, झर-झर-झर-
छाए कैसा असीम रोदन हो, कानन- कानन गूंजे रे ।
विरह व्याकुल शबरी झरे-झरे झर-झर-झर ॥
मेरे प्राण की रागिनी आज ये, घन गगन में उठती बज रे,
मेरे हृदय में क्यों ऐसे घेरे तमी-रे ।
समीर से जो संचरे विरह व्याकुल शबरी
झरे झरे, झर-झर-झर ॥

स्वरलिपि

II	स - सन र	र र र र	र स र रप	म मप म ग गम
	झ ऽ रेऽ ऽ	झ र झ र	भा ऽ द ऽऽ	बाऽ ऽ दऽ रऽ
		नि		सं
	म प प म	पम न -ध पम	प - - पसं	न धन पध मप
	वि र ह ऽ	व्याऽ कु लऽ	श ऽ ऽ व	री झऽ रेऽ झऽ
	म ग र स	सर न स स	{ मप पन प	न स सं -
रे ऽ झ र	झऽ रं झ र	छऽ येऽ ऽ	कै ऽ सा ऽ	
सं सं - सं	सं न सं ध	न ध न ध	धन धन प - }	
अ सी ऽ म	रू ऽ द न	हो ऽ ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽ - }	

म न न ध का ऽ न न	धन धन ^प पम काऽ ऽऽ न नऽ	प - - पसं नृ ऽ ऽ जेऽ	ग - - म री ऽ ऽ ऽ
म प प म विर ह ऽ	म न -ध पम व्याऽ कु ल	म - - पसं श ऽ ऽ वऽ	स न धन पथ मप री झऽ रेऽ झऽ
म ग र स रे ऽ झ र प पथम प ध राऽ मि नी ऽ	सर न स स झऽ र झ र ध म प म ग आ ज ये ऽ	[ध] (स न ध न) मे ऽ रे ऽ ग ग ग म घ न ग ऽ	ध संन ध प प्रा ऽऽ ण की म र रसर ग ग नऽ में ऽ
र सन स - उ ठऽ ती ऽ	स संन नध न) ब जऽ रं ऽ	I- - - - ऽ ऽ ऽ ऽ	- - प - ऽ ऽ मे रे
म -प प न हिर द य मे	न - न सं किउंऽ यै ऽ	सं - - - से ऽ ऽ ऽ	- - - - ऽ ऽ ऽ ऽ
पसं- सं सं घेऽ ऽ रे ऽ	सं सन सं ध त मिऽ रे ऽ	न ध न ध हो ऽ ऽ ऽ	न धन प - ऽ ऽऽ ऽ ऽ
म नध न ध स मीऽ र न	धन ध प ध मेऽ ऽ जो ऽऽ	म प - पसं सं ऽ ऽ चऽ	म ग - - म रेऽ ऽ ऽ ऽ
म प प म विर ह ऽ	म न -ध पम व्याऽ कु लऽ	प - - पसं श ऽ ऽ वऽ	न ध पथ मप री झ रेऽ झऽ
म ग र स रे ऽ झ र	सर न स स झऽ र झ र	II II	

बांग्ला

शाइनगगने घोर घनघटा, निशीथयामिनी रे ।
कुंजपथे, सखी, कैसे जाओव, अबला कामिनी रे ।
उन्मद पवने यमुना तर्जित, घन घन गर्जित मेह ।
दमकत विद्युत पथ तरु लुंठित, थरहर कंपित देह
घनघन रिम्झिम् रिम्झिम् रिम्झिम् बरखत नीरदपुंज ।
शाल-पियाले ताल-तमाले निविड़तिमिरमय कुंज ।
कह रे सजनी, ए दुरुयोगे कुंजे निरदय कान ।
दारुण बाँशी काह बजायत सकरुण राधा नाम ।
मोतिम हारे वेश बना दे, सींथि लगा दे भाले ।
उरहि विलुंठित लोल चिकुर मम बांधह चंपकमाले ।
गहन रयनमें न जाओ, बाला, नओलकिशोरक पाश ।
गरजे घन घन, बहु डर पाओब कहे भानु तव दास ॥

हिन्दी

सावन नभ में घोर घन-घटा निशीथ यामिनीरे ।
कुंज पथे, सखी कैसे जावे अबला कामिनी रे
उन्माद पवने यमुना तर्जित, घन-घन गर्जित मेहा
दमकत विद्युत पथतरु लुंठित थरथरकंपितदेहा
घन-घन रिमझिम, रिमझिम, रिमझिम बरसत नीरद पुंज
शाल-पियाल, ताल तमाल निविड़ तिमिर-मय कुंज
कहरे सजनी ये दुर्योगे कुंज में निर्दय कान्हा
दारुण बंसी काहे बजावत सकरुण राधा-नामा
मोतिन हारे बेस बना दे, टिकुली लगा दे भाले
उरहिं विलुंठित लोल-चिकुर मोरे बांध रे चंपक-माल
गहन रैन में न जाओ बाला-नवलकिशोर के पास ।
गरजे घन-घन बहु डर पावत कहे भानु तव दासा ॥
(भानुसिंह की पदावली/स्वरवितान)

स्वरलिपि

II {	र प म प	प ग र मग र	र स रग -र स	ग र न स -	II
	सा S व न	न भ मेS S	धो SS RS घ	न घ टा S	
	(म म प प	प म मन न	न - - -	र स र -)	
	नि शी S थ	या S मिS नी	रे S S S	S S S S	
	म प प प	प - प प	प न - ध न	न ध न ध प	
	कुं S ज प	थे S स खी	के S से S	जाS वे S	
	म म प म	प - प पसं	नसं नसं न ध	प म गर स	II
	अ व ला S	का S मि नीS	रेS SS S S	S S SS S	
II	म प प प	प प प न	न न न सं	सं - सं स	
	उ न् मा द	प व ने S	य मु ना S	त S र्जि त	
	म म प प	प - प ध	ध न - धप ध	ध प - - -	
	घ न घ न	ग S र्जि त	मे S SS S	हा S S S	
	म प प प	प - प प	म प प पन	न सं सं सं	
	द म क त	बि जु री S	प थ त रूS	लूं S ठि त	
	न नरं सं न	घ - प पध	ध म - पधप मप	प ग - - -	
	थ RS थ र	कं S पि तS	दे S SSS SS	हा S S S	
	ग ग ग ग	ग - ग -	म - म -	पम ग म -	
	घ न घ न	रि म् झि म्	रि म् झि म्	रिम S झि म्	

ग म प प	प - प पध	५म - पधप मप	ध
ब र स त	नी S र ढS	पुं S SSS SS	ग - रोस र
ग - ग ग	ग म ग -	प	ज S SS S
शा S ल पि	या S ल S	गम प म गर	मग र स -
र प म प	प ग म मग -र स	ताS S ल तS	माS ले S S
नि वि इ ति	मि रS म य	रस नि स -	स - - -
म प प न	न न न -	कुंS S ज S	S S S S
क ह रे S	स ज नी S	पन - सं रं	रं
सं रं संरं सं	सं न न धप ध	येS दु र	न - सं -
कुं S जS में	नि र ढS य	संन - धप ध	यो S मे S
मप - प प	प - प म	काS S SS न्हा	प - - -
दाS S रू ण	बं S सी S	प न ध न	S S S S
म	ध	का S हे ब	न न ध स
म म प पध	म - पध मप	प	न - ध प
स क रू णS	रा S थाS SS	ग - - -	जा S व त
सन - प नि	न स स -	ना S S S	र - स -
मोS S ति न	हा S रे S	सज - प न	S S म् S
सन - स रे	रे - र स	वेS S श ब	न स स -
टिS कु ली ल	गा S दे S	म	ना S दे S
म म प प	प - प प	रस र ग -	- - - -
उ र हि वि	लूं S ठि त	भाS S S S	S S ले S
		म प प पन	पन न प प
		लो S ल Sनि	कुS र मो रि

प		म	म				
म - प प	पस - ग गम	ग - - म	र ग स -				
बाँ ऽ ध रे	चंऽ ऽ प कऽ	मा ऽ ऽ ऽ	ला ऽ ऽ ऽ				
म प पन न	न न न -	म	र				
ग ह नऽ रे	ऽ न में ऽ	प न - संरं	न - सं -				
सं नरं सं नध	न - धप ध	नऽ ला ऽ वीऽ	बा ऽ ला ऽ				
न वऽ ल किऽ	शो ऽ रऽ के	सं	प - - -				
पन न न -	न न	न - - ध	सा ऽ ऽ ऽ				
गऽ र जे ऽ	ध न धप ध	ध रं सं रं	र				
प	- प पध प	ब हु त ड	नं - ध प				
प म - प	- प पध प	म	रा ऽ व त				
क हे ऽ भा	ऽ नु तो ऽ	ग - - -	र - स -				
		दा ऽ ऽ ऽ	स ऽ ऽ ऽ				

II II

बांग्ला (स्व.पु. 5)

नमो, नमो, नमो करुणाधन, नमो हे।

नयन स्निग्ध अमृतांजनपरशे,

जीवन पूर्ण सुधारसवरषे,

तव दर्शनधनसार्थक मन हे, अकृपणवर्षण करुणाघन हे॥

हिन्दी

नमो नमो नमो, करुणाघन नमो हे !

नयन स्निग्ध झरे अमृत अंजन, जीवन भर दे सुधा रस वरसन।

तव दर्शन धन्य सार्थक मन रे, अकृपण बरसे करुणाघन हे॥

नमो, नमो हे, नमो हे!

स्वरलिपि

II						प	
म प म म	प प म प	पसां निसां ध प	म प म -				
न मो न मो	न मो क रु	णाऽ ऽऽ ध न	न मो हे ऽ				
- - - ग	रे ग रे -	रे प प म	गरे ग रेसा -				
ऽ ऽ ऽ ऽ	न मो हे ऽ	न मो हे ऽ	नऽ मो हेऽ ऽ				
म प प नी	- नि नि रां	स - सं सं	सं नि सं सं				
न य न स्नि	ऽ ध झ रे	अ ऽ मृ त	अ ऽ ज न				
सां ध ध ध	धसां - सां सां	सां -निरे सां सां	निसां ध प -				
जी ऽ व न	भऽ र दे सु	धा ऽऽऽ र स	वर ष न ऽ				
पम ध प -	म म म ग	रे -प प प	प म प -				
तौऽ द र श	न ध न्य सा	ऽऽ र्थ क म	न रे ऽ				
ध नि सा नि	ध -नि ध प	रे ग म धप	म ग रेसा -				
अ कृ प ण	ब ऽऽ से ऽ	क रु णा ऽऽ	ध न हेऽ ऽ				
	प		॥				
सा रे रे -	रे प म -	गरे ग रेसा -	- - - -				
न मो हे ऽ	न मो हे ऽ	नऽ मो हेऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ				

II II

बांग्ला

एसो शरतेर अमल महिमा, एसो हे धरि ।

चित्त विकाशिवे चरण घेरे ॥

विरहतरंगे अकूले से दोले

दिवायामिनी आकुल समीरि ॥

हिन्दी

सुस्वागत निर्मल शरत्-महिमा आओ हे ! धरि ।

चित्त ये विकसे रे, चरण घेरे ॥

विरह तरंग में अकुलाए लहरे ।

दिवस यामिनी व्याकुल समीरि ॥

+ २ ० ३
ठेका : धाऽ धिऽ । धा-धध तिऽ । नाऽ ति । धा-धध धिऽ ॥
स्वरलिपि (राग गंधारी/जत ताल)

II	सा-	रेम	गम	पम	प	-	प	-सा	नि	ध	-	निध	प	-	-	S
	सुऽ	स्व	SS	Sग	त	S	नि	SS	मं	S	S	SS	ल	S	S	S
	म	म	प	म	मप	धप	मप	मग	-	रेसा	रे	ग	सा	-	-	-
	श	र	त्	म	हिऽ	SS	SS	माऽ	S	SS	S	S	S	S	S	S
																॥
	सा	-	रे	म	गम	पम	प	-	रे	-	-	ग	सा	-	-	-
	आ	S	ओ	S	SS	SS	हे	S	धी	S	S	S	रे	S	S	S
	सा	-	रे	-म	गम	प	-	म	प	-	पनि	-प	नि	-सां	सां	-
	चि	त्त	ये	SS	SS	S	S	वि	क	S	सेऽ	SS	SS	SS	रे	S
	निसां	रेगं	-	-	रे	-	गं	सां	निसां	रेसां	निसां	निध	ध	प	-	-
	चऽ	SS	S	र	S	S	S	ण	घेऽ	SS	SS	रेऽ	S	S	S	S



म	प	निध	-	-	-	-	नि	नि	सा	नि	सा	सा	-	नि	सा	
वि	र	हऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	त	र	ऽ	ऽ	ग	में	ऽ	अ	कु	
निसं	रेग	-	-	रे	गं	सां	-	-	निसां	रेसां	निसा	ध	निध	प	-	
लाऽ	ऽऽ	ऽ	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	लऽ	ऽऽ	हऽ	रे	ऽऽ	ऽ	ऽ	
प	प	-	मगरे	रे	-	म	-	रेमप	-	-	प	म	प	-	प	-
दि	वा	ऽ	ऽऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽऽऽ	ऽ	मि	ऽ	नी	ऽ	व्या	ऽ	ऽ
पनि	प	नि	सां	सां	सां	सां	-	निसां	रेसां	निसां	निध	ध	प	-	-	-
कुऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ल	ऽ	ऽ	ऽ	मीऽ	ऽऽ	ऽऽ	रेऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

II II

बांग्ला

देखो, देखो देखो शुकतारा आँखि मेलि चाय प्रभातेर किनाराय ।

डाक दिएछेरे शिउलि फूलरे आ य आ य आय ॥

ओ जे कार लागि जाले दीप, कार ललाटे पराय टीप,

ओ जे कार आगमणि गाय आ य आ य आय ॥

जागो जागो सखी,

काहार आशाय आकाश उठिल पुलकि ।

मालतीर बने बने ओइ शोनो क्षणे क्षणे

कहिछे शिशिरबाय आ य आ य आय ॥

हिन्दी

देखो, देखो, देखो शुकतारा नयन खोले, उषा के आंगन में ।

शुकतारा नयन खोले हो !

बुलाए रे वो शेफालिका को, आ... आ... आ...!

वो क्योंकर दीप जलाए, किस भाल पे बिंदिया सजाए !

वो स्वागत ये किसका गाए, आ... आ... आ...!

जागो-जागो सखी री, कैसी आश में पुलक जागे आकाश में ॥

मालती-लता वन-वन में, सुनो हो छन पल-पल में ।

कहे जो ओस हवा से आ... आ... आ...॥

बांग्ला

आज धानेर खेते रौद्रछायाय लुकोचुरि खेला रे भाई, लुकोचुरि खेला
नील आकाशे के भासाले सादा मेघेर भेला रे भाई लुकोचुरि खेला ॥
आज क्षमर भोले मधु खेते उड़े बेड़ाय आलोय मेते,
आज किसेर तरे नदीर चरे चखा-चखीर मेला ॥
ओरे- याब ना आज घरे रे भाई, याब ना आज घरे ।
ओरे, आकाश भेंगे बाहिरके आज नेब रे लुट करे ॥
येन जोवार-जले फेनार राशि बातासे आज छुटछे हासि,
आज बिना काजे बाजिये बांशि काटबे सकल बेला ॥

हिन्दी

आज धान खेत के धूप छांह में, लुकाछुपी का खेल रे भाई
नीले नभ में किसने डाला श्वेत मेघरी नैया,
रे भाई लुकाछुपी का खेल
आज, मधुप भूले मधुपान मस्त ज्योति में भरे उड़ान, देखो,
आज, क्यों कर नदी किनारे ये चकवा-चकई के मेले रे भाई
ओजी, आज न जाना घर लौट हो, जाना नहीं निज द्वारे
ओजी, नभ भेद कर लूट लेंगे हम, लूट लेंगे सब कुछ रे ॥
ज्यों, ज्वार जल की फेनिल फुहारें छिटका दें हंसी हवा में
त्यों, बिन कारण बजाते फिरें हम, बंशी सुबह और शाम
रे भाई लुकाछुपी का खेल ॥

बाग्ला

मोर वीणा ओठे कोन् सुरे बाजि कोन् नव चंचल छंदे
मम अंतर कंपित आजि निखिलेर हृदयस्पंदे ॥
आसे कोन तरुण अशांत, उड़े बस नांचल प्रांत ।
आलोकेर नृत्ये बनांत, मुखरित अधीर आनंदे ॥
अंबर प्रांगण माझे निःस्वर मंजीरा गुंजे
|अश्रुत सेइ ताले बाजे करतालि पल्लव पुंजे ।
कार पदपरशान-आशा तृणे तृणे अर्पिल भाषा
समीरण बंधनहारा उन्मन् कोन वनगंधे ॥

हिन्दी

मेरी वीणा में ये कौन सी बजी धुन, चंचल छन्द है नूतन
मेरा अंतर कंपित आज है निखिल हृदय का स्पंदन ॥
आया चंचल तरुण ये कौन उड़े वसनांचल का वो छोर
किरणों के संग नाचें वन-कानन, मुखरित मुदित अधीर बन ॥
अम्बर-आंगन माझा निस्वर मंजीरा गुंजे ।
आश्रुत तालों को सुन करताली पल्लव पुंज दें ।
किस पग-परस की आशा, तृण-तृण को देवे भाषा
समीरण बंधन हारे, सुरभित वन में उन्मन ॥

बाग्ला

ग्राम छाड़ा ओइ रांगा माटिर पथ
आमार मन भुलाय रे ।
ओरे कार पाने मन हाथ बाड़िये
लुटिये याय धुलाय रे ॥
ओ ये आमाय घरेर बाहिर करे,
पाये, पाये, पाये धरे
ओ ये केड़े आमाय नियें याय रे
याय रे कोन चुलाय रे ।
ओ ये कोन बाँके की धन देखाबे,
कोनखाने की दाय ठेकाबे
कोथाय गिये शेष मेले ये
भेबेइ ना कूलाय रे ॥

हिन्दी

गाँव पार ये गेरू माटि बाट, ओहो हो, मेरा मन भरमाये ।
ओजी किस ओरी जिया हाथ पसरारे रे भुँईं पे लोटे धूरी पे
मेरा मन भरमाये ॥
वही तो मुझको घर से बाहर लाये रे, पाँव पाँव पाँव छूकर हो
अहा लाज से मरे
वो जो बरजोरी मुझे लेता जाये रे झोंक दे कैसी भाड़ में
मेरा मन भरमाये
वो जो, कहीं बाँक पे क्या धन दरसाये
कहाँ ले जाकर मुझे फंसा दे-रे
जा कर कहाँ अंत होये डगर जियरा सोच न पाये रे
मेरा मन भरमाये ।

बांग्ला

नवकुंदधवलदल सुशीतला,
अति सुनिर्मला, सुख समुज्ज्वला,
शुभ सुवर्ण आसने अचंचला ॥
स्मित-उदयारूण-किरण-बिलासिनी,
पूर्ण सितांशुविभास बिकाशिनी,
नन्दनलक्ष्मीसुमंगला ॥

हिन्दी

नवकुंदधवलदल सुशीतला,
अति सुनिर्मला, सुख-समुज्ज्वला,
शुभ सुवर्ण-आसने अचंचला ॥
स्मित उदयारूण-किरण-विलासिनी,
पूर्ण सितांशुविभास विकासिनी
नंदनलक्ष्मीसुमंगला ॥

बांग्ला

आमार रात पोहालो शारद प्राते ।
वाँशि, तोमाय दिये याबो काहार हाते ॥
तोमार बुके बाजलो ध्वनि,
विदायगाथा आगमनी कतो ये-
फाल्गुने श्रावणे कत प्रभाते राते ॥
ये कथा रय प्राणेर भितर अगोचरे
गाने गाने नियेछिले चूरि करे ।
समय ये तार हल गत,
निशिशेषेर तारार मतो-
शेष करे दाओ शिउलि फुलेर मरण-साथे ॥

हिन्दी

मेरी, रात ढली रे, शरत् सवेरे ।

रात ढली रे , मेरी बंसी,

दे जाऊं मैं तुझे किन हाथों में

मेरी रात ढली रे ॥

तेरे हिय में गूँज-उठी जो ध्वनि

विदाई-स्वागत की कहानी बनी कितनी-

फागुन सावन में, कितने वो रैन-सबेरे

मेरी रात ढली रे ॥

जो बातें इस प्राण में थीं गोपन बनी

गीत-गा-गा, चुराया था चोरी-चोरी ।

पल-पल वो अब बीत-चला

निशा ढलती, तारो जैसे, बीत चला

मिट जाने दो शेफाली सुमन प्रण संग-

मेरी रात ढली रे ॥

स्वरलिपि

	[स र]												
ध प धII	न	स	ग	ग	र	-	स	-	-	-	-	-	॥
मेरी S	रा	S	त	ढ	ली	S	रे	S	S	S	S	S	S
(सं	रं	रस	न	-	सन	प	-	ध	न	स	र)	}
	श	र	Sत	स	वे	SS	रे	S	S	मे	री	S	
	र	ग	-	-	-	स	स	र	-	-	-	-	
	बं	सी	S	S	S	S	बं	सी	S	S	S	S	
	म	म	-	गर	ग	-	र	ग	र	स-	र	रस	
दे	जा	S	ऊँ S	मैं	S		तु	झे	S	किन	हा	SS	

	-	स	न	ध	प	ध	II						
	थो	में	S	“मे	री	S”							
II	स	स	-	स	स	रे	ग	-	ग	म	म	प	
	ते	रे	S	हि	य	में	गुं	S	ज	उ	ठी	S	
	प												
	ग	मप	ध	मप	म	-	-	-	-	-	-	-	
	जो	SS	S	ध्वS	नी	S	S	S	S	S	S	S	
	मप	प											
	विS	म	पम	गर	ग	-	र	ग	-	गर	ग	र	
		दा	Sई	स्वाS	ग	त	की	क	S	हाS	नी	S	
	स	-	र	मग	रग	र	स	-	-	-	-	-	
	ब	नी	S	कित	नीS	S	S	S	S	S	S	S	
	स	ग	ग	र	ग	-	र	ग	-	र	मग	-	
	फा	गु	न	सा	व	न	में	S	वो	कि	तS	ने	
	ध	ध	-	न	न	स	स	-	र	म	ग	र	
	रै	S	न	स	बे	S	रे	S	S	“मेS	री	S”	I [] I
II {	ध	-	म	ध	ध	न	न	स	-	स	स	-	
	जो	S	बा	ते	इ	स	प्रा	S	ण	में	थीं	S	
	स	-	र	र-	सग	-र	स	सा	-	-	-	-	
	गो	S	S	पन	SS	S	ब	नी	S	S	S	S	
	र	र	र	र	र	-	र	स	ग	र	र	-	
	नी	S	त	गा	गा	S	चु	रा	S	या	था	S	

स- चु	न रा	- S	स या	ध था	न S	न या	- S	स री	सर S	ग S	- र चो
स री	- S	- S	- S	- S	- S	{स- पल	स प	स ल	स वो	स अ	र ब
ग त	म च	प ला	ग च	- ला	ध S	प रे	म S	- S	- S	- S	- S
मप निS	म शा	पम SS	गर ढल	ग ती	- S	र ता	ग रों	- S	र जै	ग से	र S
स बी	र S	स त	न च	स ला	- S	स मि	ग ट	ग जा	र ने	ग दो	- S
र शे	- फा	ग S	र ली	ग सु	- S	ध म	ध न	- S	न म	- र	स ण
स सं	- S	र ग	गर “मेS	ग री	र S”	II [] II					

बाग्ला

हिमेर राते ओइ गगनेर दीपगुलिरे
हेमंतिका करल गोपन आँचल धि रे ॥
घरे घरे डाक पाठालो दीपालिकाय ज्वालाओ आलो-
ज्वालाओ आलो, आपन आलो,
साजाओ आलोय धरित्रीरि ।
शून्य एखण फूलेर बागान, दोयेल कोकिल गाहे ना गान,
काश इरे याय नदीर तीरि ।
याक अवसाद विषाद कालो, द्वीपालिकाय ज्वालाओ आलो
ज्वालाओ आलो आपन आलो, शुनाओ आलो जयवाणी रे ॥
देवतारा आज आछे चेये जागो धरार छेले मेये,
आलोय जागाओ यामिनी रे ।
एल आंधार दिन फुरालो, दीपालिकाय ज्वालाओ आलो,
ज्वालाओ आलो, आपन आलो जय करो एइ तामसीरि ॥

हिन्दी

हिम-निशा की दूर गगन के दीपक दल ।
हेमंतिका लुकाई तूने आँचल घेरी, धीरे-धीरे,
घरों-घर में आए संदेशा, दीपमाला ये सजा डालो
जलाओ दीप अपने दीप, सजाओ दीपों से ये धरातल ॥
सूने पड़े अब फलों के बाग दोयल कोयल न गाएं- राग
काश इरे रे, नदी किनारे
जाये थकन, वेदना-मलिन, दीप माला ये सजा डालो,
जलाओ दीप, अपने दीप, सुनाओ दीपों की-
-जयवाणी चल ॥
देवता-सकल नयन खोलें-जागों धरा के लाली-लाल,
आलोक-जगाओ, यामिनी में, आलोक -जगाओ-
धिरे निशा, दिवस ढले, दीप-माला ये सजा डालो,
जलाओ दीप, अपने दीप, जय तेरा हो तम-हो विफल

स्वरलिपि

II	सा हि	रे म	ग नि	ग शा	ग की	- S	ग दू	- र	ग ग	ग- गन	ग के	-म SS
	रेग दीऽ	-रे S	ग प	ग क	ग द	-प ल	ग हे	पम मऽ	- S	ग ति	रेसा काऽ	-नि SS
	सा लु प ग धी	- का पम SS	ग ई रे	म तू ग धी	प ने रेसा रेऽ	- S नि S	II	सा आँ	सग चऽ	- ल	म धे	प S री
II	सां घ	सां रों	गं S	रे घर	रे ये	- S	सां आ	- ये	सां सं	सां दे	सां शा	- S
	सा दी	नि प	रे मा	सां ला	सां ये	- S	नि स	धं जा	सां S	नि डा	धप लोऽ	- S
	पसा जऽ	सा ला	- ओ	सां दी	नि धप	- SS	पसा अऽ	सां प	- ने	सां दी	नि धप	- SS
	पसा सऽ	सांनि जाऽ	- ओ	ध दी	प पों	धप सेऽ	ग ये	पम SS	- ध	ग रा	रेसा तल	नि S
II	सा रू	-प नेऽ	प प	प के	प अ	- ब	प फू	प लों	-म SS	प के	-म SS	-ध SS
	ध प बा	- S	- S	- S	- ग	- S	म दो	म य	- ल	म को	म य	- ल

म	म	ग	रे	-	गम	म	-	-	-	-	ग
न	गा	S	रें	S	SS	रा	S	S	S	S	ग
सा	-	सा	साग	ग	-	-	-	ग	रेम	म	-
का	श	झ	रेंS	रे	S	S	S	झ	रेंS	रे	S
-	-	म	मप	प	-	प	ग	-रे	-	म	ग
S	S	झ	रेS	रे	S	न	दी	कि	ना	रे	S
सां	-गं	रें	रें	रें	-	सां	सां	-	सां	सां	-
जा	-ए	S	थ	क	न	वे	द	ना	म	लि	न
नि	नि	-रें	रें	सां	सा	सां	नि	ध	सा	सां	नि
दी	प	Sमा	ला	रें	S	स	जा	S	डा	लो	S
पसां	सां	-	सां	नि	धप	-	पसां	सां	-	सां	नि
जS	ला	ओ	दी	SS	प	अS	प	ने	दी	SS	प
पसां	सां	-	ध	प	-	प	ग	-प	म	ग	रेसा
सुS	ना	ओ	दी	पों	की	ज	Sय	वा	णी	चल	S
सा	-प	प	प	प	-	प	प	-	प	प	-म
दे	Sव	ता	स	क	ल	न	य	न	खो	लें	SS
प	-म	-नि	धप	-	-	-	-	-	म	म	ग
जा	SS	SS	गोS	S	S	S	S	S	ध	रा	के
ग	रे	-म	म	म	म	म	रे	-	गम	म	ग
ला	ली	S	ला	S	ल	जा	S	SS	गो	S	S

II

ग	म	गे	रे	ग	म	-	-	-	-	-
आ	लो	क	ज	गा	ओ	S	S	S	S	S
ग	ग	-रे	सानि	-	-	सा	-	-	ग	- मप
या	S	मि	नीS	S	S	में	S	S	S	S SS
गप	प	-ग	ग	रे	-	म	-	-	-	-
आ	लो	क	ज	गा	ओ	S	S	S	S	S
सां	सां	ग	गं	रें	रें	-	सां	-	सां	सां -
धि	रे	S	नि	शा	S	दि	व	स	ढ	ले S
सां	नि	-रे	रें	सां	-	सां	नि	ध	-सां	नि धप -
दी	प	Sमा	ला	अ S	व	स	जा	SS	डा	लोS S
पसां	सां	-	सां	नि	धप	-	पसां	सा	-	नि धप -
जS	ला	ओ	दी	SS	प	अS	प	ने	दी	SS प
प	-सां	सां	ध	प	-धप	प	ग	पम	-	ग रेसा नि
ज	Sय	ते	रा	हो	SS	त	मS	हो	वि	फल S

II II

बागला

शीतेर हावार लागल नाचन आम्लकिर एइ डाले डाले ।
पातागुलि शिरशिरिये झरिये दिल ताले ताले ॥
उडिये देवार मातन एसे कांगाल तारे करल शेपे,
तखन ताहार फलेर बाहार रइल ना आर अंतराले ॥
शून्य करे भरे देओआ याहार खेला
तारि लागि रइनू बसे सकल बेला ।
शीतेर परश थेके थेके याय बुझि ओइ डेके डेके,
सब खोवाबार समय आमार हबे करवन कोन् सकाले ।

हिन्दी

शीतल हवा नाचे नाचे नाचे नाचे
आँचले की डाली-डाली ॥
पात-पात सिहर-सिहर, सिहर-सिहर
तालो-ताल झरे झरे ॥
उड़ा ले इस पागलपन में
सूने उन्हें करते चले ।
तब वो बहार फलों की बहार
छूपा न पाई डाली डाली ॥
सूना बना के भर देना, जिसकी लीला ।
उसके लिए हम बैठे सारी बेला
ठंडक भरी छूअन उसकी
रह-रह कर आज पुकारे ।
सब खो जाये अपने वो पल-
कब आये रे कौन सबेरे ?

स्वरलिपि

II	गं	गं	गं	गं	सां	-	सां	-	सां	सरे	सां	-
	शी	त	ल	ह	वा	S	ना	S	चे	नाऽ	चे	S
	प	-	म	मध	प	-	प	-	म	ग	रे	-
	ना	S	चे	नाऽ	चे	S	आँ	S	व	ले	की	-
			ध									॥
	ग	ग	म	म	प	-	-	-	-	-	-	-
	डा	S	ली	डा	ली	S	S	S	S	S	S	S
	मं	प	ध	ध	नि	-	निसं	-	रे	रे	गं	-
	पा	S	त	पा	S	त	सिऽ	ह	र	सि	ह	र
	सांगं	-	गं	गं	गं	-	गं	रे	रे	रे	सां	सां
सि	ह	ऽर	सि	ह	र	ता	लो	S	ता	S	ल	
सां												
नि	नि	-	ध	प	-	II						
इ	रे	S	इ	रे	S							
II {	मं	म	प	ध	नि	-	सां	रे	-	रे	गं	-
	उ	इ	S	ले	इ	स	पा	ग	ल	प	न	में
	-	-	-	-	-	-	गंपं	पं	-	मं	गं	-
	S	S	S	S	S	S	सूऽ	नें	S	उ	न्हें	-

प	गं	पं	पं	मं	गं	-	म	रे	रे	मं-	गं	रेसां	-
र	ह	र	ह	क	र		आ	ज	SPु	का	रे	S	
-	-	-	-	-	-	-}	प	-	प	म	प	-	
S	S	S	S	S	S	S	स	ब	खो	जा	ये	S	
प	म	प	-	पध	प	-	म	प	-	ध	नि	-सा	
अ	प	ने	बोऽ	प	ल		क	ब	S	आ	ये	रे	
सा	गं	गं	रे	सां	-		II II						
कौ	न	स	वे	रे	S								

बांग्ला

पौष तोदेर डाक दियेछे, आय रे चले, आ य आ य आय
डाला ये तार भरेछे आज पाका फसले, मरि हा य हा य हाय ॥
हावार नेशाय उठल मेते-दिग्वधूरा धानेर क्षेत्रे-
रोदेर सोना छड़िये पड़े माटिर आँचले, मरि हाय हाय हाय ॥
माठेर बाँशि शुने शुने आकाश खुशि हलो ।
घरेते आज के रवेगो, खोलो खोलो दुआर खोलो ।
आलोर हासि उठल जेगे धानेर शिषे शिशिर लेगे
धरार खुशि धरेना गो, ओइ- ये उथले मरि, हाय हाय हाय ॥

हिन्दी

सुनो पुकार पूस की ये, आओ चले आओ रे
डलिया उसकी भरी-पूरी पके फसल से अहा फूली न समाये ॥
धान खेत में मस्त पवन, दिग्वधुर्ये हैं मन मगन
धूप में सोना-सोना बरसे, माटी-अंचरा-पे, अहा फूली न समाये ॥
माठ-घाट की बंसी सुन खुशी आकाश छुए, घर में आज कौन रहे रे?
खोलो द्वार खोलो-खोलो खोलो, द्वार खोलो ॥
धान बालियों पर ओस बरसे लगे सुभग ज्योत हंसे - उथलपुथल मंची-धूम,
धरा की खुशी-अहा फूली न समाए ॥

स्वरलिपि

II	ध	स	-	स	स	र	ग	प	प	प	म	प
	सु	नो	S	पु	का	र	पू	S	स	की	ये	S
			रे				रे		॥			
	ग	-	स	र	ग	म	ग	-	-	र	-	गर
	आ	वो	S	च	ले	S	आ	S	S	वो	S	SS
							ग					
	सा	-	-	-	-	-	प	प	प	प-	प	प
	रे	S	S	S	S	S	डलि	या	S	उस	की	S
	म	प	-	ध	न	-	प	प	न	ध	ध	नध
	भ	री	S	पु	री	S	प	के	S	फ	स	लS
						र				र		
	प-	ध	प	म	ग	स	स	-	र	ग	-	र
	सं	S	S	अ	हा	S	फू	ली	S	न	S	स
	स	स	-	-	-	-	II					
	मा	ये	S	S	S	S						
II	प	ध	सं	सं-	सं	-	सं-	नरं	सं	सं	सं	रंसं
	धा	न	खे	Sत	मे	रे	म	स्	त	प	व	न
	सं			सं								
	न	-	सं	न	-ध	न	प	प	ध	ध	न	-
	दि	ग	व	धु	ये	S	हे	म	न	म	ग	न
	-	-	-	-	-	-	प	ध	ध	सं	न	-
	S	S	S	S	S	S	धू	प	मे	सो	ना	S
	ध	प	प	ध-	प	-	प	प	न	ध-	ध	नध
	सो	ना	S	वर	से	S	मा	टी	S	अंच	रा	SS

II {

प	ध	प	म	ग	र	स	-	र	र	ग	ग	र
दे	ऽ	ऽ	अ	हा	ऽ	स	फू	ली	ऽ	न	स	ऽ
स	स	-	-	-	-	II						
मा	ये	ऽ	ऽ	ऽ	र							
ग	प	प	प	प	-	म	प	-	म	प	-	
मा	ठ	धा	ट	की	ऽ	सु	न	ऽ	बं	सी	ऽ	
न	न	न	न	ध	न	निध	प	-	-	-	-	
खु	शी	ऽ	आ	का	श	छू	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	
प	ध	-	सं	न	-	प	-	ध	न	ध	न	
ध	र	ऽ	मे	आ	ज	कौ	ऽ	न	र	हे	ऽ	
धप	-	-	प	प	प	प	प	प	प	प	प	
रे	ऽ	ऽ	खो	लो	ऽ	ढा	ऽ	र	खो	लो	ऽ	
म	प	प	ध	न	प	न	न	न	न	ध	न	
खो	लो	ऽ	खो	लो	ऽ	ढा	ऽ	र	खो	लो	ऽ	
प	प	प	-	-	-	{प	ध	सं	सं	सं	सं	
ध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	धा	न	बा	लि	यों	पे	
सं	नरं	सं	सं-	सं	रंसं	न	सं	-	न	ध	न	
ओ	ऽ	स	ब	सें	ऽ	ल	गे	ऽ	सु	भ	ग	
प	प	ध	ध	न	-	-	-	-	-	-	-	
ज्यो	ऽ	त	हं	से	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	

प	ध	ध	सं	न	न	ध	ध	न	ध	प	प
उ	थ	ल	पु	थ	ल	म	ची	ऽ	धू	ऽ	म
प	न	न	ध	ध	न	प	ध	प	म	ग	रेस
ध	रा	ऽ	की	ऽ	खु	शी	ऽ	ऽ	अ	हा	ऽऽ
स	-	र	र	-	र	स	स	-	-	-	-
फू	ली	ऽ	न	ऽ	स	मा	ये	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

II II

बांग्ला

नूपुर बेजे याय रिनिरिनि ॥
आमार मन कय, चिनि चिनि ॥
गंध रेखे याय मधुवाये माधवी वितानेर छाये छाये,
धरणी शिहराय पाये पाये, कलसे कंकणे किनिकिनि ॥
पारूल शुधाइल, के तुमि गो, अजाना काननेर मायामृग ।
कामिनी फूलकुल वरषिछे, पवन एलोचुल परशिछे,
आंधारे तारागुलि हरषिछे, झिल्लि झनकिछे झिनिझिनि ॥

हिन्दी

नूपुर गुंजन रून् रून् रून्, रून् रून् नूपुर गुंजन
जानी चीन्हीं कहे मेरा मन ॥ नूपुर गुंजन रून् रून् रून् ।
सौरभ द्वारि चले मधुर बयार माधवी वितान की छैया तलै
धरती सिहरे पग पग पे, कलस कंगन छननछनन्
रून् झून् रून् झून् जानी चीन्ही कहे मेरा मन ॥
पारूल सुधे ओरी कौन तुम हो
अंजाने बन की मायामृग हो, कौन तुम कौन हो
कामिनी फूल दल बरसे रे, पवन खुले केश परसे रे
तमघिरे तारादल हरष हंसे इींगुर झनकारे
रिम रिम रिम,
रून् रून् रून् रून् जानी चीन्ही कहे मेरा मन ॥

स्वरलिपि

II	[ध]				॥
	प स सं सं	नि ध प म	म म म ग	गप - - प	
	नू S पु र	गु न ज न	रु न् रु न्	रुन् S S S	
	स स र ग	म प ध न	प स सं नि	धनी न प-	}
	रु न रु न	रु न रु न	नू S पु र	गुन ज नS	
	म म म -	म म म म	म म म ग	गं ग - -	
	जानी ची S	नहीं S क हे	मे S रा S	म न् S S	
	रे -सं सं सं	न ध प म	म म म ग	गप --	
	नू SS पु र	गु न ज न	रु न रु न	रुन S S S	
		प			
{ प म ध प	न ध न सां	सं संगं रे संन	सं - - -		
सौ S र भ	ढा रि च ले	म धुS र बS	या S र S		
		न स			
स - रे ग	म प -ध न	ध न नसं न	धप - - (म)	} I-I	
मा S ध वी	वि ता न की	छैं या त S S	लेS S S S		S
सं न ध प	प मध प म	म म म -ग	म - - -		
ध र ती S	सि हS रे S	प ग प ग	पे S S S		
सम म म -	गम प म म	म म म ग-	गप - - -		
कS ल स S	कS S ग न	छ न न छS	नन् S S S		
स स रे रे	ग र ग ग	ग म प ध	प प म म		
रु न झु न	रु न झु न	जानी ची S	नहीं S क हे		

	सम म म ग मऽ S रा S	ग- प ध न मन S S S	II II		
II	{ स - र - पा S रु ल	र गर ग ग सु धेऽ ओ री	ग म -ध प प कौ नऽ तु म	प म - - - हो S S S	
	(सम म म - अं जा ने S	म म म ग व न की S	र प प -म मा या मृ ग	ध प - ध न हो S S S	
	न ध-सं सं सनि कौऽ न तु S म	ध नध प प) } कौऽ न हो S	{ प -मध का S मी नी	प न ध न फूल ढल	सां
	सं संगं गरें संनि बेऽ र सेऽ SS	सं - - - रे S S S	सं - रे ग प S व न	म प ध न खु ले के श	
	ध न नसं न प र से SS	धप -- (मं) } I-I रु SS S S	सं न ध -प त म धि रे	पम धप प प ताऽ राऽ ढ ल	
	म म म ग ह र ष हं	म - - - से S S S	स -म म म झीं S गुर	म म म म झ न क रे	
	म म म -गे रि म् रि म्	गप - - - रिम् S S S	स स र र रु न् रु न्	ग र ग ग रु न् रु न्	
	ग म प ध ज नी ची S	प प म म नही S क हे	म म म -ग मे S रा SS	प - ध न म न् S S	II II

बांग्ला

एकटुकू छौंआ लागे, एकटुकू कथा शुनि
ताइ दिये मने मने रचि मम फाल्गुनी ॥
किछु पलाशेर नेशा, किछु बा चाँपाय मेशा,
ताइ दिए सुरे सुरे रंगे रसे जाल बुनि ॥
येटुकू काछेते आसे क्षणिकेर फाँके फाँके
चकित मनेर कोणे स्वपनेर छवि आँके ।
येटुकू जाय रे दूरे भावना कांपाय सुरे,
ताइ नियो याय बेला नूपुरे ताल गुनि ॥

हिन्दी

छोटी छोटी ये बातें जरा जरा सी छुअन
वही मेरे अंतर में रचे-रंगे फागुन ॥
कुछ पलाश नशा कुछ चंपक रंग है
वही मेरे सुर-सुर में जाल, रंग-रस भरी बिने
रचें-रंगे फागुन ॥
जब कभी पास वो आएँ, पल भर चुपके-छुपके
चकित हो मन सपने संजोए, मन के कोने में
जरा जो हो जाते दूर यादों में काँपे सुर
यों ही ढल जाती बेला, घुंघरुन ताल गिनगिन
रचें-रंगे फागुन ॥

बाग्ला

यदि तारे नाइ चिनि गो से कि आमाय नेबे चिने
एइ नव फाल्गुनेर दिने-जानि ने, जानि ने ॥
से कि आमार कुँड़िर काने कबे कथा गाने गाने,
पराण ताहार नेबे किने ए इनब फाल्गुनेर दिने
जानि ने, जानि ने ॥
से कि आपन रंगे फुल रांगाबे ।
से कि मर्मे एसे घुम भांगाबे ।
घोमटा आमार नतुन पातार हठात दोला पाबे कि तार,
गोपन कथा नेबे जिने एइ नव फाल्गुनेर दिने
जानि ने, जानि ने ॥

हिन्दी

यदि मैं उनको पहचान न पाऊं क्या वे मुझे पहचान लेंगे ।
नवल इस फागुन के दिन मैं जानूँ ना, जानूँ ना ॥
मेरी कली के कानों में क्या करेंगे बातें वे गीतों-गीतों में-
मोल लेंगे जिया कली का नवल इस फागुन के दिन में-
जानूँ ना, जानूँ ना ॥
क्या वे, अपने रंग में फूल रंगेंगे ।
क्या वे भेद मर्म नींद हरेंगे ।
घूँघट मेरे नये पत्तों के, क्या वे अचानक हिलोर देंगे,
जान लेंगे राज दिल की नवल इस फागुन के दिन में-
जानूँ ना, जानूँ ना ॥

नध न न न	स नध न सं	II	
जाS S गे S	रे SS आ ज		[न सं सं सं]
	II{		ध न न न
			म ह क से
न - सं- -	- - - -		न सं रं रं
म S गन् S	S S S S		मू S छि त
नसं रंसं नध -	(- - - न)I		- - - -I{न-
सS मीS रण S	S S S S		S S S S गुन्
ग			पम पम ग- मप
म - र रे	स - - - }		म प ग म
छ S न्दो S	मे S S S		म धु क र
म			
नध - - न	सं - - -		सं गं गं गं
बं S S S	दे S S S		नि खि ल भु
मं			
मं पं पंमं -	- गं गं गं		गं मं मं -
भू ले रेS S	S S म न		भू ले रे S
न सं - ध	"सं - न सं	II II	
भू S S S	ले S आ ज		

बांग्ला

आज खेला भांगार खेला खेलबि आय,
सुखेर बासा भेंगे फेलबि आय ॥
मिलनमालार आज बांधन तो टुटबे,
फागुन-दिनेर आज स्वपन तो छुटबे
उधाओमनेर पाखा मेलबि आय ॥
अस्तगिरिर आइ शिखरचूड़े,
झड़ेर मेघेर आज ध्वजा उड़े ।
कालवैशाखीर हवे ये नाचन,
साथे नाचुक तोर मरण बाँचन-
हासि काँदन पाये ठेलबि आय ॥

हिन्दी

आज खेल समापन खेल खेलें आओ
आओ हो सब मिल ॥
सुख के नीड़ तोड़े । आओ हो सब मिल
मिलन हार के बंधन जो टूट फागुन बेला के सपने जो छूटे
उड़ जाने को पाँखें मन की खुलें ।
आओ हो सब मिल ॥
अस्ताचल के शिखर चूड़ पे मेहा तूफां के ध्वजा उड़े रे
कालवैशाखी नाचे इनाइन साथ नाचे रे मरण औ जीवन
हसना रोना! अहा हँसना रोना पैरों तले दल
आओ हो सब मिल ॥

स्वरलिपि

प ध II आ ज	रं	न	॥ ध			} I
	{ नोर सं - नो	धी प ग म	(प - - -	(- ध पध)		
	खेऽ ल S स	मा S प न	खे S S S	S ल आ ज		
	प - प ध	ध ध	धन नर सं-	न ध प ध		
	खे S ल खे	लें S आ ओ	आऽ वोऽ होऽ	स ब मि ल		
	रं	न	॥ ध			
	{ नरं सं सं न	ध प ग म	प - - -	- - - -		
	खेऽ S ल स	मा S प न	खे S S S	S S S ल		
	{ न न - न	न - नध न	(नसं - - -	न ध प म)		
	सु ख के S	नी S इ तो	इऽ S S S	S S S S		
	स रे	ध	रे			
	{ नसं - न रं	सं नध प ध	न रं सं -	न ध प ध		
	इऽ S S तो	इऽ SS आ ओ	आ ओ हो S	स ब मि ल		
				II		

-----	II	{ गं गं - गं	गं - गं -	गंपं मं गं रं	नी - सं -
SSSS		मि ल न हा	S र के S	वंS धन् जो S	टू S टे S
		न सं - न	सं न रंसं -	म- प - ध	ध न ध - }
		फा गु न बे	त्ता S कीS S	सप न S जो	छू S टें S
		रे	सं		
		न न रें सं	न ध पम गम	प - - -	- - - -
		ठड जा S ने	को S अS S	हा S S S	S S S S
		गं- ग - गं	गंपं "गं रं सं-	स नी - रें सं	स ध ध
		ठड जा S ने	कोS S पाँ S	खें S म न	नी ध प ध की S खु लें
		न रें रेंसं -	न ध "प ध	II	
		आ ओ हो S	स ब मि ल		
-----	II	{ स - स स	रे - ग -	ग रे ग - ग	गम - - -
SSSS		आ स् ता S	च ल के S	शि ख र चू	इ पे S S
		म प - प	प - म ग-	म म ध प	ध - - - }
		मे हा S तु	फाँ S की SS	ध्व जा S उ	डे S रे S
				प	रें
		गं - गं -	गं - गं -	गंपं मं गं रें	न - सं -
		का ल वै S	शा S खी S	नाS S चे झ	ना S झ न
		सं			ध न
		न सं - न	सं न रेंसं -	म प - ध-	प धन ध - }
		सा S थ ना	चे S रेS S	म र ण और	जी SS व न्
		रें			
		न- न रें सं	न ध पम गम	प - - -	- - - -
		हस ना S रो	ना S अS SS	हा S S S	S S S S

				म		स		रं		ध					
गं	गं	-	गं	गं	-	गं	गं	रेंसं	-	न	रं	सं	नध	प	ध
हंस	ना	S	रो	ना	S	पैS	SS	रोS	S	त	ले	द	लS	आ	ओ
			रे	सं		ध									
न	रें	सं	-	न	ध	प	ध	II	II						
आ	ओ	हो	S	स	ब	मि	ल								

बांग्ला

ओगो बधू सुंदरी, तुमि मधुमंजरी,
 पुलकित चंपार लहो अभिनंदन
 पर्णेरे पात्रे फाल्गुनरात्रे मुकुलित मल्लिका-माल्येर बंधन ।
 एनेछि वसंतेर अंजलि गंधेर,
 पलाशेर कुंकुम चांदिनिर चंदन
 पारुलेर हिल्लोल, शिरीषेर हिन्दोल, मंजुल वल्लरी बंकिम कंकण
 उल्लास उतरोल वेणुवनकल्लोल कपित किशलये मलयेर चुंबन ।
 तव आँखि पल्लवे दियो आंकि बल्लभे
 गगनेर नवनील स्वपनेर अंजन ॥

हिन्दी

ओरी वधु सुन्दरी, तुम मधुमंजरी
 पुलकित चंपक लो अभिनंदन ।
 पर्ण-पात्र ये फागुन-रात में
 मुकुलित मल्लिका हार का बंधन ॥
 वासंती की लोरी सौरभ अंजली भर
 पलाश-कुमकुम चांदनी-चंदन
 पारुल पे हिलोर, शिरीष- हिंडोला
 मंजुल-बल्लरि बांधे कंगना ॥
 उल्लास-उतावल वेणुवन-कल्लोल
 तव आँखि-पांतों पे आंको हिय-वल्लभ
 नभ का नभनील स्वपन-काजल ॥

स्वरलिपि

II

म	म	ग	म	प	-	म	प	नध	-	-	-	-	-	-	-	-	-
ओ	री	व	धु	सुं	S	S	द	रीS	S	S	S	S	S	S	S	S	S
प	ध	ध	प	म	प	ध	प	मग	-	-	-	-	-	-	-	-	-
तु	म	म	धु	मं	S	S	ज	रीS	S	S	S	S	S	S	S	S	S
ग	म	ग	र	ग	-	म	-	म	प	म	ग	म	न	न	न	न	न
पु	ल	कि	त	चं	S	प	क	लो	S	अ	भि	नं	द	द	द	न	न
न	ध	प	मग	म	प	-	म	प	नध	-	-	-	-	-	-	-	-
ओ	री	व-	धू	सुं	S	S	द	रीS	S	S	S	S	S	S	S	S	S
न	-	सं	सं	रे	-	सं	-	न	-	सं	सं	नसं	न	ध	प	प	प
प	S	र्ण	पा	S	त्र	ये	S	फा	S	गु	न	राS	त	मे	S	S	S
प	ध	न	ध	प	-	ध	प	म	-	प	प	पध	प	म	ग	ग	ग
मु	कु	लि	त	म	S	लि	का	हा	S	र	का	बंS	S	ध	न	न	न
ग	ग	म	म	प	-	म	प	नध	-	-	-	-	-	-	-	-	-
ओ	री	व	धु	सुं	S	S	द	रीS	S	S	S	S	S	S	S	S	S
ध	ध	ध	ध	न	-	सं	-	र	-	रें	स-	न	-	सं	-	-	-
ला	S	रे	व	सं	त	की	SS	सौ	S	र	भअं	ज	ली	भ	र	र	र
सग	ग	ग	रें	गं-	-	ग	गं	सं	र	गं	गं	रेंग	र	सं	सं	सं	सं
पS	ला	S	श	कुंम	S	कु	म	चाँ	S	द	नी	चंS	S	द	न	न	न
संमं	मं	मं	मं	मं-	-	पं	मं	गं	रें	गं	रें	गं	रें	गं	मं	मं	मं
पाS	रू	ल	पें	हिS	S	ल्लो	रें	शि	री	S	ष	हिं	S	डो	ला	ला	ला

ग - ग	गं	रें - रें	रें	सं - सं	सं	न - न	न
मं S	जु ल	व S	ल्ल री	बाँ S	धे	क S	ग ना
ध प	मग ग	प - ग	प	नध - - -	- - -	- - -	-
ओ री	वS धु	सुं S	S द	रीS S S	S S S	S S S	S
{ स म	म म	म प	मप ध	प म ग	रे	ग रे	ग म
उ S	ल्ला स	उ ता	वS ल	वे णु	व न	क S	ल्लो ल
ग - रे	स	स रे	ग म	ग म ग	ग	र - स	स
का S	पे S	कि स	ल य	चू में S	जो	म S	ल य
ध ध	न सं	सर - -	न	सं - - -	- - -	- - -	-
तौ S	आँ खि	पाS S	S तौ	पे S S S	S S S	S S S	S
ध ध	न सं	संग - र	सं	ध न सं	र	र न सं	-
आँ को	हि य	वS S	ल्ल भ	आँ S S S	को S S S	को S S S	S
स ग	गं	र र	सं सं	न सं न	न	ध - प	प
न भ	का S	न भ	नी ल	स प ने	का	काS ज	ल
म ग	म म	प - म	प	नध - - -	- - -	- - -	-
ओ री	व धु	सुं S	S	रीS S S	S S S	S S S	S

बागला

चले याय मरि हाय बसंतेर दिन ।
दूर शाखे पिक डाके विरामविहीन ॥
अधीर समीर-भरे उच्छ्वसि बकुल झरे,
गंध-सने हल मन सुदूरे विलीन ।
पुलकित आम्रवीथि फाल्गुनेरइ तापे,
मधुकरगुंजरने छायातल काँपे ।
केन आजि अकारणे सारा बेला आनमने
पराणे बाजाय वीणा के गो उदासीन ॥

हिन्दी

चला जाये रे ओरी हाय, बीत जाये बासंती ये दिन बीते हाय ॥
दूर शाखों पे, पिक कूके विराम विहीन कूके हाथ चला जाय ॥
अधीर समीरण-में उच्छसि हो वकुलझरे चंचल रे,
महक-संग ये मन खोए सुदूर खोये ओरी हाय ।
ये चला जाए ...

पुलकित-आम्रवीथि फागुन की मीठी तपन ।
मधुकर-गुन-गुन-गुन, काँपे ये छाया-वन,
आज क्यों अकारण ही सारी बेला सूधि भूलूँ
सारी बेला प्राण-वीणा बजाए कौन, उदासी,
ओरी हाय, चला जाये वासंती यह दिन बीता जाये ॥

स्वरलिपि

ध न॥	नरं	-	-	-	-	-	सं	न	सं	-	-	-	-	-	स	म
च ला	जा	S	S	S	S	S	ये	S	रे	S	S	S	S	S	ओ	री
	म	-	-	-	-	-	म मग	गप	-	-	-	-	-	-	-	-
	हा	S	S	S	S	य	बी ताS	जाये	S	S	S	S	S	S	S	S
	प	-	पम	ध	ध	-	ध न	न सं	ध	न	सं	-	-	-	-	-
	वा	S	संS	S	ती	S	ये S	दिन्S	बी	ता	जाये	S	S	S	S	S

न	ध	ध	न	नरं	-	-	-	-	-	सं	न	सं	-	-	-	-
S	S	च	ल	जा	S	S	S	S	S	ये	S	रे	S	S	S	S
सरं	-	-	-	सं	न	सं	-	न	ध	धन	न	प	-	म	-	-
दू	S	S	र	शा	खो	पे	S	S	S	पि	क	कू	S	के	S	S
स	र	ग	ग	म	-	स	म	म	-	-	-	-	-	म	मग	-
वि	रा	म	वि	ही	न	कू	के	हा	S	S	S	S	य	च	ला	S
गप	-	-	-	-	-	-	-	प	-	पम	ध	ध	-	ध	न	-
जा	S	S	S	S	S	ये	S	वा	S	सं	S	ती	S	ये	S	S
न-	सं	ध	न	सं	-	-	-	न	ध	ध	न	नरं	-	-	-	-
दिन	S	बी	ते	हा	S	S	S	य	S	च	ला	जा	S	S	S	S
-	-	सं	न	सं	-	-	-	म	ध	ध	ध	न	-	न	न	-
S	S	ये	S	रे	S	S	S	अ	धी	र	स	मी	S	र	ण	-
सं	-	सं	रं	रं	ग	-	सं	न	सं	रं	सं	न	ध	ध	न	-
मे	S	उ	S	च्छु	सि	हो	S	व	कु	ल	इ	रे	S	चं	S	S
न	-	सं	-	-	-	-	-	सं	मं	मं	मं	मं	-	मं	मं	-
च	ल	रे	S	S	S	S	S	म	ह	क	सं	S	ग	ये	S	S
मंपं	मं	गं	-	-	-	गं	-	गं	मं	मं	गं	रंसं	-	स	म	-
म	S	खी	S	ये	S	S	सु	दू	S	र	खी	ये	S	ओ	री	-
म	-	-	-	-	-	म	मग	गप	-	-	-	-	-	-	-	-
हा	S	S	S	य	S	च	ला	जा	S	S	S	S	S	ये	S	S

प - पम ध	ध - ध न	न सं ध न	सं - - -
वा S संS S	ती S य ह	दिन् S बी ता	जाये S S S
न ध ध न	नरं - - -	- - सं न	सं - - -
S S च ला	जाS S S S	S S ये S	रे S S S
सं सं न ध	प - म ग	म - म -	स - र -
पुS ल कि त	आ S प्र वि	थी S फा S	गुन S की S
ग - ग -	म - - -	म प प प	प - ध न
मी S ठी त	पन S S S	म धु क र	गु न गु न
न - ध - ध न	पध प प ध	ध प धन - ध -	- - (न) } I -
गु न S S	काँ S पे S	छा S या S	व न S S
म ध ध न	न - सं रं	रं न - सं -	न ध ध न
आ ज क्यो S	अ S का S	र ण ही S	S S सा री
न - सं -	- - - -	सं न सं रं सं	न ध ध न
बे S ला S	S S S S	सु धि भू S	लूँ S सा री
न - सं -	- - - -	सं मं मं मं	मं - म -
बे S ला S	S S S S	प्रा S ण वी	णा S S ब
मं - मं -	मंमं मं गं -	गं - गंमं गं	रंसं - स म
जा S ये S	कौS न उ	दा S S S	सीS ओ री
म - - -	- - म मग	गप - - -	- - - -
हा S S S	S य च लाS	जाये S S S	S S S S

प - पम ध	ध - ध न	न सं ध न	सं सं - -
वा S संS S	ती S य S	दि Sन बी ता	जा S S S
न ध ध न	नरं - - -	- - सं न	सं - - -
ये S च ला	जाS S S S	S S ये S	रे S S S

II II

* * *

बांग्ला

नाइ नाइ भय, हबे हबे जय, खुले याबे एइ द्वार
जानि जानि तोर बंधनडोर छिंड़े याबे बारे-बार ॥
खने खने तुइ हाराय आपना सुसिनिशीथ करिस यापना
बारे बारे तोरे फिरे पेटे हबे विश्वेर अधिकार ॥
स्थले जले तोर आछे आह्वान, आह्वान लोकालये
चिरदिन तुइ गाहिबि ये गान सुखे दुखे लाजे भये ।
फूलपल्लव नदीनिर्झर सुरे सुरे तोर मिलाइबे स्वर
छंदे ये तोर स्पंदित हबे आलोक अंधकार ॥

हिन्दी

नहीं करो भय, जय होगी जय खुल जाएंगे द्वार ।
जान गए तेरे बंधनडोर टूटेंगे बारबार ॥
छन ही छन तू आप खोए- सोकर ही रातें गंवाए,
बार-बार तुझे फिर पाना है, विश्व का अधिकार ॥
स्थल और जल से तेरी पुकार, पुकार लोकालय से
हरदम तू गाए जा गीत सुखदुख लाज भय में-
फूल-पल्लव नदी निर्झर सूर में तेरे मिलार्येंगे सुर,
छन्द में तेरे दम भरेंगे आलोक-अंधकार ॥

स्वरलिपि

II	सं ग - - - नहीं S S क	र - सां - रो S भ य	सां रे -सां सां जS य हो S	निसां - नि -ध गीS S ज यS
	प प -नि ध खु ल जा S	ध -प मग -म ए SS गेS SS	प - - - द्धा S S S	- - - - र S S S
	सा रे ग म खु ल जा ए	प ध धसां ध गे S द्धाS र	गं - - - न हीं S क	र - सां - रो S भ य
	सां र - सां जाS न S ग	सांरे - सां - एS S ते रे	सां र नि नि बं S ध S	नि ध ध प न S डो र
	प प नि ध टू S टें S	ध -प मग म गे Sबा SS र	प - - - बा S S S	- - - - S S S र
	मं मं ग र टू S टें गे	र सां सां नि बा र बा र	सां -गं - - न हीं S क	र - सां - रो S भ य
	ध ध - ध क्ष ण ही S	नि - सा - क्ष ण तू S	सां र र - आS S S प	सा नि सा - खो S ये S
	सां -रे रे रे सो S क र	रे - - - ही S S S	सां सां -गं - रा तें SS ग	रे रं सां - वा S ये S
	मं मं - मं बा S र बा	मं मं पं मं S र तु झे	रे ग - रे फि र पा S	ग - र ग ना S है S
	गं मं - गं वि S S श्व	गं -र र रं का SS अ धि	सां -ध -नि का SS S र	सां गं - - न हीं S क

र - सां -	- - - -	स रे म म	म - म -
रो ऽ भ य	ऽ ऽ ऽ ऽ	स्थ ल औ र	ज ल में ऽ
म म ग -प	म - - -	स -म म -	- - म म
ते री ऽ पु	का ऽ र पु	का ऽऽ ऽ ऽ	ऽ र लो का
म ग प म-	- - - -	ग म मध -	नि - सां -
ल य से -	ऽ ऽ ऽ ऽ	ह र ढऽ म	तू ऽ ऽ ऽ
नि निगं रं सां	नि - -ध -	प पसां नि ध	प नि ध -
गा येऽ जा ऽ	गी ऽ ऽऽ त	सु खऽ दु ख	ला ज भ य
प - - -	- - - -	ध - - ध	नि - सां सा
में ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	फू ऽ ऽ ल	प ल ल व
सारं रं - सां	नि - सां -	सार र -र	- र रें -
नऽ दी ऽ ऽ	नि र झ र	सुर में ऽऽ	ते ऽ रे ऽ
सां सां -गु गं	र - सां -	मं - - मं	मं - मंपं मं
मि ला ऽऽ ये	गे ऽ सु र	छं ऽ ढ में	ते ऽ रेऽ ऽ
रें - - रें	गं - रें ग	गंमं गं - गं	सां - गं रें
ढ म ऽ भ	रें ऽ गे ऽ	आऽ लो ऽ क	अं ऽ ऽऽ ध
			॥
सां - ध नि	साग - - -	रे - सा -	- - - -
का ऽ ऽ र	नहीं ऽ ऽ ऽ	क रो भ य	ऽ ऽ ऽ ऽ

II II

रे सा-II
S S S

- - रे	- ग -	रेम ग -रे	सा स -
- - सौ	- र भ	भ S रे	S रे S
- - रे	- ग -	रेग मग रे	सा - -
S S नि	दि या S	हाS SS S	रे S S
- सा -	सा सा -लि	II	
S S S	ओ हो S		
{ नि - नि	- नि -	नि - -	- - प
S S में S हूं	S स S	दा S S	S S S
नि - सां	निरे सां -लि	रं	
अ S ट	Sल रा SS	सां - -	- - -
सां रे सां	- नि ध	ही S S	S S S
ग ह री	S चा S	सां	
प ध मप	ध पम प	नि - -	- - धप
छू पी छुड	पा ईS S	S S S	ल मे री
	म	मग - -	- - - }
सां - रे	- रेसां रे	SS S S	S S S
रा S ह	S SS च		
गं - गं	मं रे -सां	मं	
न S ए	S प SS	गं - -	- - -
सा रे सां	- नि ध	लूं S S	S में S
मे S री	S चा S	रे- सां- -नि	सां - -
		तोऽ SS Sसं	S ग S
		नि - -	- ध प
		S S ल	जै से S

II
ओ हो

प	ध	मप	ध	पम	प	ग - -	रे	सा-	नि
फू	S	लौS	S	कीS	S	धा रा S	ओ	होS	S
रे	-	ग	-	ग	रे	म	रे	सा	-
न	दि	या	S	की	S	ग - -	धा	S	र
रे	ग	रग	म	ग	रे	वे S ग	सा	सां	-
म	त	वाS	S	ली	S	सा - -	सां	सां	-
सां	-	सां	-	सां	रे	चा S ल	रा	ह	S
बा	S	ट	S	घा	S	सां	ध	प	धप
म	-	प	धप	म	प	नि - -	फि	रें	SS
ब	ह	की	SS	ब	ह	ट S S	(रे	सा - -)	I रे सा -I
नि	-	नि	-	नि	-	म	ओ	हो S	SSS
मे	री	S	S	य	ह	ग - -	-	-	-
नि	-	सां	रे	सां	नि	की S S	-	-	-
क	S	ही	न	जा	S	नि - -	-	-	-
सां	रें	सां	-	नि	ध	चा S S	-	-	-
आ	S	लो	S	क	धा	सां - -	-	ध-	प
प	-ध	मप	ध	पम	प	ये S S	-	में	ज्यों S
प्रा	SS	णS	S	SS	S	सं	-	-	-
सां	-	रे	रे	रेंसां	रें	नि - -	-	-	-
आ	S	का	श	जाS	S	रा S S	S	S	S
						म			
						ग - -			
						हे S S			
						मं			
						गं - -			
						ने S S			

रे						सां												
गं	-	गं	मं	रे	सां	रे-	सां-	नि	सां	-	-	सां	-	-				
आ	S	नं	S	S	द	उस	की	S	S	S	S	S	S	S				
सां	रे	सां	-	नि	ध	नि	-	-	नि	ध	प							
जा	S	ने	S	नि	S	शा	S	S	के	S	ये	S						
प	ध	मप	ध	पम	प	गं	-	-	रे	सां	नि							
नी	S	Sr	व	ता	S	रे	S	S	ओ	हा	S							

II II

बांग्ला

यदि तोर डाक शुने केउ ना आसे तबे एकला चलो रे ।
 एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो एकला चलो रे ॥
 यदि, केउ कथा ना कय ओरे ओरे ओ अभागा,
 यदि सबाइ थाके मुख फिराये, सबाइ करे भय
 तबे परान खुले
 ओ तुइ मुख फुटे तोर मनेर कथा एकला बलो रे ॥
 यदि सबाइ फिरे याय, ओरे ओरे ओ अभागा,
 यदि गहन पथे याबार काले केउ फिरे ना चाय-
 तबे पथेर कांटा
 ओ तुइ रक्तमाखा चरणतले एकला दलो रे ॥
 यदि आलो ना धरे ओरे ओरे ओ अभागा,
 यदि झइ बादलेर आँधार राते दुआर देय घर
 तबे बजानले
 आपन बुकेर पाँजर ज्वालिये नियो एकला ज्वलो रे ॥

हिन्दी

जो तेरी पुकार पे कोई न आए, तो अकेले चलो रे
 अकेले चलो, अकेले-चलो, अकेले चलो, अकेले चलो रे ॥
 यदि कोई बाते न करें, ओरे ओरे ओ अभागे,
 यदि सभी तुझसे मुंह फेर लें और सभी डरें, तो प्राण खोल के
 ओ तू मन की बातें मन ही मन अकेले बोलो रे ॥
 यदि सब लौट ही चलें, ओरे ओरे-ओ अभागे
 यदि राह गहन चलते कोई गौर न करे, पथ के काँटे-
 अपने लहु-लोहित चरण तले, अकेले दलो रे ॥
 यदि कोई दिया न धरे, ओरे ओरे ओ अभागे
 यदि बादल और तूफानी रातों में द्वार बंद करें, तो वज्र-अनल में
 तू हृदय-पंजर आप जलाए, अकेले चलो रे ॥

स्वरलिपि

न न न - II जो ते री पु	{ सा - सा	रे रे -	रे	प - -	म - -
	का S र	पे को ई	न S S	आ S S	
	गम -ग -	रे सा -	रे - ग	ग रे -गरे	
	येS S S	तो S अ	के S अ	च लो SS	
	(सा - न	न न -)	सा - -	- म म	
	रे S जो	ते री पु	रे S S	S तो अ	
	{ म - प	प प -	म	प	
	के S ले	च लो अ	प [न न ध	
			के S ले	च लो अ	
	प - म	रे	ग सा -	रे - ग	ग रे गरे
	के S ले	च लो अ	के S ले	च लो SS	

	(सा रे म म प -)}	सा - न	न न -	II
	रे S S तो अ S	रे S "जो	ते री पु"	
म म II य दि	{म म प प धन ध को ई बा तें Sना S	प प - क रे S	(- सा सा S.अ रे	
	रे म म प ध नि ओ S S रे S S	ध सा न ओ S अ	ध प धप) भा ने SS	}I
I- प ध I S य दि	सां- सां - सब ही S	सा सा रे तुझ से S	सां - न मुं ह फे	ध प धप र लें SS
	म प - औ र स	प धन ध भी SS ड	प - - रे S S	- सा सा S य दि
	रे म - स भी S	प ध न तुझ से S	ध सा न मुं ह फे	ध प धप र लें SS
	म प - औ र स	प धन ध भी SS ड	प - - रे S S	- म म S तो S
	प प न प्रा ण खो	ध न - ल के S	- - - S S S	ध प म ओ तू S
	{म - प म न की	न न -ध बा तें SS	प म - म न ही	ग- सा - मन S अ
	रे - ग के S ले	ग रे -गरे बो लो SS	(सा - - रे S S	- म म) S ओ तू }

	सा - न रे S "जो	न न - ते री पु"	II	
म म II य दि	{म प - स ब S	प धन ध- लौ Sट हीच	प - - लें S S	(- सा सा S अ रे
	रे -म - ओ SS S	प ध न रे S S	ध सा न ओ S अ	ध प धप भा गे SS
I - प ध I S य दी	सा सा सा रा S ह	सा सा रे म ह न	सा न - च लते S	ध प धप को S ईS
	म - प गौ S र	प धन -ध न SS Sक	प - - रें S S	- सा सा S य दि
	रे म - रा S ह	प ध न ग ह न	धसां न - च लते SS	ध प धप को ई SS
	म - प गौ S र	प धन ध न SS क	प - - रें S S	- म म S तो S
	प प न प ध के	ध न - कां टे S	- - - S S S S	ध प म अ प ने
	म - प लो S हू	"न न ध लो हि त	प म - च र ण	ग सा - त ले अ
	रे - ग के S ले	ग रे गरे द लो SS	(सा - - रे S S	- म S ओ तू

	सा - न	न	न	-	II			
	रे S जो	ते	री	पु				
म म II {	म प -	प	धन	ध	प - -	(- सा सा		
य दि	दि या S	न	SS	ध	रे S S	S अ रे		
	रे म म	प	ध	न	धसा न -	ध प धप)}		
	ओ S S	रे	S	S	ओS अ S	भा गे SS		
I - प ध I	"सां - सां	सां	सां	रे	धसां न -	ध म धप		
S य दि	बा द ल	औ	र	तू	फाS नी S	रा तों मेंS		
	म प -	प	धन	ध	प - -	- सा सा		
	द्धा S र	बं	SS	द	क रें S	S य दि		
	रे म म	प	ध	न	धसा न -	ध प धप		
	बा द ल	औ	र	तू	फाS नी S	रा तों मेंS		
	म प -	प	धन	धा	प - -	- प म		
	द्धा S र	बं	SS	द	क रें S	S तो S		
	प - न	ध	न	-	- - -	ध प म		
	ब ज्ञ S	अ	न	ल	S S S	में तू S		
{	म प -	न	न	धप	प म म	ग सा सा		
	ह द य	पं	ज	Sर	आ प ज	ला ये अ		
	रे - ग	ग	रे	गरे	(सा - -	- म म)}		
	के S ले	ज	लो	SS	रे S S	S ओ तू		
	सा - न	न	न	-	II II			
	रे S "जो	ते	री	पु"				

बांग्ला

आलो आमार, आलो ओगो, आलो भुवन-भरा,
 आलो नयन-धोया आमार, आलो हृदय-हरा ॥
 नाचे आलो नाचे, ओ भाइ, आमार प्राणेर काछे
 बाजे आलो बाजे, ओ भाइ, हृदयवीणार मांझे
 जागे आकाश, छोटे बातास, हासे सकल धरा ॥
 आलोर स्रोते पाल तुलेछे हाजार प्रजापति ।
 आलोर देउये उठलो नेचे मल्लिका मालती ।
 मेघे मेघे सोना, ओ भाइ, याय ना मानिक गोना
 पाताय पाताय हासि, ओ भाइ, पुलक राशि राशि
 सुरनदीर कूल डूबेछे सुधा निझर-झरा ॥

हिन्दी

आलोक तू है आलोक मेरा, आलोक भरे भुवन ।
 आलोक नैन धोये मेरा, करे हृदय-हरण ॥
 नाचे आलोक, नाचे ओ-भाई घेरे प्राण मेरे ।
 गर्जे आलोक बरजे ओ भाई मन-वीणा झंकारे
 जागे आकाश धाए वातास हंसे धरा जीवन ॥
 आलोक-धारा की पतवार ऐसी हजारों तितलियाँ ।
 नाचे आलोक लहरों पर मालती-मल्लिका ।
 मेघ से सोना-सोना बरसे- रे भाई मणि अनगिने-
 पात-पात हंसे रे भाई खुशी अझर झरे ।
 तीर डूबे, सुरसरि की-निझर सुधातरंग ॥

स्वरलिपि

II	स	स	-	स	स	-	र	र	-	स	र	-	II
	आ	लो	क	तू	है	S	आ	लो	क	मे	रा	S	
												॥	
	ग	ग	ग	म	प	-	ध	न	-	-	-	-	
	आ	लो	क	भ	रे	S	भु	व	न	S	S	S	

	न ध न - आ लो क	न सं सं न - नै य न	न ध प क्षप धी ये SS	प म ग म मे रा S
	र ग र - क रे S	ग ग प उ द य	प म ग - ह र ण	- - - ” S S S
II	प प - ना चे S	ध ध - आ लो क	न न - ना चे S	न न - ओ भा ई
	प प - घे रे S	ध न - प्रा S ण	न सं - मे रे S	- - - S S S
	सं गं गं - गर जे S	गं गं - आ लो क	गं म मं गं - ब जे S प रे रं सं - का रे S	रं रं - ओ भा ई - - - S S S
	सं गं गं - जा गे S	ग रं रं - आ का श	सं सं - धा ये S	न न - वा ता स
	ध ध - हँ से S	ध प प - ध रा S	म ग - जी व न	- - - S S S
II {	गप प - आ लो क	प म प म ध रा की	प न न प त वा	न ध ध - रे सी S
	प म - हा जा रों	ग र गम ति त लिS	म ग - याँ S S	- - - S S S

II

सग ग -	ग ग र	र प प	पम म -
ना चे ऽ	आ लो क	ल ह रों	ऽ पे ऽ
म	ग		
ग - ग	र र म	म ग -	- - - } ऽ ऽ ऽ
मा ऽ ल	ती म ल	लि का ऽ	
		ध	
प प -	ध ध -	न न -	न- न प
मे घ से	सो ना ऽ	सोऽ ना ब	रसे भा ई
प प -	ध न -	न- सं- -	- - -
झ रे ऽम	णि अ न	गिऽ न ऽ	ऽ ऽ ऽ
		गं म	
संगं गं -	गं गं -	मं गं -	रं रं -
पाऽ ऽ त	पा ऽ त	हं से ऽ	रे भा ई
सं न न	प ध -	धरं सं -	- - -
खु शी ऽ	अ झ र	झाऽ रेऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ
	गं	रं	
संगं गं गं	रं रं -	सं - सं	न न -
तीऽ ऽ र	हू बे ऽ	सु र स	री की ऽ
ग		प	
ध ध -	प पम प	म ग -	- - -
नि ई र	सु धा ऽ	त रं ऽ	ऽ ऽ ग

II II

बाग्ला

मम चित्ते निति नृत्ये के ये नाचे
ताता थैथै, ताता थैथै, ताता थैथै
तारि संगे कि मृदंगे सदा बाजे
ताता थैथै ताता थैथै ताता थैथै ॥
हासि काग्ला हीरा पान्ना दोले भाले
काँपे छंदे भालो मंद ताले ताले ।
नाचे जन्म, नाचे मृत्यु पाछे पाछे
ताता थैथै, ताता थैथै, ताता थैथै ॥
कि आनंद कि आनंद कि आनंद
दिवारात्रि नाचे मुक्ति, नाचे बंध
से तरंगे छुटि रंगे पाछे पाछे
ताता थैथै, ताता थैथै, ताता थैथै ॥

हिन्दी

मेरे चित्त में नित नृत्य ये
कोई नाचे, ताता थैथै थैथै
सोई संगे मिरदंग ये
सदा बाजे रे ताता थैथै थैथै ॥
रोना-हंसना हीरा-पान्ना झूले भाले
काँपे छंद में बुरा -भला ताले-ताले
नाचे जन्म नाचे मरण पाछे-पाछे ताता थैथै-थैथै ॥
हो आनंद, हो आनंद, हो आनंद
दिन राति नाचे मुक्ति नाचे बंधन
वो तरंग में मन-मौज में
धाए पाछे ताता थैथै थैथै ॥

स्वरलिपि
(ताल कश्मीरी खेमटा धि ने ना । धा ति ना)

स स II { मे रे	स - रे चि त मे	- रे रे ऽ नि त	रे - ग नृ त्य ये	- रे स ऽ को ई
	रे - प ना ऽ चे	- म ग ऽ ता ता	प म प थे ई थे	म ग रे ई ता ता
	म ग म थे ई थे	ग रे सा ई ता ता	रे ग रे थे ई थे	(स स) } { न न ई म रे सो ही
	न - सं सं ऽ ने	- न न ऽ मि र	न - सं दं ग ये	- न न ऽ स ढा
	नी - सं ब जे रे	प प प ऽ ता ता	प ध नो - नो थे ई थे	ध प प ई ता ता
	ध प ध थे ई थे	प म ग ई ता ता	म प - म थे ई थे	- } { स स ई रो ना
	सा - रे हं स ना	- रे रे ऽ ही रा	रे - ग प न ना	- रे स ऽ झू ले
	ग - रे भ ऽ ले	- ग ग ऽ कां पे	ग - म छं ढ ऽ मे	- ग ग ऽ बु रा
	ग - म भ ऽ ला	- ग रे ऽ ता लों	ग - र ता ऽ लों	- } { प प ऽ ना चे

प - प	- प प	प - प	- प ध
ज ऽ न	म ना चे	म ऽ र	ण पा छे
न - स	प प प	प न	ध प प
पा ऽ छे	ऽ ता ता	थे ई थे	ई ता ता
ध प ध	प म ग	प - म	- } { प प
थे ई थे	ई ता ता	थे ई थे	ई हो आ
प - प	- प प	प - प	- प ध
नं ऽ द	ऽ हो आ	नं ऽ द	ऽ हो आ
न - सं	- सनं सं	रं - रे	- रेंसं रं
नं ऽ द	ऽ दिऽ न	रा ऽ ति	ऽ नाऽ चे
ग रं गं	- रे सं	रे न सं	- } { न न
मु क ति	ऽ ना चे	बं ऽ ध	न वो त
न - सं	- न न	न - सं	- न न
रं ग में	ऽ म न	मौ ज मे	ऽ धा ये
न - स	प प प	प न	ध प प
पा ऽ छे	ऽ ता ता	थे ई थे	ई ता ता
ध प ध	प म ग	प - म	- } स स
थे ई थे	ई ता ता	थे ई थे	ई मे रे

II II

बागला

चोख ये ओदरे छुटे चले गो
 धनेर बाटे, मानेर बाटे, रूपेर हाटे, दले दले गो ॥
 देखबे बले करेछे पण, देखबे कारे जाने ना मन
 प्रेमेर देखा देखे यखन चोख भेसे जाय चोखेर जले गो ॥
 आमाय तोरा डाकिस ना रे
 आमि याब खेयार घाटे अरुप- रसेर पारावारे ।
 उदास हावा लागे पाले, पारेर पाने याबार काले
 चोखदुटोरे डुबिये याब अकूल सुधा-सागर-तले गो ॥

हिन्दी

आँखें उनकी धाएं चंचल रे-
 धनरी राहों पे, मानरी राहों पे, रूपमेले में, ये भीड़ चली रे ॥
 देखने को पन है- ठाने, देखे किसे मन ना जाने,
 प्रेम का दरस मिले जब ही, नयना दारे दारे आंसू रे ॥
 मुझे अब तुम पुकारो ना मैं तो जाऊं खेवन घाट रे
 अरुप-रस-सागर-तीरे उदास हवा पतवार चूमें
 पार जाऊं वो छन जो आए नैन दाउ डूबोते चलूं,
 तीर-खोई-सुधा सागर तले-रे ॥

स्वरलिपि

II	प	सं	न	ध	प	-	-	-	-	-	-	ग	ग	म	प	ध	न
	आ	खें	S	उन	की	S	S	S	S	S	S	धा	यें	S	चं	च	ल
	प	प	सं	न	-	ध	प	सं	न	ध	प	-	-	-	-	-	-
	रे	S	S	S	S	S	आ	खें	S	उन	की	S	S	S	S	S	S
	न	न	-	न	न	-	न	सं	-	न	सं	न	ध	ध	सं	न	ध
	ध	न	री	रा	हों	पे	मा	न	री	रा	हों	पे	रू	प	मे	ले	में
																	S

	-	-	-	पम ग -	ग ग ग	प ध म	पध प सं	सं	न - ध	II
	S	S	S	SS S ये	भी S इ	च ली S	रे S S	S S S	S S S	
II {	म ध ध	ध ध न	न सं -	न सं -	सं -	सं -	सं -	- - -	- - -	
	दे S ख	S ने S	प न है	ठा S S	ने S S	S S S	S S S	S S S	S S S	
	सं मं गं	रं सं -	ग ग म	प - धन	पध - -	- (पम)}	I-I			
	दे खें S	कि से S	म न ना	जा S SS	ने S S	S SS S	S			
	ग ग म	ग ग म	प ध -	न सं -	न - न	न सं -				
	प्रे म का	द र स	मि ले S	ज ब ही	नै S ना	दा रे S				
	न सं नरं	सं न ध	पध प सं	सं	ने - ध	II				
	दा रे SS	आं सू S	रे S S	S S S	S S S					
II {	स स -	र र ग	म म धप	मग म -	म म प	प प -				
	मु झे S	अब तु म	पु का SS	रो S ना S	मैं तो S	जा ऊं S				
	प प ध	प - धन	पध - -	पम ग -	ग म ध	प म ग				
	खे व न	घा S टS	रे S S	SS S S	अ रु प	र स S				
	स र ग	ग म - }	I { न न -	न न -	न सं -	न सं -				
	सा ग र	ती रे S	उ दा स	ह वा S	पत वा र	चू में S				
	न न न	न सां -	न रेंसं नसं	न ध -	सं मं गं	इ सं -				
	पा र जा	ऊं वो S	छ न जो	आ ये S	नै S न	दो ऊ S				
	स स स	र र ग	म प ध	प मग -	म म न	न ध न				
	इ वो ते	च लूं S	ती र खो	ई सु धा	सा ग र	त ले S				
	पध प सं	न - ध	II II							
	हो S S S	S S S								

बांग्ला

दूरदेशी सेइ राखाल छेले

आमार बाटे बटेर छायाय सारा बेला गेल खेले ॥

गाइल की गान सेइ ता जाने, सुर बाजे तार आमार प्राणे

बलो देखि तोमरा कि तार कथार किछु आभास पेले ॥

आमि तारे शुधाइ यबे 'कि तोमारे दिब आनि'

से शुधु कय, 'आर किछु नय, तोमार गलार मालाखानि

दिइ यदि तो की दाम देबे याय बेला सेइ भाबना भेबे

फिरे एसे देखि धुलाय बाँशिदि तार गेछे फेले ॥

हिन्दी

दूर देश का वो छैला- गोपाला

बाट मेरे पीपल-छाँहें, सारी बेला रचे लीला-गोपाला !

गाए गीत क्या, सो वही जाने ।

सुर वो बजे, प्राण में मेरे ।

बोलो वो क्या कहना चाहे समझ यदि जरा भी पाए ॥

जानना चाहूँ, जब कभी मैं

“क्या तमहें मैं, ला दूँ-बोलो”

कहे बस यही, ना देना कुछ भी-

तेरे ही गले की माला देना ।

यदि मैं दे ही-दूँ, दाम क्या वो देगा?

सारी बेला सोच सोच के बीते

लौटे तो दिखा बंसी अपनी

धूलि पर ही छोड़ गया गोपाला ॥

स्वरलिपि

II	सं - सं दू र दे	ध प - श का वो	म र - छै ला गो	र स - पा ला S
	न स - बा S ट	र म र मो रे S	म प - पी प ल	पन प - छाँS हैं S
	न स न सा री S	सं न - बेS ला S	ध प - र चे S	मग र - लीS ला गो
	न स र पा S S	म प ध S S S	न - - ला S S	र - सं II S S S
II {	न - न गा ये S	न - सं गी S त	सं - - क्या S S	- स प S सौ S
	प न न व ही S	न - सं जा S S	सं - - बे S S	- - - S S S
	सं रं सं सुर S वो	सं रं सं बजे S S	न न न प्रा णS में	प प (न) } I - I मे रे S S
	म र - बो लो S	म प - वो क्या S	म - प क ह ना	न सं - चा हे S
	सं न - नरं म झ	नध प - यS दि S	म मग म ज राS भी	र स स पा ये गो

	न स र	म प ध	न - -	र - सं	II
	पा S S	S S S	ला S S	S S S	
II {	म प -	प प म	नध संन -	ध प म	
	जा न ना	चा हं S	जS बS क	भी में S	
	प न न	ध न -	धसं न -	ध प (ध) } I - I	
	क्या S तु	म्हे में S	लाS दूं S	बो लो S S	
I {	स न स	र स -	स न स	रे स -	
	क हे बस	य ही S	न दे ना	कुछ भी S	
	न स -	र र स	रेप मप -	र स (र) } I - I	
	ते रे ग	ले की S	भा ला S	दे ना S S	
I {	न - -	न न सं	नसं - -	- सं प	
	य दि मै	दे S ही	दूंS S S	S S S	
	पज न -	न - सं	स - -	- - -	
	दा म क्या	वो दे S	गा S S	S S S	
	सं रं सं	संरं सं प	न प न	धन प (न) } I - I	
	सा री बे	लाS सो च	सो च के	बीS ते S S	
	म र -	म- प -	म प -	न- सं -	
	लौ टे तो	दि खा S	बं सी S	अप नी S	

सं	सं	-	न	प	-	प	म	म	म	र	स	-
धू	ली	S	पर	ही	S	छो	इ	ग	या	S	गो	
न	स	र	म	प	ध	न	-	-	र	-	सं	II II
पा	S	S	S	S	S	ला	S	S	S	S	S	

बांग्ला

हे नूतन,

देखा दिख आर-बार जन्मेर प्रथम शुभक्षण
तोमार प्रकाश होक कुहेलिका करि उद्घाटन
सूर्येर मतन ॥

रिक्ततार वक्ष भेदि आपनारे करो उन्मोचन ।
व्यक्त होक जीवनेर जय,
व्यक्त होक तोमा-माझे असीमेर चिरविस्मय ।
उदय दिगंते शंख बाजे, मोर चित्त-माझे
चिरनूतनेरे दिल डाक
पौंचिसे वैशाख ॥

हिन्दी

हे नवीन फिर से दिखा दो,
जन्म का प्रथम शुभ क्षण ॥
तेरा प्रकाश हो, कुहक भेद दो दर्शन
सूरज सा बन ॥
रिक्तता का वक्ष भेदो, अपने को करो उन्मोचन
व्यक्त हो-जीवन का जय
व्यक्त हो तुझही में असीम का चिर विस्मय
उदय-दिगंत में शंख बजे रे
उर में मेरे, चिर नूतन को पुकारा तूने
पच्चीस बैसाख, हे नवीन ॥

स्वरलिपि

II	स - ध - ध हे SS S न	प - - - बी S S न	प प प - न फि र से दि	ध प म ग - खा S दो SS
				॥
	प - न ध ज S न्म का	प ग म ग प्र थ म शु	रे - सा सा - भ S क्ष ण	- - - - S S S S
	{ ध ध न सा ते रा S प्र	सां - रें न का S S श	सां - - - हो S S S	- - - - S S S S
	सं गं गं गं कु ह क भे	रे रें र - S दे दो S	रें - सं - द र श न	न गं गं गं सू S र ज
	रें - सां सां सा S ब न	- - - } II S S S		
II	{ प - - प रि S S क्त	प - - प ता S S का	प - प प व S क्ष भे	प - ध - दो S S S
	प प म म अ प ने को	म म म - प क रो उ S न	म ध प - मो S च न	- - - - } S S S S
	{ ध - - नि व्य S S क्त	सां - - - हो S S S	नि ग र - र जी S वन का	सां - - - ज य S S
	गं - - र व्य S S क्त	गं - - - हो S S S	गं मं मं गं तु ह्री में अ	रें सं नि ध सी म का S
	सां गं र - चि र वि S	सां सां - - } स्म य S S	[मं मं मं मं उ द य दि	म - - - म] रे - सं - गं त में S

गं	-	-	मं	गं	-	सां	-									
मि	-	-	नि	न	-	सां	सां	-	-	ध	ध	ध	-	-	न	
शं	S	S	ख	ब	S	जे	S	S	S	उ	र	S	S	S	में	
न	-	सां	-	-	-	-	-	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	गं	
मे	S	रे	S	S	S	S	S	चि	र	डू	S	त	न	को	पु	
ग	-	-	-	र	-	सां	-	I	सां	ग	रे	-	सां	-	नि	ध
का	S	रा	S	तू	S	ने	S	प	च्ची	S	स	वै	S	शा	S	ख
ध	-	गं	-	रे	सां	-	-	II	II							
हे	SS	S	न	वी	S	S	न									

बांग्ला

बड़ी आशा करे एसेछि गो, काछे डेके लओ,
 फिरायो ना जननी ॥
 दीनहीने केह चाहे ना,
 तुमि तारे राखिबे जानि गो ।
 आर आमि-ये किछु चाहि ने,
 चरणतले बसे थाकिब ।
 आर आमि-ये किछु चाहि ने
 जननी बले शुधु डाकिब ।
 तुमि ना राखिले, गृह आर पाइब कोथा,
 केदे-केदे कोथा बेडाब
 ओइ ये हेरि तमसघनघोरा गहन रजनी ॥

हिन्दी

बड़ी आशा बांधे आए हैं हम
 पास रख लो, फेरो ना-जननी ॥
 दीन-हीनों को कोई न चाहे,
 तुम ही केवल आश्रय उनके हो ।
 आज और हम कुछ न चाहें,
 चरण तले आश्रय दो-
 आज और हम कुछ न चाहें
 जननी पुकार स्वीकारो-
 तुम ना रखो तो घर अब पाएं कहाँ,
 रो-रो कहां फिरा करें
 देखो छाई है तमस घनघटा गहन रजनी ॥

स्वरलिपि

					सा रे	
					ब डी	
II	ग - ग -	ग मग रे -ग	ग	रे		
	आ S शा S	बाँ SS धे SS	प म ग रेग	सा सा रे गरे		
			आ ये है हम	पा स र खS		
			र	॥		
	स - - -	निसा ध स रे	पा - धप म	ग रेग स रे	II	
	लो S S S	फेS S रो SS	ना S SS ज	न नीS ब डी		II
	प - ध नि	सा - - निध	प ध प म	ग - - मग		
	दी S न ही	S S नों कोS	को ई न चा	हे S S SS		
	रे - ग सा	ग	सा नि प ध	ध ग		
	तु म ही दे	रे - - -	आ S श्र य	सा - रे -		
		वल S S S		उ न के S		

सा - - -	- - - -	सा - ग रे	ग - - -
हो S S S	S S S S	आ ज औ र	ह म S S
	रे		नि
प म ग रे	ध - - -	सा नि ध नि	रे - - -
कु छ न चा	हे S S S	च र ण त	ले S S S
	ध		
सा नि ध नि	प - - -	सा - ग रे	ग - - -
आ S श्र य	दो S S S	आ ज औ र	ह म S S
	रे		
ग प म ग रे	ध - - -	ध नि ध प ध	रे - - -
कु च न चा	हैं S S S	ज न नी पु	का S S र
सां नि ध निध	प - - -	ध नि सां -	प प प -
स्वी S का SS	रो S S S	तु म ना S	र खो तो S
		रे	
ध नि प -	प -ग रे रे	ध - - -	- - - -
घ र अ ब	पा SS यें क	हां S S S	S S S S
प म ग रे	सा नि ध नि	निरे - - गरे	सा - - -
रो S रो S	क हाS S फि	Sरा S S Sक	रें S S S
प - - -	सा - - -	रे - - -	ग - - -
दे S S S	खो S S S	छा S ई S	है S S S
ग प म ग रे	सा नि ध -	ध प म ग	रेग सा सा रे
त म स ध	न घ टा S	ग ह न र	जS नी ब डी

II II

बांग्ला

पुरानो सेइ दिनेर कथा भुलबि कि रे हाय ।
 ओ सेइ चोखेर देखा, प्राणेर कथा, से कि भोला याय ।
 आय आर-एकटिबार आय रे सखा, प्राणेर माझे आय ।
 मोरा सुखेर दुखेर कथा कब, प्राण जुड़ाबे ताय ।
 मोरा भोरेर बेला फूल तुलेछि, दुलेछि दोलाय
 बाजिए बाँशि गान गेयेछि बकुलेर तलाय ।
 हाय माझे हल छाड़ाछाई, गेलेम के कोथाय
 आबार देखा यदि हल, सखा, प्राणेर माझे आय ॥

हिन्दी

बीते बिताए दिनों की बातें भूलूँ कैसे हाय
 वो तो देखी दिखाई
 मन की बातें भुलाई न जाएं
 आओ बस एक बार आओ साथी प्राण में समाओ,
 हम सुख-दुख की
 बातें करें हल्का हो ये मन ।
 हम भोर भोर जो फूल चुने थे झूला थे झूले
 बजा बंसी गीत गाए थे बकुल के तले
 अचानक हम बिछड़ गए, गए कोई कहीं
 फिर ये मिलन जो अब हो गया साथी प्राण में समाओ ॥

स्वरलिपि

II	सा	सा	-नि	सा	ग	-	रे	सा	-	रे	ग	-
	बी	ते	SS	बि	ता	ए	दि	नों	की	बा	तें	S
	सा	-	सा	ग	प	-	ध	-	सां	सां	सां	-
	भू	लूँ	S	कै	से	S	हा	S	य	वो	तो	S
	ध	प	-	ग	सा	-	रे	सा	-	रे	ग	-
	दे	खी	S	दि	खा	ई	म	न	की	बा	तें	S

प भु	प ला	प ऽ	ध ई	ध ऽ	निसरे ऽऽन	सा जा	- ए	- ऽ	- ऽ	प आ	- ओ
प बस	ग ए	- ऽ	ग क	सा बा	- र	रे आ	- ओ	सा ऽ	रे सा	ग थी	- ऽ
प प्रा	ग ण	- में	सा स	ग मा	- ऽऽ	ध ओ	- ऽ	- ऽ	सां ह	सां म	- ऽ
ध सु	प ख	- ऽ	ग- दुख	सा की	- ऽ	रे बा	सा तें	- ऽ	रे क	ग रें	- ऽ
प ह	- ल	प का	ध हो	ध ऽ	निसरे ऽऽये	सा म	- न	- ऽ	- ऽ	सा ह	सा म
सा भो	सा र	-नि ऽभो	सा र	ग जो	- ऽ	रे फू	- ल	सा चु	रे ने	ग थे	- ऽ
सा झू	सा ला	सा ऽ	ग थे	रे झू	म- ऽऽ	ग ले	- ऽ	- ऽ	- ऽ	- ऽ	- ऽ
सां ब	सां जा	सां ऽ	ध बं	प शी	- ऽ	ग गी	-रे ऽत	सा गा	रे ए	ग थे	- ऽ
प ब	प कु	- ल	धनि के	सर ऽऽ	रे त	सा ले	- ऽ	- ऽ	- ऽ	प हा	- य
प अ	ग चा	- ऽ	प- नक	ध- ह	- म ऽ	प बि	ध छु	- इ	प ग	ध ये	- ऽ

सां सां -	सां निसां -रे	सां - -	प प -
ग ए S	को Sई Sक	हीं S S	फि र ये
ध ध सा	नि ३स -	ध प -	ग प -
मि ल न	जो अ ब	हो ग या	सा थी S
ग रे रे	ग रे गरे	सा - -	- - -
प्रा S ण	में S सS	मा S यें	S S S

II II

बांग्ला

दुजने देखा हल मधुयामिनी रे
केन कथा कहिल ना, चलिया गेल धीरे ॥
निकुंजे दखिनाबाय करिछे हाय-हाय,
लतापाता दुले दुले डाकिछे फिरे-फिरे ॥
दुजनेर आंखिबारि गोपने गेल बये
दुजनेर प्राणेर कथा प्राणेते गेल रये ।
आर तो हल ना देखा, जगते दोहे एका
चिरदिन छाड़ाछाड़ि यमुनातीरे ॥

हिन्दी

दोनों के नयन मिले, मधुयामिनी में-रे ॥
बातें कुछ कहे बिना चले वो गए धीरे मधुयामिनी में-रे ॥
निकुंज में दक्षिण बयार, कहे रे, हाय हाय
लता गुल्म झूम झूम, पुकारें बार-बार मधुयामिनी में-रे ॥
दोनों के नयन नीर छुप छुप बहे-डहे
दोनों के मन की बातें मन ही मन में रहे ।
फिर तो मिलन बिना अकेले जग में दोनों
सदा ही बिछड़े रहे यमुना तीरे मधुयामिनी में-रे ॥

स्वरलिपि

सां | स | नि | ध | II | प | पधप | मप | म | ग | - | - | - | - | - | ग | म |
 दो | नो | के | न | यSS | Sन | मि | ले | S | S | S | S | S | म | धु |

| प -न -न | नि रे सारेसां सांनि | नि नि - - - धप |
 | या SS SS | मि नीSS मेS | रे S S | S S SS |

| प ध नि | ध नि - | धनिसा निसांनि - | ध प धप |
 बा ते S | कु छ S | कहेS SSS S | बि ना SS |

म
 | प - म | ग ग -म | प प -सां सां नि - |
 | S S च | ले वो SS | ग ये SS | धी रे S |

नि
 | - - - | नि नि - | नि -ध -नि | रे सारेसां -नि |
 | S S S | म धु S | या SS SS | मि नीSS SS |

ध
 | नि - - | - - धप | -पध पधनसां सां सां नि -ध | II
 | मे S S | S S SS | रेS SSSS दो नों के SS |

[नि निध प] नि नि

-- -II { प प - | नि - नि | सां सां निसारे | सारेसां - - |
 SSS | नि कुं ज में S ग | क्षि ण SSS | बSया S S |

स ध ध
 | - - सां रे सारेसां - | नि -ध प (पध निसां -न) }
 | S र क हे रेS S S | हा S Sय हाS SS Sय |

प

| ध नि नि | प प -म | ग ग म | प प - | ध नि - |
 हा S य | ल ता SS | गु S ल्म झू S म | झू S म |

ध	नि	ध	प	ध	पधप	-	प	म	-ग	प	म	-
S	S	पु	का	रे	SS	S	बा	S	SR	बा	र	S

-	-	-	नि	नि	-	निसांनि	ध	नि	रे	सरेसां	-नि	
S	S	S	म	धु	S	या	SS	S	S	S	मिनीSS	SS

नि	-	-	-	-	-धप	-पध	निसां	सं	सां	नि	ध	II
में	S	S	S	S	SS	रे	SS	दो	नों	के	S	

-	-	-	II	-	-	सां	प	प	-	प	प	-	प	प	-
S	S	S		S	S	दो	नों	के	S	न	य	न	नी	S	र

-	-	प	ध	नि	नि	ध	नि	-	ध	नि	-
S	S	छु	प	छु	प	ब	हे	S	ड	हे	S

म

-	-	ध	प	ग	म	प	प	सां	सां	नि	-
S	S	दो	नों	के	S	म	न	की	बा	तें	S

-	-	नि-	नि	नि	-	निसां	धनि	धनिसां	सां	नि	सां
S	म	नS	ही	S	S	मन	मेंS	SSS	र	हैं	S

{	नि	-ध	-प	नि	-	नि	सा	सा	निसारें	सांनि	सां	-
{	फि	SR	Sतो	S	S	मि	ल	न	SSS	बिना	S	S

-	-	सां	रे	सारेसा	-	नि	निध	प	ध	नि	(सां)	{[-]
S	S	अ	के	ले	SS	S	प्रा	Sण	ये	दो	नों	S

ध

{	-	-	प	प	ग	-म	प	प	सां	सां	-नि	-
{	S	S	स	दा	ही	SS	वि	छु	डे	र	S	हे

$\begin{array}{l} \text{१} \\ \text{२} \end{array} \begin{array}{l} \text{ध} \\ \text{रे} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{गम गमप} \\ \text{SS SSS "तेऽ SS"} \end{array} \Big| \text{II} \quad -$

II $\begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \Big|$

$\begin{array}{l} 0 \\ \text{कौ} \end{array} \begin{array}{l} \text{ध} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{ध} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{पम} \\ \text{न} \end{array} \begin{array}{l} \text{ध} \\ \text{क} \end{array} \begin{array}{l} 3 \\ \text{हाँ} \end{array} \begin{array}{l} \text{नि} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{है} \end{array} \begin{array}{l} \text{सा} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} + \\ \text{में} \end{array} \begin{array}{l} \text{नि} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{ने} \end{array} \begin{array}{l} \text{सा} \\ \text{जाऽ} \end{array} \begin{array}{l} 2 \\ \text{SS} \end{array} \begin{array}{l} \text{रसा} \\ \text{नूऽ} \end{array} \begin{array}{l} \text{निसा} \\ \text{नि-} \end{array} \Big\} \text{I}$

$\begin{array}{l} 0 \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{माधु} \end{array} \begin{array}{l} \text{गग} \\ \text{री} \end{array} \begin{array}{l} \text{ग} \\ \text{ते} \end{array} \begin{array}{l} \text{ग} \\ \text{रीऽ} \end{array} \begin{array}{l} \text{धम} \\ \text{SS} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{पी} \end{array} \begin{array}{l} \text{ध} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{नि} \\ \text{एऽ} \end{array} \begin{array}{l} \text{सा} \\ \text{SS} \end{array} \begin{array}{l} \text{रसा} \\ \text{रीऽ} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{SS} \end{array} \begin{array}{l} \text{निसा} \\ \text{SS} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{ग} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{रेस} \\ \text{मत्त} \end{array} \begin{array}{l} \text{निसा} \\ \text{में} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{निध} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{नि} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array}$

$\begin{array}{l} + \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{धम} \\ \text{हू} \end{array} \begin{array}{l} \text{ध} \\ \text{बी} \end{array} \begin{array}{l} + \\ \text{हूऽ} \end{array} \begin{array}{l} \text{निसा} \\ \text{SS} \end{array} \begin{array}{l} \text{रसा} \\ \text{SS} \end{array} \begin{array}{l} \text{निस} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} 2 \\ \text{नि} \end{array} \begin{array}{l} \text{धम} \\ \text{म} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{नऽ} \end{array} \begin{array}{l} \text{ध} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{नि} \\ \text{हू} \end{array} \Big|$

$\begin{array}{l} 3 \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} \text{निसरे} \\ \text{SSS} \end{array} \begin{array}{l} \text{नि} \\ \text{वे} \end{array} \begin{array}{l} + \\ \text{रे} \end{array} \begin{array}{l} \text{धम} \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} - \\ \text{S} \end{array} \begin{array}{l} 2 \\ \text{SS} \end{array} \begin{array}{l} \text{गम गमप} \\ \text{SSS} \end{array} \begin{array}{l} \text{म-पऽ} \\ \text{तेऽ} \end{array} \begin{array}{l} \text{SS} \end{array} \Big| \text{II II} \dots$

बांग्ला

दे लो, सखी, दे पराइये गले साधेर वकुलफूलहार ।
आधफुट जूंहिगुलि यतने आनिये तूलि
गांधि गांधि साजाये दे मोरे कवरी भरिये फूलभार ।
तुले दे लो चंचल कुंतल, कपोले पड़िछे बारेबार ।
आजि एत शोभा केन, आनंदे विवशा येन
बिम्बाधरे हासि नाहि धरे, लावण्य झरिया पड़े धरातले,
सखी तोरा देखे या, देखे या
तरुण तनु एत रूपराशि वहिते पारे ना बुझि आर ।

हिन्दी

देरी सखी दे- डाल गले मेरे, मनभाइ
बकुलफूलहार
अधखिली जूही-कली जतन से चुन ले,-
गूथ-हार दो शृंगार बेणी बांध, फूल-डाल ॥
सरका दे ये चंचल कुंतल
कपोल, छेड़ोना बार-बार ॥
आज ऐसी शोभा कैसी आनंद विवशा हो जैसे
बिम्बअधर-में हँसी न समाए
लुनाई झरे, झरि, जाए धरातल पे ।
सखी सब-मिल आओ देख जाओ
तन ये तरुण, ये रूप-राशि
दो न सकूं-लगे भार ।

स्वरलिपि

II {

म	र	म	प	सं	-	-	॥	सरं	सनं	ध-	प-	पध	पम	धप	मग	
दे	री	स	खी	दे	S	S	S	डाऽ	लग	लेऽ	मेरे	मनभा	ईब	कुल	फूल	
र	-	-	-	-	-	-	(म)	I-I	र	म	र	स	र	-	सन	स
हा	S	S	S	S	S	S	रऽ	S	अ	ध	खि	ली	जूं	ही	कऽ	ली
र	म	म	म	प	प	प	पध	म	प	न	सं	सरं	नं	ध	प	
ज	त	न	से	चु	न	ले	SS	गूं	थ	हा	र	दोऽ	श्रुऽ	गा	र	
पध	पम	धप	मग	र	-	-	-	रन	न	न	न	नसं	संसं	सं	संसं	
वेऽ	णीबां	Sध	फूल	डा	S	S	लऽ	सर	का	दे	ये	चंऽ	चल	कुं	तल	
सरं	सनं	रंसं	नध	प	-	र	ग	II								
छेड़ी	नाऽ	SS	बार	डा	S	S	र									
[गरं	सं	रंसं]														
II {	स	प	न	सं	नरं	सनं	सं	सं	नरं	सं	न	सं	नसरं	रं	रंगं	
आ	ज	रे	सी	शो	भाऽ	कैऽ	सी	आ	नऽ	द	वि	व	शऽ	हो	जै	सीऽ
म	न	सं	सं	सरं	सनं	ध	नध	प	धप	म	ध	ध	नध	ध	धप	
बिं	बअ	धर	में	हंसी	नस	मा	येऽ	लू	नाऽ	ई	झरे	झ	रीऽ	जा	येऽ	
म	मध	प	मग	रम	म	म	मग	रग	ग	ग	र	सर	र	र	-	
ध	राऽ	तल	पेऽ	सऽ	खी	स	बऽ	मिऽ	ल	आ	ओ	देऽ	खि	जा	ओ	
				प												
रम	र	म	प	सं	सं	-	-	सरं	सनं	ध	प	पध	पम	धप	मग	
तऽ	न	ये	त	रूऽ	ण	S	S	येऽ	रूप	राऽ	शि	दोऽ	न	नस	कूं	लगे
रे	-	-	-	-	-	-	गम	II	II							
भा	S	S	S	S	S	र	SS									

बांग्ला

फूले फूले ढले ढले वहे किबा मृदु वाय,
तटिनी हिल्लोल तुले कल्लोले चलिया याय ।
पिक किबा कुंजे कुंजे कुहु कुहु गाय,
की जानि किसेरइ लागि प्राण करे हाय-हाय ॥

हिन्दी

झूम झूम फूल फूल पे- मचल रही मृदुल- बयार ॥
नदिया हिंडीला झूले
छलछलाती बहे रे धारा
कोयलिया कुंज-कुंजन
कूके-कुहु-कुहु-गाए-
न जानू किस कारण-मेरा
जियरा अकुलाए हाय ॥

		स्वरलिपि					
II {	स	म - म	प धपम प	ध संनसं ध	प धपम प		
	झू	S म	झू SSS म	फू SSS ल	फू SSSल पे		
	ध	न धप म	म रे स	स रे म	म - - }		
	म	च लS S	र ही S	मृ दुल ब	या S र		
	स	- स	सरेम - म	म गमप प	म मपध प		
	न	दि S	याSS S हिं	डो SSS ला	झू SSS ले		
	म	- मग	म गमध प	म ग म	रे - स		
	छ	ल छS	ला S SS ती	ब हे रे	धा S रा		
	प	- नसरं	सं न धपध	न - धनसं	न धन प }		
	को	S यSS	लि S याSS	कुं S ज S	कुं जS न		

सं ध म	सं ध म	सं न नध	प - स
कू S के	कू S हू	कू S हूS	गा S ये
स म म	पम पम प-	ध सं नि सं ध	पधप म प
न S जा	नूS SS किस	का र S S णS	मेSS रा S
ध नधप	म रे स	सा रे सरम	म - म II II
जि यSS	रा अ कु S	ला ये SSS	हा S य

बांग्ला

प्रमोदे ढालिया दिनु मन, तबू प्राण केन काँदि रे ।
 चारि दिके हासिराशि, तबू प्राण केन काँदि रे ॥
 आन सखी, वीणा आन प्राण खुले कर् गान
 नाच, सबे मिले घिरि घिरि घिरिये, तबू प्राण केन काँदि रे ॥
 वीणा तवे रेखे दे, गान आर गास ने केमने याबे वेदना ।
 कानने काटाई राति, तुलि फूल माला गाँधि,
 जोछना केमने फुटेछे तबु प्राण केन काँदि रे ॥

हिन्दी

उमंग में डूबो डाले मन तो भी प्राण अब क्यों रोए रे?
 खुशहाली चहुँओर तो-भी प्राण अब क्यों रोए रे ॥
 ला री सखी वीणा-ला
 भर प्राण गाए- जा नाचो सब-मिल घेर-घिर-घिर-रे ॥
 वीणा अब रख दे, गीत मत गा रे कैसे मिटे ये दुख मेरे
 फिरू रैन वन-वन फूल चुन हार बुन
 चांदनी कैसी है खिली रे
 तो भी प्राण अब क्यों रोए रे ॥

स्वरलिपि

II	सा साग ग ग उ मंड ग में	ग गम रे गप डु बोड डा लेंड	प- - - - मन S S S	- - - - S S S S
	पधन - - ध- तोSS S S S	प - - धप भी S S SS	म - - पम प्रा S S SS	-ग - - रे- SS S S ण
	सा -रे सा नि अ ढड कि ऊं	प - न - रो S एं S	सा - - - रे S S S	- - - - S S S S
{	ग म प सा खु श हा ली	न धनिध प ण च हूंS ओ र	प ध न - - -ध तो S S S S SS	प - - धप भी S S SS
	म - - पम प्रा S S SS	-ग - - -रे SS S S णड	सा -रे सा नि अ ढड कि यं	प - न - रो S यें S
	स - - - रे S S S	- - - - S S S S	II	
II	{प - नि नि ला रे स खी	सा निसरे स - पी णाSS ला S	सा - निसरे सरेस भ र प्राSS SSण	निध प नि} गा ये जा
	सां - सां सां ना चें स ढ	नि निध प नि मि लड घे र	ध संनि ध निध धिर रड धि रड	प - - - रे S S S
	पधनि - - ध तोSS S S S	प - - धप भी S S SS	म - - पम प्रा S S SS	-ग - - -रे S S S ण
	सा -रे सा -नि अ ढड कि ऊंS	प - न - रो S यें S	सा - - - रे S S S	- - - - S S S S

II

II	पम गमग रे वीणा अSS ब	ग पम प - र खऽ दे S	नि ध नि सानि गी त म ऽत	ध न ध प - गा S रे S
{	ग -म प धप कै SS से SS	म पम ग रेग मि टेऽ ये SS	स -ग रेग -म दु ऽख मेऽ SS	ग - - - } रेऽ S S S
	प प नि नि फि रूँ रै न	निसा - सा सा बऽ न ब न	नि सा सा सारेसा - फू लऽ चु न	नि निध प नि हा रे बिऽन S
{	सा सा निसारे सा चां द नीऽऽ कै	नि- ध- प ध सीऽ SS है खि	नि - संनि ली S SS	ध निध प - } S SS रे S
	पधनि - - ध तो S S SS	प - - धप भी S S SS	म - - पम प्रा S S SS	-ग - - रे S S S ण
	सा रे सा नि अ ब कि ऊं	प - नि - रो S ये S	सा - - - रे S S S	- - - - S S S S

II II

बांगला

सहे ना यातना
 दिवस गणिया गणिया बिरले
 निशिदिन बसे आछि शुधु पंध पाने चेये
 सखा हे एले ना ।
 सहे ना यातना
 दिन यााय रात याय सब याय
 आमि बसे हाय !
 देहे वल नाइ, चोखे घूम नाइ
 शुकाये गियाछे आँखिजल ।
 एके एके सब आशा झरे झरे पड़े याय
 सहे ना यातना ॥

हिन्दी

सही न जाए रे यातना
 दिवस गिन गिन अकेली
 बात जो हती रही दिन रैन यों ही बैठी ॥
 साथी हो आये ना ॥
 दिन बीते रात ढले
 सब खोई मैं बैठी हाय
 देहा बल हारे टूटे नैनन नींद
 सूखे रे मेरे नयन-नीर
 धीरे धीरे सारी आशा
 झरी मरी टूटी हाय ॥

स्वरलिपि

II	प मपम ग रे	सरे न स -	ग म प -	प ध न ध
	स हीSS न S	जाS ये रे S	या त ना S	दि व स S
	प ध न ध	पध मप ग -	ग गप म मप	ग नरे स सरे
	गि न गि न	अS केS ली S	बा टS जो हS	ती SS र हीS

	स निस ध नि दि नऽ रै न	स नसल धनधप यों हीऽऽ बैऽऽठी	स रेगम ग - सा थीऽऽ हो ऽ	स रेगम म - आ येऽऽन ऽ	II
II	प- - सं - दिनऽ बी ते	सं - सं - रा त ठ ले	संरंसं - सं - सऽऽ ब खो ई	नि निध प पधप में ऽऽ बै ठीऽऽ	
	म प ग - हा ऽ ऽ य	ग ग गमप- दे हा बऽऽल	मपम - ग गरे हाऽऽ रे टू टेऽ	सनि रे स - नय न नीं द	
	ग म प - सू खे रे ऽ	प ध धन ध मे ऽ रेऽ ऽ	प धप म पम न ऽऽ य नऽ	ग - - - नी ऽ ऽ र	
	प - प सं - धी ऽ रे ऽ	प - प सं - धी ऽ रे ऽ	संगरं - - - सऽऽ ऽ ऽ री	नि सं - नि संनि आ ऽ शा ऽऽ	
	ध न सं रें झ ऽ री ऽ	सं न ध प म ऽ री ऽ	प न ध सं टू ऽ टी ऽ	न - - -प हा ऽ ऽ य	II II

बांग्ला

गहन कुसुमकुंज- माझे, मृदुल मधुर बंशि बाजे,
विसरि त्रास लोकलाजे सजनी, आओ-आओ लो ॥
पिनह चारु नील वास, हृदये प्रणयकुसुमराश,
हरिणनेत्रे विमल हास, कुंजबनमें आओ-लो ॥
ढाले कुसुम सुरभभार, ढाले विहगसुरवसार,
ढाले इन्दु अमृतधार विमल रजतभाति रे ।
मंद मंद भृंग गूंजे, अयुत कुसुम कुंजे कुंजे
फुटल सजनी पुंजे पुंजे वकुल यूथि जाति रे ॥
देख, लो सखि, श्यामराय नयने प्रेम उथल जाय
मधुर वदन अमृतसदन चन्द्रमाय निदिछे !
आओ आओ सजनिबंद, हेरब सखि श्रीगोविंद
श्यामको पदारबिंद भानुसिंह बंदिछे ॥

हिन्दी

गहन कुसुम कुंजमाझ, मृदुल मधुर बन्सी बाजे
विसरि त्रास लोक-लाज सजनी आओ आओ हो ॥
पहन चारु नील वसन, हिय में प्रणय कुसुम राशि
हिरण नेत्र बिमल हास कुंज बन में आओ हो
ढाले कुसुम सुरभी धारा, ढाले विहग सु-रव -सार,
डारे इन्दु अमृत वारि विमल रजत भाति-रे ॥
मंद-मंद भृंग गूंजे अयुत कुसुम कुंजे कंजे
खिलत सजनी, पुंज-पुंजे बकुल -जूही-जाति रे ॥
देख हो सखी साँवरा यही नयन प्रेम उछलि धाए
मधुर वदन अमृत सदन यही लजाए इंदु-रे ॥
आओ आओ स्वजनवंद, हेरो हो सखी श्री गोविन्द
श्याम के पदारविंद भानुसिंह वन्दे रे ॥

स्वरलिपि

		[ध न नध]											
II		ग											
		प	प	प	प	प	धप	म	प	म	ग	र	ग
		ग	ह	न	कु	सु	मऽ	कुं	ऽ	ज	मा	ऽ	इ
		ग						ध					
		प	प	प	प	प	ध	न	-	न	न	-	न
		मृ	दु	ल	म	धु	र	बं	ऽ	सी	बां	ऽ	जे
II		न											
		सं	सं	सं	सं	-	सं	प	-	सं	सं	रं	सं
		वि	स	रि	त्रा	ऽ	स	लो	ऽ	क	ला	ऽ	ज
		न	न	न	न	संन	ध	ध	नध	न	संरंसं	-	न
		स	ज	नी	आ	ऽऽ	ओ	आ	ऽऽ	वो	होऽऽ	ऽ	ऽ
II													
I													
II													

I {	प - प	प प प	प ध ध	ध - ध
	ढ ऽ ले	वि ह ग	सु र व	सा ऽ र
	ध		प	
	सं - सं	सं - सं	सं सं सं	सं नरं सं
	डा ऽ रे	इं ऽ दू	अ मृ त	वा ऽऽ रि
				ध
	न न नध	प प प	ध - न	प - -
	वि म लऽ	र ज त	भा ऽ ति	रे ऽ ऽ
	[ध - न]		ध	
	प - ध	प - ध	न - न	न - न
मं ऽ द	मं ऽ द	भृ ग गूं	ऽ ऽ जेऽ	
सं सं न	सं सं रं	सरं सं सं	न - नसं }	
अ यू त	कु सु म	कुंऽ ज कुं	ऽ ऽ जेऽ	
{ ध रं सं	रं रं गरं	सं रं सं	नसंन - न }	
खि ल त	स ज नीऽ	पुं ऽ जे	पुंऽऽ ऽ जे	
न न न	न संन ध	ध नध न	सरं सं न I [] I	
व कु ल	जूं ऽऽ ही	जा ऽऽ ति	रेऽ ऽ ऽ	
II प - प	प प ध	पम प म	गम र ग	
दे ख हो	स खीं ऽऽ	सां व रा	यही ऽ ऽ	
प प प	प - प	प ध ध	ध - -	
न य न	प्रे ऽ म	उ छ लि	धा ऽ ये	
सं सं सं	सं सं सं	पसं सं सं	सरं सं सं	
म धु र	ब द न	अ मृ त	स द न	

I {	न - नध	प - ध	धप - -	धप - -
	य ही लऽ	जा ऽ ये	इं ऽ दू	रे ऽ ऽ
	[ध - न]			
	प - ध	प - ध	न न न	न - न
	आ ऽ ओ	आ ऽ ओ	स्व ज न	वृं ऽ द
	न सं	सं सं रं	सरं सं सं	न - संन } विं ऽ दऽ
	सं न न	सं खी ऽ	श्रीऽ गो ऽ	
	हे रो हो			
	ध रं सं	रं - गं	रं सं सं	न - सन } वृं ऽ दऽ
	श्या ऽ म	को ऽ प	दा ऽ र	
न - न	न सं ध	ध नध न	सरं सं न	
भा ऽ बु	सिं ऽ ह	वं दिऽ ऽ	रेऽ ऽ ऽ	

बांगला (चित्रांगदा)

संत्रांसेर विहलता निजेरे अपमान,
संकटेर कल्पनाते होयो ना प्रियमाण ।
मुक्त करो भय, आपना-माझे शक्ति धरो, निजेरे करो जय ॥
दुर्बलेर रक्षा करो दुर्जनेरे हानो,
निजेरे दीन निःसहाय येन कभू ना जानो ।
मुक्त करो भय, निजेर परे करिते भर ना रेखो संशय ।
धर्म यबे शंखरबे करिबे आह्वान
नीरव हये नम्र हये पण करियो प्राण ।
मुक्त करो भय, दुरुह काजे निजेरइ दियो कठिन परिचय ॥

हिन्दी

संत्रास से डर जाना निज का अपमान
संकट की कल्पना से थके वर्यो ये प्राण - हो प्राण ।
मुक्त करो भय, अपने बीच शक्ति धरो
अपना हो जय, हो जय ॥
दुर्बलों की रक्षा करो, दुर्जन संहारो
खुद को दीन असहाय, कभी भी न मानो
मुक्त करो भय, अपने पे भरोसे में
न करो संशय हो जय !
शंखध्वनि धर्म की जो करे आह्वान
नीरव हो नम्र बने- पण धरो ये प्राण
मुक्त करो भय,
कठिन काम खुद ही करो
अपने आनवान तू मान ॥

स्वरलिपि

II	सं - सं सं ऽ ऽ	न - न त्रा स से	ध - ध ड र जा	धप प - ऽ ना ऽ
	स र ग नि ज का	ग - र ऽ अ प	स - - मा ऽ ऽ	- - - ऽ ऽ न
	स ग - ग सं ऽ क	ग - ग ट की ऽ	ग - ग क ऽ ल्प	रे - स ना ऽ से
	स र ग ध के ऽ	ग - र व्यो ऽ ये	प - - प्रा ऽ ण	प - - हो ऽ ऽ
	स र ग प्रा ऽ ऽ	प्र प ध ऽ ऽ ऽ	धप - - ऽ ऽ ऽ	- - - ऽ ऽ ण
	ध सं - सं मु क् त	सं न रं क रो ऽ	सं - - भय ऽ ऽ	- - - ऽ ऽ ऽ
	सं गं गं अ प ने	रं - रं बी ऽ च	सं - सं श ऽ क्ति	न - ध ध रो ऽ
	ध सं न अ प नी	न - ध हो ऽ ऽ	प - - जय ऽ ऽ	- - - हो ऽ ऽ
	स र ग ज ऽ ऽ	प्र प ध ऽ ऽ य	ध प - - जय ऽ ऽ	- - - ऽ ऽ ऽ

प - ग दु र व	प - ध लो S की	प - ग र क क्षा	प - ध क S रो
पध - ध दुर S ज	प म प न सं S	प ध - हा रो S	- - - S S S
प न न खु द को	धन - न दी S न	धन - ध अ स S	ध प प हा S य
प नी नी क भी S	संन - न भी S न	ध - - मा नो S	- - - S S S
सं - सं मु क्त	सं न रं क रो S	सं - - भ य S	- - - S S S
सं गं ग अ प ने	रं - रं पे S भ	सं सं सं रो S से	न - सं भे S S
ध सं नि न क रो	ध न - ध S सं S	प प प श य S	प - - ह S S
स र ग हो S S	म प ध S S S	ध प - - ज य S	- - - S S S
प - ग श S ख	प म ध ध्व S नी	प - ग ध ऽर म	प म ध की S जो
प प ग क रे S	प प म आ S ह	ध - - वा S S	- - - S S न

न प ध न नी ऽ र	न - न व हो ऽ	धन - न नऽ ऽ घ्न	न ध- प ब नेऽ ऽ
प न नध प्र ण धऽ	ध न ध रो ऽ ये	प - - प्रा ऽ ऽ	- - - ऽ ऽ ण
पसं - सं मु ऽ क्त	सं न रं क रो ऽ	सं - - भ य ऽ	- - - ऽ ऽ ऽ
सं गं गं क ठि न	रं - रं का ऽ म	सं सं सं खु द ही	ध न - ध क रो ऽ
ध सं नि अ प नी	धन नी ध आ ऽ न	प - - बा ऽ ऽ	प - - न तू ऽ
स रे ग मा ऽ ऽ	म प ध ऽ ऽ न	ध प - - मा ऽ ऽ	- - - ऽ ऽ न

II II

बागला

नव बरसंतेर दानेर डालि
एनेछि तोदेरइ द्वारे,
आय, आय, आय
परिबि गलार हारे ॥
लतार बांधन हाराये माधबी मरिछे केंदे,
बेणिए बांधने राखिबि बेंधे,
अलकदोलाय दोलाबि तारे
आय, आय, आय ॥
बनमाधुरी करिबि चुरि आपन नबीन माधुरिते
सोहिनी रागिणी जागाबे से तोदेर
देहेर वीणार तारे तारे,
आ य, आ य, आय ॥

हिन्दी

नव बरसंती में डालिया भरे दान लाये हैं,
तेरे ही द्वारे-आओ, आओ, आओ रे
पहन लो गले का हार-रे ॥
लता के बंधन में खोई वो माधवी रोए हो रोए
वेणी के बंधन में बांधे रख ले तू
अलक-झूले में झुलाना उसे
आओ आओ आओ रे ॥
वनमाधुरी कर लेगी चोरी-
अपने नव मन-माधुरी
सोहिनी रागिनी जगी तेरे ही
देह वीणा के तारों में-रे
आओ आओ आओ रे ॥

बागला

खरबायु बय बेगे, चारि दिक् छाय मेघे,
ओगो नेये, नाओखानि बाइयो ।
तुमि कसे धरो हाल, आमि तुले बांधि पाल
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो ॥
श्रृंखले बारबार झनझन झंकार
नय ए तो तरणिर क्रंदन शंकार
बंधन दुर्बार सह्य ना हय आर,
टलोमलो करे आज ताइ ओ ।
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो ॥
गणि गणि दिन क्षण चंचल करि मन
बोलो ना याइ कि ना याइ रे ।
संशयपारावार अंतरे हबे पार,
उदबेगे ताकायो ना बाइरे ।
यदि माते महाकाल, उदाम जटाजाल
झड़े हय लुंठित, ठेउ उठे उत्ताल,
होयो नाको कुंठित, ताले तार दियो ताल
जय-जय जय गान गाइयो ।
हाँइ मारो, मारो टान हाँइयो ॥

हिन्दी

हवा वहे जोर शोर मेघा छए चहुं ओर
नाविक हो बदाओ नैया ॥
तुम कस धरो डाँइ, हम बांधे पतवार
जोर और जोर बहे नैया ॥
जंजीर झनकारे झननन झन्-झन्
नहीं नहीं नाव का डर या क्रंदन
बंधन जोरदार सहन से बाहर
डगमग-डग हो खेवैया ॥
जोर और जोर बहे नैया ॥
गिन गिन दिन छन, चंचल होवे मन
कहो नहीं, जाऊं या न जाऊं रे ।

संशय सागर मन ही मन हो ले पार
देखो न तुम भय से बाहर ।
यदि मस्त महाकाल खोले निज जटाजाल
लुंठित जड़ से उर्मि हो उच्छ्वल
कुंठित न होना तालों ताल देना ताल
जय जय जय गीत गाये जा
जोर और जोर वहे नैया ॥

बांग्ला

भांगो ! बांध भेंगे दाओ, बांध भेंगे दाओ, बांध भेंगे दाओ,
बंदी प्राण मन होक उधाओ शुकनो गांगे आसुक
जीवनेर बन्नार उदाम कौतुक
भांगनेर जयगान गाओ ॥
जीर्ण पुरातन याक भेसे याक
याक भेसे याक, याक भेसे याक ।
आमरा शुनेछि ओइ,
मांभी: मांभी: मांभी:
कोन नुतनेरइ डाक ।
भय करिना अजानारे,
रुद्ध ताहारि द्वारे दुर्दाइ बेगे धाओ ॥

हिन्दी

तोड़ो ! तोड़ो बंधन, तोड़ो बंधन, तोड़ो बंधन
बंदी प्राण-मन हो आजाद
तोड़ो ! सूखे नद में जागें, जीवन ज्वार की मस्त
लीला सूखे नद में जागे ।
टूटन का जय गाओ, टूटन का जय गाओ, टूटन का जय गाओ
जीर्ण पुरातन बह जाने दो, बह जाने दो, बह जाने दो
हमने सुनी है रे -माँ जय माँ, माँ जय नहीं भय ।
कौन नवीन पुकारे
अंजाने का डर नहीं रे,
बंध उसी के दर पे वेग से आगे बढ़ो हो, तोड़ो!

बांग्ला

चरण धरिते दियो गो आमारे, नियो ना, नियो ना सराये
जीवन मरण सुख दुख दिये बक्षे धरिब जड़ाये ॥
स्खलित शिथिल कामनार भार बहिया बहिया फिरि कत आर
निज हाते तुमि गेंधे नियो हार,
फेलो ना आमारे छड़ाए ॥
चिरपिपासित वासना वेदना बांचाओ ताहारे मारिया ।
शेष जये येन हय से विजयी तोमारि काछेते हारिया ।
बिकाये बिकाये दीन आपनारे पारिना फिरिते दुयारे दुयारे
तोमारि करिया नियो गो आमारे
वरणेर माला पराये ॥

हिन्दी

शरण चरण की मंगू में तुझसे
सरका यूँ- उन्हें ना ले -तू
जीवन मरण में सुख हो या दुख हो
दिल से उन्हें मैं लगाऊँ ॥
हारे थके भार वासनाओं के ढोते फिरें हम कब तक उन्हें
निज हाथों से ही गूँथलो ये हार
बिखरो न तोड़ के हमे यों ॥
पल-पल के प्यासे ये वासना और ग्राम
मार कर दे इन्हें नव जीवन
जीत आखरी वो जीत हो उसी की
हार कर तुझी से जयी हो
बिकता फिरूँ दीन-हीन बन के
ठोकरें सहुँ कितनी दरों पे
ऐ रब तू अपना बना ले अब मुझको
जयमाल से वर ले मुझे तू ।

बांग्ला

भालोबेसे, सखी, निभूते यतने
आमार नामटि लिखो तोमार मनेर मंदिरे।
आमार पराणे ये गान बाजिछे
ताहार तालटि शिखो तोमार चरणमंजिरे ॥
धरिया राखियो सोहाणे आदरे
आमार मुखर पाखि तोमार प्रासाद प्रांगणे ॥
मने करे सखि, बांधिया राखियो
आमार हातेर राखी तोमार कनक कंगणे ॥
आमार लतार एकटि मुकुल
भुलिया तुलिया रेखो तोमार अलकबंधने ।
आमार स्मरण शुभ सिंदुरे एकटि बिंदु एंको तोमार ललाट चंदने ॥
आमार मनेर मोहेर माधुरी
माखिया राखिया द्वियो तोमार अंग सौरभे
आमार आकुल जीवनमरण
टुटिया लुटिया नियो तोमार अतुल गौरवे ॥

हिन्दी

प्यार-प्यार में जतन से, तनहा में
नाम मेरा लिखलो सखी मन-मंदिर में
मेरे मन में गूंजे जो गीत सखी
ताल उसी का सीखो तेरे पग घूंघरू में ॥
सम्हाले रखना प्यार-प्यार से बातूनी पंछी मेरा,
तेरे महल-अंगना में । याद रहे सखी, बांधे रखना मेरे
हाथ की राखी तेरे कनक कंगना में ॥
मेरे लता की एक कली तुम भूल से लगा लो, अपने कुंतल-बंधन में ।
मेरी यादें भरी मंगल रोली की आंक लो बिंदिया तेरे भाल-चंदन में ।
मोहमयी मन माधुरी मेरी
चढ़ा ले, तेरे तन के सुरभि में
व्याकुल हो मेरा जीना मरना
टूट लुट जाये तेरे अतुल गौरव में ॥

बांग्ला

मने रबे किना रबे आमारे से आमारे मने नाइ ।

क्षणे-क्षणे आसि तब दुआरे, अकारणे गान गाइ ॥

चले जाय दिन, यतोक्षण आछि

पथे येते यदि आसि काछाकाछि

तोमार मुखेर चकित सुखेर हासि देखिते ये चाइ ताइ अकारणे गान गाइ

फागुनेर फूल जाय झरिया फागुनेर अवसाने

क्षणिकेर मुठि देय भरिया, आर किछु नाहि जाने ।

फुराइबे दिन, आलो हबे क्षीण,

गान सारा हबे, धेमें जाबे बीन,

यतक्षण थाकि-भरे दिबे नाकि

ए खेलारइ भेलाटाइ

ताइ अकारणे गान गाइ ॥

हिन्दी

मन में रहूं या न रहूं मैं तेरे यादें बन जानूं ना, ना जानूं ॥

घड़ी घड़ी दर पे तेर आऊँ, अकारण गीत गाऊँ ॥

बोते शुभ दिन जब तक पास हूँ हमराही बन 'गर पास कभी आऊँ

मुख पे तेरे मैं चाहूँ-देखूँ. चंद सुखहास

सो ही अकारण गीत गाऊँ ॥

फागुन के फूल लगे झरने, फागुन के विदाई से

छन-काल मुठी भर दे चले मानो कुछ भी न जानें ।

बीतते ही दिन आलोक विहीन, गीत होंगे समापन हो न बर्जेगी बीन

जब तक पास हूँ भर क्यों न देते ये लीलारी मेरी नाव

सो ही अकारण गीत गाऊँ ॥

बांग्ला

तुमि रबे नीरबे हृदये मम
निविड़ निभृत पूर्णमनिशीथिनी-सम ॥
मम जीवन यौवन मम अखिल भुवन
तुमि भरिबे गौरबे निशीथिनी सम ॥
जागिबे एकाकी तब करुण आँखि,
तब अंचल छाया मोरे रहिबे ढाकि ।
मम दुःख वेदन मम सफल स्वपन ।
तुमि भरिबे सौरभे निशीथिनी सम ॥

बांग्ला

विश्व साथे योगे येथाय बिहारो ।
सेइखाने योग तोमार साथे आमारो ॥
नयको बने नय बिजने नयको आमार आपन मने
सबार येथाय आपन तुमि हे प्रिय
सेथाय आपन आमारो ॥
सबार पाने येथाय बाहु पसारो
सेइखानेतेइ प्रेम जागिबे आमारो ।
गोपने प्रेम रयना घरे आलोर मतो छडिये पड़े
सबार तुमि आनंद धन हे प्रिय, आनंद सेइ आमारो ॥

हिन्दी

तुम रहो तन्हाई में इस दिल में मेरे
ज्यों पूनम की रात घनी खड़ी खामोश है
मेरी जिदगी और शबाब मेरे सारे-सारे जहां
तुम भर दो शोहरत से उस रात की जैसे ॥
तन्हा मे जागेंगी तेरी दर्द-निगाहें,
तेरी आंचल-शाया मुझे ढकेगी शाये से ।
मेरे रंज और ये गम
मेरे सपने कामयाब तुम महका देना
उस रात की जैसे ॥

हिन्दी

विश्वबंधु बन तू जहाँ विचरे ।
वहीं बंधे हम, हम साथी बन तेरे ॥
ना तू वन में न विजन में ना तू केवल मेरे मन में
सबके मन में आत्मा बने तू है प्रेमी ।
वहीं बसूँ तेरे संग मैं ॥
सबके खातिर बाहें ज्यों तू पसारे,
प्रेम हिया में जाग उठे हो, हमारे ।
छुप कर प्रेम बसे ना घर में आलोकधारा सी फैले रे
सबके मन का उमंगधन हो प्रेमी
वही आनंद धन हो मेरे ॥

जलज भादुडी

जन्म : इलाहाबाद में । शिक्षा : रनातकोत्तर- इलाहाबाद विश्वविद्यालय से ।

संगीत शिक्षा : प्रभाकर बीटी मियुजिक: प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद ।

विवाह उपरांत बंगाल की मिट्टी से जुड़ी । भाषाई सौहार्द-संपर्क के लिये अनुवाद तथा मौलिक द्विभाषी लेखन शुरू किया । १९७९ में अपनी, पंजीकृत संस्था 'पारिजात इरटीच्यूट', के अंतर्गत अनेक सांस्कृतिक तथा साहित्यिक कार्यक्रम, दूरदर्शन, रेडियो एवं मंचों पर किया ।

मानव-संसाधन-विकास मंत्रालय से फेलोशिप की प्राप्ति के दौरान शोधकार्य हिन्दी अनुवाद में नजरूल तथा रवीन्द्र के गीतों पर किया ।

हिन्दी में सृजन (अनुवाद):-

१. रवीन्द्र गीतवितान केंद्र द्वारा पुरस्कृत प्रथम संस्करण १९९०
२. मानवतावादी नजरूल के गीत (१९९२)
३. नजरूल : विविध- प्रसंग गीत-कविता-लेख (अनुवाद, मौलिक निबंध एवं संपादन) २००२ में प्रकाशित ।
४. सुनील गंगोपाध्याय की प्रतिनिधि कहानियां (२००१ में) ।
५. टूटा पियानो (मौलिक कथा संग्रह - २००१ में) ।

बांग्ला में सृजन :

१. 'संगीत संगीत' निबंध ग्रंथ संपादन एवं लेखन प्रकाशित १९८६
 २. अनेक बांग्ला कहानी, कविता एवं लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित
 ३. बांग्ला लिपि में हिन्दी अनुवाद के तीन ग्रंथ:-
 १. नजरूल श्रद्धांजली, २. बोई मेला संख्या (रवीन्द्र संगीत) १९९७
 ३. हिन्दी में नजरूल गीति शिखुन ओ शेखान (स्वरलिपि सहित २००१)
 ४. आमार एकाङ्गोटी कविता । (प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 'मेरी इक्कावन कविताएं' का अनुवाद)
- संगीत सृजन :
- रवीन्द्र तथा नजरूल के गीतों के हिन्दी में आठ कैसेट, लुलसी विनय पत्रिका , कल्पतरु रामकृष्ण आदि का हिन्दी में कैसेट ।
- संप्रति : अनुवाद व मौलिक लेखन, संगीत शोधकार्य एवं मौलिक गीत-संगीत निर्माण में व्यस्त ।

